

# हरिप्रसाद पाण्डेयको जीवनी, व्यक्तित्व र कृतित्व

त्रिभुवन विश्वविद्यालय मानविकी तथा सामाजिकशास्त्र  
सङ्कायअन्तर्गत नेपाली केन्द्रीय विभागको  
एम्. ए. दोस्रो वर्षको दसौँ  
पत्रको प्रयोजनका लागि  
प्रस्तुत

## शोधपत्र

शोधनिर्देशक  
उप-प्रा. सुधा त्रिपाठी

शोधार्थी  
गायत्री दड्गाल (ढकाल)  
नेपाली केन्द्रीय विभाग  
त्रिभुवन विश्वविद्यालय  
कीर्तिपुर  
२०६६

# हरिप्रसाद पाण्डेयको जीवनी, व्यक्तित्व र कृतित्व

zf]wlgb]{zsM pkk|fWofks

त्रिभुवन विश्वविद्यालय मानविकी तथा सामाजिकशास्त्र  
सङ्कायअन्तर्गत नेपाली केन्द्रीय विभागको  
एम्. ए. दोस्रो वर्षको दसौँ<sup>०</sup>  
पत्रको प्रयोजनका लागि  
प्रस्तुत

## शोधपत्र

शोधार्थी

गायत्री दड्गाल (ठकाल)  
नेपाली केन्द्रीय विभाग  
त्रिभुवन विश्वविद्यालय  
कीर्तिपुर  
२०६६

## स्वीकृति पत्र

त्रिभुवन विश्वविद्यालय मानविकी तथा सामाजिक शास्त्र सङ्कायअन्तर्गत विश्वविद्यालय कीर्तिपुरका छात्रा श्री गायत्री दझाल (ढकाल)ले त्रि.वि. नेपाली केन्द्रीय विभाग स्नातकोत्तर तह एम.ए. नेपाली विषयको दसौं पत्रको प्रयोजनका लागि प्रस्तुत गर्नुभएको हरिप्रसाद पाण्डेयको जीवनी, व्यक्तित्व र कृतित्व शीर्षकको शोधपत्र सोही प्रयोजनका निमित्त स्वीकृत गरिएको छ ।

क्र.सं.

हस्ताक्षर

- |  |       |
|--|-------|
| १. प्रा. राजेन्द्र सुवेदी (विभागीय प्रमुख) | ..... |
| २. उप-प्रा. सुधा त्रिपाठी (शोधनिर्देशक)    | ..... |
| ३. प्रा. डा. नन्दीश अधिकारी (बाह्यपरीक्षक) | ..... |

मिति : २०६६।०५।

## शोधनिर्देशकको मन्त्र

त्रिभुवन विश्वविद्यालय मानविकी तथा सामाजिकशास्त्र सङ्कायअन्तर्गत एम्.ए. दोस्रो वर्ष दसौं पत्रको प्रयोजनका लागि विद्यार्थी श्री गायत्री दड्गाल (ढकाल) ले हरिप्रसाद पाण्डेयको जीवनी, व्यक्तित्व र कृतित्व शीर्षकको शोधपत्र मेरा निर्देशनमा तयार पार्नु भएको हो । प्रस्तुत शोधपत्रप्रति म पूर्णतः सन्तुष्ट छु । यसको आवश्यक मूल्याङ्कनका लागि नेपाली केन्द्रीय विभाग त्रि.वि.वि. समक्ष सिफारिस गर्दछु ।

मिति : २०६६।०७। गते

उप-प्रा. सुधा त्रिपाठी  
नेपाली केन्द्रीय विभाग  
त्रिभुवन विश्वविद्यालय  
कीर्तिपुर, काठमाडौं ।

## कृतज्ञताज्ञापन

प्रस्तुत शोधपत्र त्रिभुवन विश्वविद्यालय नेपाली केन्द्रीय विभागअन्तर्गत स्नातकोत्तर तह द्वितीय वर्षको दसौँ पत्रको प्रयोजनको लागि तयार पारिएको हो । यो शोधपत्रका विषय स्वीकृत गरी शोधकार्य गर्न अवसर दिने आदरणीय गुरुआमा उप.-प्रा. सुधा त्रिपाठीज्यूलाई म हार्दिक आभार प्रकट गर्दछु । आफ्नो कार्य व्यस्तताका बाबजुद पनि अमूल्य समय प्रदान गरी मलाई उचित सल्लाह सुझाव र मार्गनिर्देशनसमेत गर्नु भएर यस शोधपत्रको लेखनमा अभिप्रेरित गर्नु हुने शोध निर्देशक श्रद्धेय गुरुआमाप्रति म हार्दिक श्रद्धा एवम् कृतज्ञता प्रकट गर्दछु । शोधकार्यकै सन्दर्भमा यथासम्भव आवश्यक सामग्री र महत्त्वपूर्ण जानकारी उपलब्ध गराउने शोधनायक हरिप्रसाद पाण्डेय, उहाँको परिवार तथा अन्य सहयोगीहरूप्रति म पूर्णतः आभारी छु । शोध शीर्षक छनौटमा सहयोग गर्नु हुने गुरु केशवप्रसाद सुवेदी र लेखनका क्रममा सहयोग गर्नुहुने अन्य गुरुजनप्रति म कृतज्ञता व्यक्त गर्दछु ।

शोध प्रस्तावलाई विभागीय स्वीकृति प्रदान गरी शोधकार्य गर्ने अवसर प्रदान गर्नुहुने विभागीय प्रमुख प्रा. राजेन्द्र सुवेदीज्यू लगायत मेरा सम्पूर्ण गुरुहरूप्रति म हार्दिक श्रद्धा व्यक्त गर्दछु ।

त्यस्तै नेपाली साहित्य तथा भाषाका विविध शीर्षकहरूमा शोधकार्य गर्न अवसर प्रदान गरेकोमा नेपाली केन्द्रीय विभागलाई र शोधपत्र तयारी गर्दा आवश्यक पुस्तकहरू उपलब्ध गराइदिने त्रि.वि.वि केन्द्रीय पुस्तकालयलाई हार्दिक धन्यवाद दिन चाहन्छु ।

मेरो अध्ययनलाई यहाँसम्म पुऱ्याउन सदैव प्रेम, स्नेह र आशीर्वाद दिएर पूर्ण सहयोग गर्नुहुने मेरा आदरणीय श्रीमान् केशवप्रसाद दड्गालप्रति हृदयदेखि नै जीवनभर

आभारी रहने छु । सावधानीपूर्वक शोधपत्रको कम्प्यूटर गरी दिने एरा प्रिन्टिङ सपोर्ट सेन्टरप्रति पनि हार्दिक धन्यवाद व्यक्त गर्दछु ।

अन्त्यमा प्रस्तुत शोधपत्र समूचित मूल्याङ्कनका लागि त्रि.वि.वि. नेपाली केन्द्रीय विभाग समक्ष प्रस्तुत गर्दछु ।

गायत्री दड्गाल (ढकाल)  
नेपाली केन्द्रीय विभाग  
त्रिभुवन विश्वविद्यालय  
कीर्तिपुर, काठमाडौँ ।

## सङ्केपीकृत शब्दसूची

|                |                                    |
|----------------|------------------------------------|
| सङ्क्षिप्त रूप | पूर्ण रूप                          |
| अप्र           | अप्रकाशित                          |
| आई. ए.         | इन्टरमिडिएट अव् आर्ट्स्            |
| इ.स.           | इस्वी सम्बत्                       |
| एम्. ए.        | मार्ट्स् अव् आर्ट्स् (स्नातकोत्तर) |
| एस्. एल्. सी.  | स्कुल लिमिड सर्टिफिकेट             |
| क्र.सं.        | क्रमसङ्ख्या                        |
| प्र.सं.        | प्रथम संस्करण                      |
| दो.सं.         | दोस्रो संस्करण                     |
| ते.सं.         | तेस्रो संस्करण                     |
| चौ.सं.         | चौथो संस्करण                       |
| म.सं. वि       | महेन्द्र संस्कृत विश्वविद्यालय     |
| पृ             | पृष्ठ                              |
| प्रा.          | प्राध्यापक                         |
| इ.             | इन्जिनियर                          |
| बी.ए.          | व्याचलर अव् आर्ट्स्                |
| पं             | पण्डित                             |
| वि.सं.         | विक्रम सम्बत्                      |
| सम्पा.         | सम्पादक                            |
| प्र.           | प्रकाशन                            |

# विषयसूची

## परिच्छेद एक

### शोधपरिचय

| क्र.सं. | <u>विषय</u>           | पेज नं. |
|---------|-----------------------|---------|
| १.१     | शोधशीर्षक             | १       |
| १.२     | शोधपत्रको प्रयोजन     | १       |
| १.३     | विषयपरिचय             | १       |
| १.४     | समस्याकथन             | २       |
| १.५     | शोधपत्रका उद्देश्यहरू | २       |
| १.६     | पूर्वकार्यको समीक्षा  | ३       |
| १.७     | शोधपत्रको औचित्य      | ५       |
| १.८     | शोधपत्रको सीमाङ्कन    | ५       |
| १.९     | सामग्री सङ्कलन        | ५       |
| १.१०    | शोधविधि               | ६       |
| १.११    | शोधपत्रको रूपरेखा     | ६       |

## परिच्छेद दुई

### हरिप्रसाद पाण्डेयको जीवनी

|     |                         |   |
|-----|-------------------------|---|
| २.१ | पूर्व पारिवारिक परम्परा | ७ |
| २.२ | जन्म तथा जन्मस्थान      | ८ |

|      |                                      |    |
|------|--------------------------------------|----|
| २.३  | बाल्यकाल र उपनयन                     | ८  |
| २.४  | शिक्षादीक्षा                         | ९  |
| २.५  | विवाह र सन्तान                       | १० |
| २.६  | दाम्पत्यजीवन र पारिवारिक स्थिति      | १० |
| २.७  | आर्थिक अवस्था                        | १० |
| २.८  | व्यक्तिगत रुचि तथा स्वभाव            | ११ |
| २.९  | पेसा                                 | ११ |
| २.१० | साहित्य लेखनका लागि प्रेरणा र प्रभाव | १२ |
| २.११ | वियोगको अवस्था                       | १३ |
| २.१२ | पुरस्कार                             | १३ |
| २.१३ | साहित्यिक प्राज्ञिक सहभागिता         | १४ |
| २.१४ | तीर्थयात्रा                          | १४ |
| २.१५ | प्रकाशित पुस्तककार कृतिहरूको सूची    | १५ |
| २.१६ | निष्कर्ष                             | १५ |

## परिच्छेद तीन

हरिप्रसाद पाण्डेयको व्यक्तित्व

|     |                           |    |
|-----|---------------------------|----|
| ३.१ | व्यक्तित्व                | १७ |
| ३.२ | व्यक्तित्वका विभिन्न पाटा | १७ |
| ३.३ | वाहय व्यक्तित्व           | १८ |

|       |   |    |
|-------|---|----|
| ३.३.१ | शारीरिक व्यक्तित्व  | १८ |
| ३.३.२ | स्वभाव  | १८ |
| ३.३.३ | खानपिन  | १९ |
| ३.३.४ | व्यवहार   | १९ |
| ३.४   | आन्तरिक व्यक्तित्व  | १९ |
| ३.५   | साहित्यकार व्यक्तित्व   | २० |
| ३.५.१ | उपन्यासकार व्यक्तित्व   | २० |
| ३.५.२ | कथाकार व्यक्तित्व   | २१ |
| ३.५.३ | कवि व्यक्तित्व  | २२ |
| ३.५.४ | सम्पादक व्यक्तित्व  | २३ |
| ३.५.५ | अन्वेषक व्यक्तित्व  | २३ |
| ३.६   | साहित्येतर व्यक्तित्व   | २३ |
| ३.६.१ | धार्मिक एवम् सांस्कृतिक व्यक्तित्व                                    | २४ |
| ३.६.२ | सामाजिक व्यक्तित्व  | २५ |
| ३.६.३ | प्रशासनिक व्यक्तित्व  | २६ |
| ३.७   | हरिप्रसाद पाण्डेयका जीवनी, व्यक्तित्व र कृतित्वका बीच<br>अन्तरसम्बन्ध | २६ |
| ३.८   | निष्कर्ष  | २७ |



## परिच्छेद चार

साहित्यकार हरिप्रसाद पाण्डेयका साहित्यिक कृतिहरूको अध्ययन

|       |   |    |
|-------|---|----|
| ४.१   | हरिप्रसाद पाण्डेयको साहित्यिक यात्रा                            | २९ |
| ४.२   | हरिप्रसाद पाण्डेयको विधागत साहित्यिक यात्रा                     | ३० |
| ४.३   | उपन्यासको सैद्धान्तिक स्वरूप                                    | ३२ |
| ४.४.१ | कुमारीको सपना उपन्यासको विश्लेषण                                | ३८ |
| ४.४.२ | आशाका रेखाहरू उपन्यासको विश्लेषण                                | ४३ |
| ४.४.३ | नदेखिएका पाइलाहरू उपन्यासको विश्लेषण                            | ५० |
| ४.४.४ | मुटुभित्रका ढुक्ढुकीहरू उपन्यासको विश्लेषण                      | ५९ |
| ४.५   | हरिप्रसाद पाण्डेयको अन्जान कथासङ्ग्रहभित्रका<br>कथाहरूको अध्ययन | ६७ |

### परिचय

|       |             |    |
|-------|-------------|----|
| ४.५.१ | करुणा       | ६७ |
| ४.५.२ | विजोग       | ६८ |
| ४.५.३ | फोनको घण्टी | ६९ |
| ४.५.४ | स्वार्थ     | ७१ |
| ४.५.५ | नाता        | ७२ |
| ४.५.६ | सन्ते       | ७३ |
| ४.५.७ | किनारा      | ७५ |

|        |                               |    |
|--------|-------------------------------|----|
| ४.५.८  | परिणाम                        | ७६ |
| ४.५.९  | सङ्गत                         | ७७ |
| ४.५.१० | मेरो भूल                      | ७८ |
| ४.५.११ | अन्जान                        | ७९ |
| ४.५.१२ | कसको दोष ?                    | ८१ |
| ४.५.१३ | वियोग                         | ८२ |
| ४.५.१४ | तृष्णा                        | ८३ |
| ४.५.१५ | सुनको लकेट                    | ८४ |
| ४.५.१६ | बिडम्बना                      | ८५ |
| ४.५.१७ | तीज                           | ८६ |
| ४.५.१८ | ईर्ष्या                       | ८७ |
| ४.५.१९ | अस्तित्व                      | ८८ |
| ४.५.२० | चियाको गिलास                  | ८९ |
| ४.५.२१ | परिणति                        | ९० |
| ४.५.२२ | घात प्रतिघात                  | ९१ |
| ४.५.२३ | निष्कर्ष                      | ९२ |
| ४.६    | कविताको सैद्धान्तिक स्वरूप    | ९३ |
| ४.७    | कविका रूपमा हरिप्रसाद पाण्डेय | ९६ |
| ४.७.१  | सम्झना                        | ९७ |

|        |                 |     |
|--------|-----------------|-----|
| ४.७.२  | भावना           | ९७  |
| ४.७.३  | प्रभात          | ९८  |
| ४.७.४  | दुःख            | ९९  |
| ४.७.५  | सन्देश          | १०० |
| ४.७.६  | वेदना           | १०१ |
| ४.७.७  | पीड़ा           | १०२ |
| ४.७.८  | बाला            | १०३ |
| ४.७.९  | नेपाल           | १०४ |
| ४.७.१० | म               | १०५ |
| ४.७.११ | वन              | १०५ |
| ४.७.१२ | मोह             | १०६ |
| ४.७.१३ | विचार           | १०७ |
| ४.७.१४ | बद्रीनाथ यात्रा | १०८ |
| ४.७.१५ | यात्रा          | १०९ |
| ४.७.१६ | निष्कर्ष        | १११ |

## परिच्छेद पाँच

उपसंहार ११३-११६

सन्दर्भग्रन्थसूची

# परिच्छेद एक

## शोध परिचय

### १.१ शोधशीर्षक

प्रस्तुत शोधपत्रको शीर्षक हरिप्रसाद पाण्डेयको जीवनी, व्यक्तित्व र कृतित्वको अध्ययन रहेको छ ।

### १.२ शोधपत्रको प्रयोजन

प्रस्तुत शोधपत्रको प्रयोजन त्रिभुभन विश्वविद्यालय, मानविकी तथा सामाजिक शास्त्र सङ्काय नेपाली केन्द्रीय विभाग अन्तर्गत स्नातकोत्तर तह दोस्रो वर्षको आंशिक परिपूर्तिको प्रयोजनार्थ रहेको छ ।

### १.३ विषय परिचय

हरिप्रसाद पाण्डेयको जन्म २००७ साल काठमाडौँमा भएको हो । उनको पिताको नाम तोयनाथ पाण्डेय र माताको नाम पशुपतिकुमारी थियो । काठमाडौँको ठमेलमा जन्मेर त्यहीं शिक्षादीक्षा हासिल गर्नपुगेका पाण्डेयको विवाह प्रीति रिमालसँग सम्पन्न

भयो । पाण्डेयले नेपाली साहित्यका उपन्यास, कथा, कविता तथा अन्वेषण कार्यमा समेत कलम चलाएका छन् । पाण्डेयले वर्तमान समयसम्म चारवटा उपन्यास, एउटा कथासङ्ग्रह र एउटा कवितासङ्ग्रहको प्रकाशन गरिसकेका छन् । ती यसप्रकार रहेका छन् ।

१. तोयनाथ पाण्डेय स्मृति ग्रन्थ (सम्पादित कृति) - २०५९
२. कुमारीको सपना उपन्यास (२०६०)
३. आशाका रेखाहरू (उपन्यास- २०६१)
४. सम्झना कवितासङ्ग्रह (२०६२)
५. नदेखिएका पाइलाहरू (उपन्यास-२०६३)

६. अन्जान (कथासङ्ग्रह-२०६४)
  ७. मुटुभित्रका दुक्दुकीहरू (उपन्यास-२०६५)
  ८. काठमाडौंका पोडे एक परिचय (विशेष अनुसन्धान म.सं.वि-२०६५)
- आफ्नै पारिवारिक वातावरणबाट तथा जीवनका तीता-मीठा अनुभवहरूबाट साहित्य लेखनप्रति आकर्षित भएका साहित्यकार पाण्डेय आजसम्म अविच्छिन्न क्रियाशील छन्। उनकै जीवनका प्रमुख पाटाहरू दुःख-सुख प्राप्ति अप्राप्तिहरूलाई जीवनका भोगाइ, अनुभव र उनले गरेका योगदानका बारेमा लेख्न यो शोधपत्र प्रस्तुत भएको छ।

#### १.४ समस्याकथन

हरिप्रसाद पाण्डेयले नेपाली साहित्यको उपन्यास, कथा, कविता, लेखनमा विशेष योगदान दिएका छन्। यसका साथै पाण्डेयले सम्पादन तथा अन्वेषणसमेत गरका छन्। यसरी विभिन्न साहित्यिक विधामा कलम चलाउने पाण्डेयका बारेमा यसभन्दा पहिले उनको जीवनी, व्यक्तित्व र कृतित्वको समग्रहरूमा विस्तृत र सुव्यवस्थित तरिकाले अध्ययन भएको पाइदैन तसर्थ यो शोधपत्र तल उल्लेखित समस्याहरूमा केन्द्रित रहेर त्यसको स्पष्ट र सुव्यवस्थित अध्ययनका लागि अभिमुख भएको छ।

- १) हरिप्रसाद पाण्डेयको जीवनी कस्तो छ ?
- २) हरिप्रसाद पाण्डेयका व्यक्तित्वका पक्षहरू के कस्ता छन् ?
- ३) हरिप्रसाद पाण्डेयको साहित्यिकयात्रा कसरी विकसित भएको छ ? साथै उनका पुस्तक तथा कृतिहरूमा के कस्ता प्रवृत्तिहरू देखापर्दछन् ?

#### १.५ शोधकार्यका उद्देश्यहरू

हरिप्रसाद पाण्डेयको जीवनी, व्यक्तित्व र कृतित्वको अध्ययन गर्दा निम्न उद्देश्यहरू रहेका छन् :

१. हरिप्रसाद पाण्डेयको जीवनीको सर्वेक्षण गर्नु
  २. हरिप्रसाद पाण्डेयको व्यक्तित्वको विविध पाटाहरूको अध्ययन गर्नु
  ३. हरिप्रसाद पाण्डेयको कृतित्वको विश्लेषण गर्नु
- १.६ पूर्वकार्यको समीक्षा
- नेपाली साहित्यको वृद्धि र विकासमा संलग्न हरिप्रसाद पाण्डेयको जीवनी, व्यक्तित्व र कृतित्वको बारेमा यसभन्दा अगाडि खास अध्ययन विश्लेषण र मूल्यांकन गर्ने कार्य नभए तापनि विभिन्न समीक्षकहरूले भूमिकाको लेखनबाट र अन्य टिप्पणीहरूबाट पूर्वकार्यको समीक्षा प्रस्तुत भएको छ । जुन निम्नानुसार देखिन्छ :
१. वासुदेव खनालले ‘हिमालय टाइम्स’ (२०६० साउन १७) मा कुमारीको सपना उपन्यासको समीक्षा प्रस्तुत गरेका छन् ।
  २. नगेन्द्रराज रेग्मीले ‘गोरखापत्र’ (२०६० मंसिर २० गते) मा कुमारीको सपना उपन्यास यथार्थकै धरातललाई लिएर लेखिएको छ भन्दै आफ्नो विचार प्रस्तुत गरका छन् ।
  ३. नगेन्द्रराज रेग्मीले ‘गोरखापत्र’ (२०६१ फागुन २९) मा आशाका रेखाहरू उपन्यासमा नारीलाई केन्द्रविन्दु बनाई उनीहरूको अन्तर्वेदना केलाउने प्रयासमा केही हदसम्म सफल छ भनी आफ्नो विचार व्यक्त गरेका छन् ।
  ४. हरिप्रसाद भट्टराईले ‘गोरखापत्र’ (२०६४ माघ १२) मा अन्जान कथासङ्ग्रहका बारेमा “जोकोहीलाई मनोरञ्जनसँगै यथेष्ट शैक्षिक लाभ मिल्ने देखिन्छ” भनी आफ्नो मत प्रकट गरेका छन् ।
  ५. वासुदेव खनालले ‘हिमालय टाइम्स’ (२०६१ चैत्र ६) मा आशाका रेखाहरू उपन्यासलाई घटना प्रधान सामाजिक उपन्यास भनी आफ्नो राय प्रस्तुत गरेका छन् ।

६. कमल रिजालले ‘मधुपर्क’ (२०६२ श्रावण १०) मा आशाका रेखाहरू उपन्यासका बारेमा केही टिप्पणी प्रस्तुत गरेका छन् ।
७. बमबहादुर थापाले ‘गोरखापत्र’ (२०६२ चैत्र २६) मा सम्भन्ना कवितासङ्ग्रहका बारेमा आफ्नै समाज, काल, परिस्थिति र परिवेशका सापेक्षतामा मानिएका जीवनमा पाइने कथाव्यथा प्रस्तुत सङ्ग्रहमा अभिव्यक्त भएका छन् भनी आफ्नो मत प्रस्तुत गरेका छन् ।
८. गीता केशरीले ‘कान्तिपुर’ (२०६२ माघ १२)मा “नारीहरूको उत्थानका लागि आफ्नो कलम उठाउनु हुने हरिप्रसाद पाण्डेयज्यूलाई धन्यवाद छ” भनी आफ्नो विचार व्यक्त गरेकी छन् ।
९. पुस्कर लोहनीले तरुण साप्ताहिक (२०६४ असार १८) मा अन्जान कथासङ्ग्रहका बारेमा केही टिप्पणी प्रस्तुत गरेका छन् ।
१०. लुमडी आचार्यले मधुपर्क (वर्ष ४० : अड्क र पूर्णाड्क ४६९ पुस २०६४) मा नदेखिएका पाइलाहरू उपन्यासका बारेमा नेपाली सामाजिक जीवनका सुखमयभन्दा बढी कष्टकर परिदृश्यहरू पाण्डेयले सजीव बनाएर देखाएका छन् भनी आफ्नो विचार व्यक्त गरेका छन् ।
११. डा. दयाराम श्रेष्ठ ‘संभव’ ले “हरिप्रसाद पाण्डेयको साहित्यिक प्रतिभाबाट म अत्यन्तै प्रभावित भएँ, किनभने उपन्यासमा होस् वा कवितामा उहाँ किञ्चित मात्र पनि कृत्रिम देखिनुहुन्न, सहज देखिनुहुन्छ, जुन उहाँको साहित्यिक संस्कारको परिचायक हो ।” भनी आफ्नो मत प्रकट गरेका छन् ।
१२. कृष्णचन्द्रसिंह प्रधानले “उपन्यासकार हरिप्रसाद पाण्डेय एक सामाजिक उपन्यासकार हुन् । उनका उपन्यासले समाजमा दुर्जनहरू मात्र होइन्, सज्जन, सहयोगी र साधु पुरुष पनि छन् भन्ने सन्देश दिएका छन् ।” भन्ने मत प्रकट गरेका छन् ।

## १.७ शोधपत्रको औचित्य

प्रस्तुत शोधपत्रको अध्ययनबाट हरिप्रसाद पाण्डेयलाई नेपाली साहित्यजगत्का माध्यमबाट सबैमा चिनाउने प्रयास गरिएको छ । साथै उनको जीवनी, व्यक्तित्व र कृतित्वको अध्ययनमा केन्द्रित भई अध्ययन विश्लेषण भएकाले आउने पिँढीलाई पाण्डेयका जीवनीका बारेमा तथा यिनका कृतिहरूका बारेमा वस्तुगत जानकारी उपलब्ध हुनेछ । शोधपत्रको अध्ययनबाट उनका बारेमा जान्न चाहने जिज्ञासु तथा अन्य सामान्य पाठकलाई थोरै भए पनि लाभ हुने तथ्य प्रस्तुत गरिने उद्देश्य रहेकाले अनुसन्धान क्षेत्रमा यसको महत्त्व स्वतः रहनेछ ।

## १.८ शोधकार्यको सीमाङ्कन

हरिप्रसाद पाण्डेयको जीवनी र व्यक्तित्वको प्रभाव क्षेत्रका साथै उनका प्रकाशित साहित्यिक कृतिहरूको सर्वेक्षण गरी परिचयात्मक जानकारी दिने प्रयास प्रस्तुत शोधपत्रमा भएको छ । प्रस्तुत शोधपत्रमा साहित्यकार पाण्डेयको कृतित्वको कृतिपरक अध्ययन नगरेर जीवनी र व्यक्तित्वका सन्दर्भमा नै कृतित्वको पनि सामान्य अध्ययन गर्नु यस शोधपत्रको सीमा हो ।

## १.९ सामग्री सङ्कलन

प्रस्तुत शोधपत्रको तयारीका लागि पुस्तकालयीय अध्ययनलाई सामग्री सङ्कलनको मूल आधार बनाइएको छ । यसक्रममा पाण्डेयका कृतिहरू तथा उनका बारेमा लेखिएका सूचनात्मक टिप्पणीहरूको अध्ययन गरिएको छ । उनको जीवनी र व्यक्तित्व पक्षको अध्ययन गर्न शोधनायकसँगको प्रत्यक्ष भेटवार्ताद्वारा आवश्यक सामग्री जुटाइएको छ । त्यसका अतिरिक्त उनका समवर्ती साहित्यिक मित्रहरूसँग भेटघाट गरी प्रश्नोत्तर विधिद्वारा जानकारी लिइएको छ । त्यसैगरी पाण्डेयका कृतिका बारेमा लेखिएका भूमिका र मन्तव्यलाई पनि सहायक सामग्रीका रूपमा प्रयोग गरिएको छ ।

## १.१० शोधविधि

प्रस्तुत शोधपत्र तयार पार्दा अध्ययन र विश्लेषण विधिका लागि ऐतिहासिक, विवरणात्मक, वर्णनात्मक र आवश्यकतानुसार विविध पद्धतिको पनि प्रयोग गरिएको छ । शोधनायकसँगको प्रत्यक्ष भेटवार्ता र कृतिको अध्ययन विधि भने महत्त्वपूर्ण रहेका छन् ।

## १.११ शोधपत्रको रूपरेखा

यस शोधपत्रलाई पाँच परिच्छेदमा विभाजन गरिएको छ जसलाई निम्नानुसार प्रस्तुत गरिएको छ :

पहिलो परिच्छेद - शोध परिचय

दोस्रो परिच्छेद - साहित्यकार हरिप्रसाद पाण्डेयको जीवनी

तेस्रो परिच्छेद - साहित्यकार हरिप्रसाद पाण्डेयको व्यक्तित्व

चौथो परिच्छेद - साहित्यकार हरिप्रसाद पाण्डेयका साहित्यिक कृतिहरूको अध्ययन

पाँचौं परिच्छेद - उपसंहार

उपर्युक्त पाँच परिच्छेदलाई आवश्यकताअनुसार विभिन्न शीर्षक र उपशीर्षकमा विभाजन गरिएको छ । त्यसमध्ये पहिलो परिच्छेद शोधपरिचय रहेको छ । दोस्रो परिच्छेदमा पाण्डेयको जीवनी पक्षलाई विभिन्न शीर्षक, उपशीर्षकहरूमा प्रस्तुत गरिएको छ । तेस्रो परिच्छेदमा पाण्डेयका व्यक्तित्वका विविध पाटाहरूलाई विश्लेषणात्मक तरिकाले प्रस्तुत गरिएको छ । चौथो परिच्छेदमा पाण्डेयका साहित्यिक यात्रा, चरण विभाजन र कृतित्वको विश्लेषणात्मक अध्ययन गरिएको छ । पाँचौं परिच्छेदमा उपसंहार र निष्कर्षकारूपमा पाण्डेयको विधागत प्राप्ति र नेपाली साहित्य परम्परामा स्थान निर्धारण गरिएको छ । अन्त्यमा सन्दर्भग्रन्थसूची राखिएको छ ।

# परिच्छेद दुई

## हरिप्रसाद पाण्डेयको जीवनी

जीवनीको अर्थ कुनै पनि व्यक्तिको जीवन भोगाइका क्रमलाई सिलसिलाबद्ध रूपमा प्रस्तुत गर्नु हो । जीवनमा कल्पनाको प्रबलता नभएर तटस्थिता, वस्तुगतता र संयमितता हुन आवश्यक हुन्छ । अतः कसैको जीवन चरित्रलाई लिएर लेखिएको रचनालाई

जीवनी

भनिन्छ<sup>१</sup> । जन्मदेखि मृत्यु पर्यन्तको समयावधि र त्यस अविधिभित्र घटित भएका घटनाक्रमलाई सामान्यतया जीवनी भनिन्छ । तिनै जीवनका घटनाक्रमका समष्टिरूप नै जीवनी हो<sup>२</sup> । जीवनीको मूलभूत अर्थ भनेको कुनै पनि व्यक्तिको जीवनमा घटित भएका घटनालाई तथ्यगत आधारमा सरल रूपले क्रमिक रूपमा वर्णन गर्नु हो । त्यसै आधारमा जीवनीको अध्ययन गर्न यो शोधपत्रको उद्देश्य रहेको छ ।

### २.१. पूर्व पारिवारिक परम्परा

साहित्यकार हरिप्रसाद पाण्डेयका पिता तोयनाथ पाण्डेयको जन्म नुवाकोट जिल्लाको थानापति गाउँ पञ्चायतको थापागाउँ भन्ने ठाउँमा वि.सं. १९७८ मा भएको थियो । उनको जन्म हुँदा आमा-बाबुमा (कुलदत्त-आनन्दकुमारीमा) हर्षको सीमा थिएन । तर पनि उनीहरूको अन्तरात्मामा एक किसिमको डरले जरो गाडेकै थियो, छोरीरूपी कुलको बत्तीलाई मृत्युरूपी आँधी आएर निभाइदिने पो हो कि भनेर<sup>३</sup> । छोराको निधार अलिकति तातोजस्तो लागे पनि आमा आनन्दकुमारीको मातृहृदय कुँडिएर आउँथ्यो किनकि उनीहरूले यसभन्दा अगाडि धेरै सन्तानको वियोग खफ्नु परेको थियो । त्यसैले उनीहरूले छोराको लालनपालनमा विशेष हेरविचार गर्नु आवश्यक थियो । यसै बीचमा तोयनाथ पाण्डेय चार वर्षको हुँदा पिता कुलदत्तको मृत्यु भयो । आनन्दकुमारीको जीवनमा पुनः एकपल्ट विपत्को बादलले छोपिदियो । चारवर्षको बालक तोयनाथ पाण्डेयलाई बचाउनु उनको अब एक मात्र उद्देश्य थियो । आर्थिक अवस्थाका नाममा १० मुरी धान फल्ले खेतबाहेक अरू केही थिएन । उनको लागि चित बुझाउने बाटो त्यही एक सन्तान मात्र रहेको थियो ।

तोयनाथ पाण्डेय पाँच वर्षको भएपछि गाउँका पण्डितले नै अक्षरारम्भ गराएका थिए ४। पाण्डेय सानै उमेरदेखि अध्ययनतर्फ रुचि राख्ने तथा तीक्ष्ण बुद्धि भएका व्यक्ति

१. केशवप्रसाद उपाध्याय, साहित्य प्रकाश (पाँचौं सं.) काठमाडौं, सा.प्र. २०४९ पृ.१०

२. भिक्टर प्रधान, नेपाली जीवनी र आत्मकथाको सैद्धान्तिक तथा ऐतिहासिक विवेचना काठमाडौं, ने. प्र. प्र. २०४९ पृ. २८

३. शोधनायकबाट प्राप्त जानकारीअनुसार ।

४. शोधनायकबाट प्राप्त जानकारीअनुसार ।

तोयनाथ पाण्डेयले प्रारम्भिक शिक्षा गाउँकै पण्डितबाट हासिल गरेका थिए । ज्योतिषका प्रकाण्ड विद्वान् राधानाथ लोहनी उनको नातामा मामा पर्थे । उनीसँग नै तोयनाथ पाण्डेयले ज्योतिष विषयको अध्ययन गर्न थाले र पछि गएर ठूला पण्डित बने ।

तोयनाथ पाण्डेयको विवाह एघार वर्षको उमेरमा ७ वर्षकी पशुपतिकुमारीसँग भयो । विवाह भएको केही महिना पछिबाट नै उनी काठमाडौँमा बस्न थाले । काठमाडौँमा बसेदेखि नै तोयनाथ पाण्डेयले आफ्नो पढाइलाई अझै अगाडि बढाएका थिए । त्यही शिक्षाका कारणले पाण्डेय वि.सं. २००९ मा संस्कृत प्रधान पाठशालामा ज्योतिष विषयको शिक्षकमा नियुक्त भएका थिए । त्यसपछि उनले विविध सङ्घर्षका बाबजुद पनि ठमेलमा एउटा घर किने त्यसपछि पाण्डेय परिवार काठमाडौँमा स्थायी रूपमा बसोबास गर्न थालेका हुन् ।

## २.२. जन्म तथा जन्मस्थान

हरिप्रसाद पाण्डेयको जन्म वि. सं. २००७ साल जेठ १९ गते बिहिबारका दिन भएको हो । उनी आमा पशुपतिकुमारी तथा पिता तोयनाथ पाण्डेयका कान्छा सुपुत्र हुन् । उनको जन्म काठमाडौँको ठमेलमा आफ्नै निवासमा भएको हो ।

## २.३. बाल्यकाल र उपनयन

हरिप्रसाद पाण्डेयको बाल्यकाल काठमाडौँको ठमेलमा आफ्ना मातापिताको कुशल संरक्षणमा बितेको पाइन्छ । उनको बाल्यकालको धेरै समय बिरामी परेरै बितेको थियो ५। तसर्थ बाल्यकालको धेरै समय उनी हृष्टपुष्ट हुन सकेनन् । पाण्डेय सानो उमेरमा पढाइमा भन्दा घरव्यवहारमा बढी रुचि राख्ने गर्थे । उनको बाल्यस्वभाव चकचके खालको थियो । त्यसैले आमा पशुपतिकुमारीलाई छोरो हुक्काउन निकै गाह्नो

परेको थियो । विरामी भइराख्ले भएकाले उनलाई पाँच वर्षसम्म क, ख पनि राम्ररी आउँदैनथ्यो । विरामी भइरहने कारणले उनलाई आमाबाबुले स्कूल भर्ना गरिदिएका थिएनन् । उनका दुईजना दाजुहरू स्कूल जान्थे तर पाण्डेय भने बाखा चराउन फाँटतिर जान्थे ९ ।

हरिप्रसाद पाण्डेयको उपनयन भारतको इलाहाबाद त्रिवेणीमा गरिएको हो । पाण्डेय ज्यादै विरामी पर्ने र पढ्नमा पनि कमजोर थिए । त्यसैले त्रिवेणी जस्तो पवित्रस्थलमा उपनयन गरेमा रोगव्याधि सधैं नाश हुन्छ भन्ने धार्मिक आस्था भएकाले उनलाई भारतमा लगेर उपनयन गराइएको हो ।

## २.४. शिक्षादीक्षा

साहित्यकार हरिप्रसाद पाण्डेयका पिता तोयनाथ पाण्डेय शिक्षित व्यक्ति थिए । उनले शिक्षाको महत्त्व राम्ररी बुझेका थिए । त्यसो भएता पनि कान्छा छोरा हरिप्रसाद पाण्डेय बाल्यकालमा धेरै विरामी परेकाले पाँच वर्षसम्म पनि स्कूलमा भर्ना गरिएको थिएन । उनी छ वर्षको उमेरमा लैनचौरको शान्ति विद्यागृहमा दुई कक्षामा अध्ययनका लागि भर्ना भए । पाण्डेयले दुई वर्षसम्म त्यही स्कूलमा अध्ययन गरेपछि पाँच कक्षामा दरबार हाइस्कूलमा भर्ना भए । स्कूलमा पढ्दा उनी अड्ग्रेजी र गणित विषयमा जहिले पनि फेल हुन्थे । छ कक्षामा पुगेपछि मात्र हरिप्रसाद पाण्डेयले पढाइमा प्रगति गरेका थिए । त्यसपछि नौ कक्षामा जुद्दोदय हाइस्कूल क्षेत्रपाटीमा भर्ना भए । कडा मेहनत गरेकाले उनलाई एस. एल. सी. पास गर्न त्यति गाहो परेन । २०२५ सालमा उनले एस. एल. सी. पास गरेपछि उच्च शिक्षा हासिल गर्नका लागि सरस्वती कलेज लैनचौरमा भर्ना भए । यसपछि पाण्डेयले सरस्वती कलेजबाट आइ. ए. र त्रिचन्द्र कलेजबाट बी. ए. पास गरे । दुई वर्षको विश्रामपछि समाजशास्त्रमा स्नातकोत्तर गर्नका लागि पाण्डेय कीर्तिपुर कलेजमा भर्ना भए । उनले त्यहाँ दुई वर्ष नियमित छात्राको रूपमा अध्ययन गरे पनि परीक्षा भने दिएनन् । त्यस्तै उनले अर्थशास्त्रमा स्नातकोत्तर तथा बी.एल. को अध्ययन गरे तर परीक्षा भने पास गर्न सकेनन् । आखिरमा समय बित्तै गयो । कुनै पनि विषयमा उनले एम. ए. पास गर्न सकेनन् । पाण्डेयको

औपचारिक अध्ययन यति मै स्थगित भए पनि स्वअध्ययन तथा लेखनमा भने अहिलेसम्म पनि विश्राम लिएका छैनन् ।

## २.५ विवाह र सन्तान

हरिप्रसाद पाण्डेयको विवाह वि. सं. २०२७ सालमा २० वर्षको उमेरमा भएको हो । उनको विवाह गोविन्दकुमार रिमालकी ठाँइली छोरीसँग भएको हो । सन्तानलाई हेर्दा उनका तीनवटी छोरीहरूमात्र रहेका छन् । विवाह र सन्तानलाई हेर्दा पाण्डेयलाई वैवाहिक जीवनबाट कहिल्यै पनि दुःखको अनुभव भएको देखिँदैन ।

## २.६ दाम्पत्यजीवन र पारिवारिक स्थिति

पाण्डेयको विवाह वि. सं. २०२७ सलामा भएको हो । दाम्पत्यजीवनको शुभारम्भदेखि एक वर्षसम्म उनलाई खासै दुःख कष्टको अनुभव भएन । जब पाण्डेय परिवारमा अंशवण्डा गरियो त्यसपछि उनीहरूका दुःखका दिन सुरु भए । पत्नी पनि कलेजमा अध्ययन गर्ने र आफ्नो पनि खासै कुनै जागिर नभएकाले आर्थिक समस्यामा उनले निकै सङ्घर्ष गर्नुपर्यो तर पनि उनीहरूको दाम्पत्यजीवनमा अटल विश्वास थियो । उनकी श्रीमती धैर्यवान्, सन्तोषी थिइन्<sup>५</sup> । त्यसैकारणले उनको दाम्पत्यजीवनमा आदर्श प्रेम, सद्भाव, त्याग र अटुट विश्वासको कमी भने कहिल्यै अनुभव भएन ।

साहित्यकार हरिप्रसाद पाण्डेयको पारिवारिक स्थितिको कुरा गर्दा उनका तीनजना दिदीबहिनीहरू, दुई दाजुहरू र एक सौतेनी भाइ रहेका छन् । उनका सबै दाजुभाइ तथा दिदीबहिनीहरू आ-आफ्नो ठाउँमा व्यवस्थित भइसकेका छन् । पाण्डेयका तीनवटी छोरीहरू छन् । उनीहरूको नाम भावना, सिर्जना र अर्चना राखिएको छ । तीनैजना छोरीहरूको विवाह गरिसकिएको छ । सबै छोरीहरू व्यवस्थित रूपमा बसेकाले पाण्डेय परिवार सुखद रहेको देखिन्छ ।

## २.७ आर्थिक अवस्था

साहित्यकार हरिप्रसाद पाण्डेय मध्यम परिवारमा जन्मिएका थिए । आर्थिक रूपमा हेर्दा उनको विवाह हुनुभन्दा अगाडिको समय सुखमय रहेको देखिन्छ । तर विवाह भएको एकवर्षपछि जब बुबाले अंशवण्डा गरिदिए तब पाण्डेयलाई आर्थिक

सङ्कटले धैरै सताएको देखिन्छ । उनको अंशमा आठमुरी धान फल्ने खेत मात्र रहेको थियो । उनकी श्रीमती पनि कलेजमा अध्ययन गर्थिन् । उनको पनि कुनै जागिर थिएन । त्यसैले त्यतिबेलाको आर्थिक अवस्थालाई हेर्दा कमजोर भएको देखिन्छ । पाण्डेयका दुईजना दाजुहरू जागिरे थिए । उनीहरूको आर्थिक अवस्था मध्यम खालको देखिन्छ । तर हरिप्रसाद पाण्डेयको विवाहपछिको केही समय भने आर्थिक सङ्कटले गाँजिएको थियो । जागिरका लागि पाण्डेयले धैरै ठाउँमा भौतारिनु परेको देखिन्छ । कहिले काठमाडौं कहिले विराटनगर त कहिले नेपालगञ्ज । कतिदिन त उनले गहुँको पीठोको खोले खाएर आफ्नो भोक मेटाउनु परेको देखिन्छ । यसरी विवाह पछिको केही समयमा आर्थिक कठिनाइका कारण उनले धैरै सङ्घर्ष गर्नुपर्यो । परिवार पाल्नका लागि केही समय उनले दयूसन पनि पढाए । यसैगरि विविध समस्याका बाबजुद अगाडि बढौदै जाँदा पाण्डेयले २०३५ साल जेठ १५ गतेदेखि हेड असिस्टेन्ट पदमा स्थायी कर्मचारीको रूपमा काम गर्न थाले । श्रीमतीको पनि स्थायी जागिर भयो । यसरी पाण्डेय श्रीमान् र श्रीमती दुवैको जागिर स्थायी भयो । त्यसपछि आर्थिक सङ्कट ओभेलमा पदै गयो । अहिलेको समयमा हेर्दा उनलाई कुनै पनि आर्थिक सङ्कट परेको छैन<sup>९</sup> ।

## २.८ व्यक्तिगत रुचि तथा स्वभाव

मानिसका व्यक्तिगत रुचिका विषयहरू धैरै हुन्छन् । खानपानको रुचिमा भन्नुपर्दा पाण्डेयलाई मासु धैरै मनपर्थ्यो तर उनले अहिले मासु खान छोडिदिए । तर वर्तमानको समयमा पाण्डेय साकाहारी भोजन मात्र मनपराउँछन् । खेलकुदमा भन्ने हो भने उनलाई फुटबल र व्याडमिन्टन मनपर्ने खेल हुन् । उनको महत्त्वपूर्ण रुचिको विषय लेख्नु पनि हो । उनको व्यक्तिगत स्वभावलाई हेर्दा हट्टी खालको देखिन्छ । भएको कुरालाई जस्ताको तस्तै अभिव्यक्त गर्ने उनको व्यक्तिगत स्वभाव रहेको छ । अरूलाई सहयोग गर्नुपर्यो भने सँधै तत्पर रहने उनको अर्को व्यक्तिगत रुचि तथा स्वभाव रहेको छ<sup>१०</sup> । उनमा कसैसँग नडराउने तथा कार्यालयमा इमान्दारीपूर्वक काम गर्ने स्वभाव विद्यमान् देखिन्छ । यही व्यक्तिगत रुचि तथा स्वभावका कारण पाण्डेय विश्वविद्यालयमा परिचित व्यक्तित्व देखिन्छन् ।

## २.९ पेसा

हरिप्रसाद पाण्डेयको वंशानुक्रममा हेर्ने हो भने बाजे पुराण आदि भनेर जीविका चलाउँथे । उनका बाबु तोयनाथ पाण्डेय संस्कृतका विद्वान् थिए । साथै उनले संस्कृत अध्ययन संस्थानको छ वर्ष सहायक डीन अनि छ वर्ष डीन भएर कुशलतापूर्वक प्रशासन चलाएका थिए । त्यही पारिवारिक प्रेरणाले गर्दा हरिप्रसाद पाण्डेयले पनि २०२९ सालदेखि प्रशासकीय सेवा सुरु गरे । त्यसपछि उनले विभिन्न निकायमा कार्य गरी २०३५ साल जेठ १५ गतेदेखि स्थायी सेवामा प्रवेश गरे र निरन्तर रूपमा हालसम्म नेपाल संस्कृत विश्वविद्यालयमा कार्यरत रहेका छन् । यसरी प्रशासनिक  
९. ऐजन  
१०. शोधनायकबाट प्राप्त जानकारीअनुसार

## २.१० साहित्य लेखनका लागि प्रेरणा र प्रभाव

साहित्यकार हरिप्रसाद पाण्डेयको जन्म शिक्षित परिवारमा भएको थियो । त्यसै हुनाले साहित्य लेखनमा उनलाई पारिवारिक वातावरण उचित मिलेको पाइन्छ । कुनै पनि साहित्यकार अथवा साहित्यिक व्यक्तित्व कसै न कसैको प्रेरणाबाट नै साहित्य सिर्जना गर्न थाल्दछ । प्रसिद्ध साहित्यकारको प्रभावले साहित्य सिर्जना गर्ने पनि नहुने त होइनन् । धेरैजसोले कसैको प्रभाव, प्रेरणा र सहयोगबाट नै साहित्य सिर्जना गरेको पाइन्छ । हरिप्रसाद पाण्डेयले पनि यस्तै प्रभाव तथा प्रेरणाबाट नै साहित्य सिर्जना गरेको देखिन्छ ।

हरिप्रसाद पाण्डेयका परिवारमा पनि पिता तोयनाथ पाण्डेय संस्कृतका प्रकाण्ड विद्वान् थिए । उनै पिताको प्रभाव र प्रेरणाले पाण्डेय सुरुसुरुमा कविताहरू लेख्ये र पितालाई सुनाउँथे । पिताले कविता सुनेपछि राम्रो छ लेख्दै जानुपर्छ भनी हौसला दिन्थे । यस्तैगरी लेख्दै जाँदा उनले साहित्यका विभिन्न विधामा कलम अगाडि बढाए ।

हरिप्रसाद पाण्डेयको लेखनको सुरुवात कहाँबाट भयो भन्ने एउटा रोचक कथा छ । एक दिनको घटना हो उनी कक्षा छ मा अध्ययन गर्थे । स्कुलबाट घर आई उनी रातको आठ बजेतिर स्कुलको गृहकार्य गर्दै थिए । उनको जेठो दाजु त्रिचन्द्रमा रात्रि कक्षामा पढ्थे । दाजु पढेर घर आएपछि दिउँसो बनाएको मीठो विशेष खानेकुरा आमाले दिनुभयो । दाजुले भाइ हरिप्रसादलाई पनि दिन खोज्दा आमाले रोक लगाइदिनु

भयो । “दिउँसै खाइसकेको छ त्यसलाई दिनु पर्दैन” भन्नुभयो । केटाकेटी मन न हो, उनको मुटुमा गाँठो पारेर आयो । पाण्डेय रुदै आफ्नो पढने कोठामा आएर कलम कापी लिएर लेख्न थाले ११ । यसरी हरिप्रसाद पाण्डेयको लेखनयात्रा त्यही दिनबाट सुरु भएको हो । उनले लेख्ने प्रेरणा पिताजीबाट पाए पनि छपाउने प्रेरणा भने श्रीमतीबाट पाएका छन् । उनले पिताजीको जीवनकालमा लेख्ने प्रेरणा पाएका थिए भने मृत्युपश्चात् प्रकाशित गर्ने आशीर्वाद पाएका थिए ।

## २.११ वियोगको अवस्था

हरिप्रसाद पाण्डेयका पिताले आफ्नो जीवनकालमा नै सबै छोराहरूलाई सम्पत्ति छुट्याइदिएका थिए । उनकी जेठी श्रीमती पट्टिका तीनैजना छोराहरू आफ्नो घर बनाएर स्थापित भइसकेका थिए । पिता भने कान्छी श्रीमतीसँग बस्थे । चाहेर पनि ११. शोधनायकबाट प्राप्त जानकारीअनुसार ११ वर्ष पाएनन् । पिताको विशेष स्नेह भने छोरा डेय पनि आमाको भन्दा बाबुको बढी श्रद्धा गर्थे ।

पितालाई कहिलेकाहीं भेट्न जाँदा उनीमाथि सौतेनी आमाको कुदृष्टि पर्थ्यो । बाबुले छोरालाई केही दिई पो हाल्छन् कि भन्ने शड्का कान्छी आमाको मनमा उत्पन्न हुन्थ्यो । त्यसैले चाहेर पनि पाण्डेयले पिताको सेवा गर्न पाएनन् । बाबुबाट उनले प्रशस्त नैतिक शिक्षा पाएका थिए । वि.सं. २०५० आश्विन १७ गते मझगलबारका दिन बिहान चार बजे पिता तोयनाथ पाण्डेयको झहलीला समाप्त भयो । त्यसपछि उनले आफूलाई दुहुरो समिक्षए किनकि उनले आफूमाथि परेका वेदनाहरू पितालाई सुनाउँदथे । पिताबाट पाएका सुभावले हरिप्रसादलाई जहिले पनि राहत मिलेको थियो । पिताको मृत्युपश्चात् उनले त्यस किसिमको राहतबाट वञ्चित हुनुपर्यो । त्यसैले पितृवियोगले हरिप्रसाद पाण्डेयलाई गहिरो चोट पुऱ्याएको देखिन्छ ।

वि.सं. २०६३ फागुन २१ गते पूर्णिमाको द्वितीयाको दिन बिहान चार बजे आमाको मृत्युको समाचार उनले सुने । आमा माइला दाजुसँग बस्नेगर्थिन् । तसर्थ उनले आफ्नो जीवनकालमा आमाको पनि सेवा गर्ने मौका पाएनन् । जीवनकालमा उनले बाबुआमाको सेवा गर्ने मौका पाएनन् तैपनि मृत्युपश्चात् साहित्यको माध्यमबाट भए पनि उनले सेवा गर्ने बाटो समाएका छन् ।

## २.१२ पुरस्कार

२०२६ सालमा स्वतन्त्र राष्ट्रवादी विद्यार्थी मण्डलले कविता प्रतियोगिता गराएको थियो । उक्त प्रतियोगितामा हरिप्रसाद पाण्डेयले कवि भीमनिधि तिवारीका करकमलबाट प्रथम पुरस्कार प्राप्त गर्ने सौभाग्य पाएका थिए । शिक्षा क्षेत्रमा राम्रो काम गरेवापत पाइने शिक्षा पुरस्कार उनले २०५१ सालमा प्राप्त गरे । हालको नेपाल संस्कृत विश्वविद्यालयको केन्द्रीय कार्यालय बेलभुण्डी दाङमा श्री ५ युवराजधिराजको सवारी भएको समयमा राम्रो काम गरेवापत उनले प्रशंसापत्र पाएका थिए । उनले २०६३ सालमा दीर्घसेवा पदक प्राप्त गरे । यसरी विविध पुरस्कारबाट पाण्डेय आफ्नो कलम यात्रामा अनवरत लागि परेका छन् ।

## २.१३ साहित्यिक प्राज्ञिक सहभागिता

हरिप्रसाद पाण्डेय २०५९ सालभन्दा अगाडिका समयमा कृतिहरू केवल लेखेर मात्र राख्ये । कुनै पत्रपत्रिकालाई दिनुपर्छ र छपाउनु पर्छ भन्ने कुरासमेत उनले हेका राखेका थिएनन् । जब उनले २०५९ सालमा तोयनाथ पाण्डेय स्मृतिग्रन्थ प्रकाशन समितिको सदस्य सचिवमा रहेर स्मृतिग्रन्थ प्रकाशन गर्न सफल भए । त्यसपछि उनको प्राज्ञिक सहभागिता बढ्दै गयो । त्यसपछि उनले आफ्नो प्रथम मौलिक उपन्यास कुमारीको सपना (२०६०), प्रकाशित गरे । २०६१ सालमा आशाका रेखाहरू उपन्यास प्रकाशित गरे । त्यसैगरी २०६२ सलामा सम्झना नामक कवितासङ्ग्रह पनि प्रकाशित भयो । यसै बेलादेखि उनले कृतिहरूलाई विभिन्न पत्रपत्रिकामा दिन थाले । २०३६ सालपछि एकैचोटि २०६३ साल कार्तिक पाँच गते पीडा शीर्षकको कविता गोरखापत्रमा पहिलो पटक छापियो । कथामा पहिलो पटक पूर्वजन्मको पाप (२०६२ मार्ग १८ गते) प्रकाशित भएको थियो । त्यसपछि विभिन्न पत्रपत्रिकामा उनका कथा, कविताहरू प्रकाशित भइरहेका छन् । हाल उनी कवि गोष्ठीहरूमा सहभागी हुनुका साथै बौद्धिक उद्वोधन सङ्घको कार्यकारी परिषद्को आजीवन सदस्य तथा ज्योति साहित्य प्रतिष्ठानको कार्यकारी सदस्यको रूपमा सहभागी हुदै आएका छन् ।

## २.१४ तीर्थयात्रा

हरिप्रसाद पाण्डेयले आफ्नो जीवनकालमा विभिन्न तीर्थस्थलहरूको भ्रमण गरेका छन् । उनले २०६० साल जेठमा भारतको ब्रदीनाथ यात्राको भ्रमण गरेका छन् भने २०६० साल पौषमा चारधामलगायत भारतका विभिन्न तीर्थस्थलहरूको भ्रमण गरेका छन् । उनले स्वदेश तथा विदेशको तीर्थस्थलहरूको यात्रामात्र गरेका छैनन् । त्यहाँ जाँदा आफूले भोग्नुपरेका तीतामीठा यथार्थ अनुभूतिलाईसमेत आफ्नो कवितामा अभिव्यक्त गरेका छन् जुन सम्झना नामक कवितासङ्ग्रहमा सङ्कलित गरिएको छ । हरिप्रसाद पाण्डेय तीर्थयात्रा गर्न असाध्यै मन पराउँछन् । साथै उनी आफ्नो धर्म, संस्कृति र परम्परालाई जोगाउनु पर्दै भन्ने कुरामा बढो ख्याल राख्छन् । यसै सिलसिलामा उनले तीर्थयात्राको सम्झनामा ब्रदीनाथ यात्रा र ‘यात्रा’ नामक दुई लामा कविताहरूको रचना गरेका छन् जुन अत्यन्त प्रशंसनीय देखिन्छ । तीर्थयात्राका सन्दर्भमा लेखिएका यी कविताहरूमा हाम्रो धर्म, संस्कार, परम्पराअनुसार भारतस्थित तीर्थस्थलहरूको यात्रा गर्न चाहने नेपालीहरूका लागि राम्रो पथप्रदर्शकसमेत बन्न सफल हुनसक्ने देखिन्छ । साथै उनले तीर्थस्थलको यात्रावर्णनमा लेखिएको कवितामा देशभक्तिपूर्ण भावको पनि अभिव्यक्त गरेका छन् । यसरी तीर्थस्थललाई यात्रामात्र नगरी यथार्थ अनुभूतिको अभिव्यक्ति कविताका माध्यमबाट गर्नसक्नु नै उनको महत्वपूर्ण पक्ष हो ।

## २.१५ प्रकाशित पुस्तकाकार कृतिहरूको सूची

विद्यार्थी जीवनदेखि लेखन कार्यमा प्रवेश गरेका पाण्डेयले साहित्यका विविध विधामा कलम चलाएका छन् । उनको सबैभन्दा उर्वर क्षेत्रमा उपन्यास विधा हो । तैपनि उनले साहित्यका विविध विधामध्ये उपन्यास, कथा, (आख्यान), कवितामा आफ्नो कलम अनवरत रूपमा चलाएका छन् । पाण्डेयले अहिलेसम्ममा चारवटा उपन्यासहरू, एउटा कवितासङ्ग्रह, एउटा कथासङ्ग्रहको प्रकाशन गरेका छन् । ती सम्पूर्ण कृतिहरूको सूचि यसप्रकार रहेका छन् :-

- १) ‘तोयनाथ पाण्डेय स्मृति ग्रन्थ’ (२०५९ (सम्पा)

- २) ‘कुमारीको सपना’ (उपन्यास २०६०)
- ३) ‘आशाका रेखाहरू’ (उपन्यास २०६१)
- ४) ‘सम्भना’ (कवितासङ्ग्रह २०६२)
- ५) ‘नदेखिएका पाइलाहरू’ (उपन्यास २०६३)
- ६) ‘अन्जान’ (कथासङ्ग्रह २०६४)
- ७) ‘मुटुभित्रका ढुक्ढुकीहरू’ (उपन्यास २०६५)
- ८) ‘काठमाडौंका पोडे एक परिचय विशेष अनुसन्धान’ (म.सं. वि. २०५२) (२०६५)

## २.१६ निष्कर्ष

हरिप्रसाद पाण्डेय २००७ साल जेठ १९ मा काठमाडौंको ठमेलमा जन्मिएका हुन्। उनले स्नातकसम्मको औपचारिक शिक्षा प्राप्त गरेका छन्। मध्यम परिवारमा जन्मनुभएका पाण्डेयको पारिवारिक स्थिति सुखमय रहेको छ। कसैसँग नडराउने, खरो मिजास र देखेको कुरा नलुकाइकन स्पष्ट भन्ने उनको व्यक्तिगत स्वभाव देखिन्छ। पाण्डेय लामो समयदेखि नेपाल संस्कृत विश्वविद्यालयमा कार्यरत रहेका छन्। उनी विगत एक दशकदेखि नेपाली साहित्यका विविध विधामा अनवरत रूपमा कलम चलाउँदै अघि बढेका छन्। हरिप्रसाद पाण्डेय शिक्षित परिवारमा जन्मिएका थिए। उनका बाबु संस्कृतका प्रकाण्ड विद्वान् थिए। उनै बाबुको प्रेरणा र प्रभाव ग्रहण गर्दै उनले साहित्य लेखनमा हातअगाडि बढाएका छन्। हाल उनी विभिन्न साहित्यिक कार्यक्रममा सहभागी बन्ने गरेका छन्। उनले वर्तमान समयसम्ममा चार वटा उपन्यासहरू, एउटा कवितासङ्ग्रह र एउटा कथासङ्ग्रह प्रकाशित गरिसकेका छन्। पाण्डेय अहिले कवि गोष्ठीहरूमा सहभागी हुनुका साथै बौद्धिक उद्बोधन सङ्घको कार्यकारी परिषदको आजीवन सदस्य रहेका छन्। साथै ज्योति साहित्य प्रतिष्ठानको कार्यकारी सदस्यको रूपमा उनी सहभागी बन्दै आएका छन्।

# परिच्छेद तीन

## हरिप्रसाद पाण्डेयको व्यक्तित्व

### ३.१ व्यक्तित्व

कुनै पनि व्यक्तिको वैयक्तिक विशेषतालाई देखाउने गुण नै उक्त व्यक्तिको व्यक्तित्व हो । यसमा व्यक्ति विशेषताको निजीपनमा साथै व्यक्तिले अरूलाई प्रभावित पार्न व्यक्ति विशेषमा रहेको विशेषतासमेत हुन्छ । “साथै व्यक्तित्व वंश परम्परागत जैविक वृत्तिपुञ्जका आलोकबाट प्राप्त वा आर्जित अनुभवहरूद्वारा समृद्ध बन्दछ<sup>१२</sup> ।” कुनै पनि व्यक्तिको व्यक्तित्व निर्माणमा जीवनका विभिन्न पक्षको महत्वपूर्ण भूमिका हुन्छ । जीवन जीउने क्रममा आएका दुःखसुख, हाँसोरोदन विविध आरोहअवरोह तथा सम्बन्धित व्यक्तिको समाज, परिवार, शिक्षादीक्षा, वातावरण, परिवेश आदि नै व्यक्तित्व निर्माणका प्रमुख तत्त्व हुन् ।

व्यक्तित्वको अर्थ शब्दमा भन्नुपर्दा आन्तरिक स्वरूपलाई बलियो गराउनु हो । तसर्थ व्यक्तिको अनुभव, ज्ञान, भुकाव, शिक्षादीक्षा, आस्था, मूल प्रवृति आदिको समूहलाई व्यक्तित्व भन्न सकिन्छ । साहित्य र समाजप्रति समर्पित व्यक्तिको स्वभाविक गुणले कुनै पनि व्यक्तिको निजी व्यक्तित्व निर्माण हुन्छ भने सामाजिक कार्यहरूले उसको सार्वजनिक व्यक्तित्व निर्माण गर्दछ । यी विभिन्न परिवेशबाट निर्मित हरिप्रसाद पाण्डेयको व्यक्तित्वलाई यसप्रकार हेर्न सकिन्छ :-

### ३.२ व्यक्तित्वका विभिन्न पाटा

व्यक्तित्व निर्माणमा कुनै पनि मानिसका जीवन भोगाइमा आउने विविध घटना, जीवनका चाप-प्रतिचाप, आरोह-अवरोह, घात-प्रतिघात, क्रिया-प्रतिक्रिया, द्वन्द्व-प्रतिद्वन्द्व, मोड-प्रतिमोडहरूले प्रमुख भूमिका खेलेको हुन्छ । यसैगरी ऊ बाँचेको परिवेश, पारिवारिक पृष्ठभूमि, सामाजिक सांस्कृतिक, रुचि, पेसा, शिक्षादीक्षा आदिले पनि उल्लेखनीय सहयोग पुऱ्याएको हुन्छ<sup>१३</sup> । यसरी निर्माण भएको व्यक्तिको व्यक्तित्वलाई निजी व्यक्तित्व र सार्वजनिक गरी दुई भागमा बाँडेर हेर्न सकिन्छ ।

निजी व्यक्तित्वलाई पनि बाह्य र आन्तरिक गरी दुई भागमा विभाजन गरेर हेर्न सकिन्छ । बाह्य व्यक्तित्व अन्तर्गत शारीरिक बनोट, आकार-प्रकार, खानपिन, स्वभाव, चरित्र, व्यवहार पर्दछन् भने आन्तरिक व्यक्तित्व अन्तर्गत साहित्यिक व्यक्तित्व देखापर्दछ

१२. केशवप्रसाद उपाध्याय मोतीरामको व्यक्तित्व र योगदान मोती स्मृति ग्र. थ. (२०३९, पृ. ९)  
१३. खगेन्द्रप्रसाद लुइटेल, क्षेत्रप्रताप अधिकारीका काव्य प्रवृत्ति अप्रकाशित एम.ए. शोधपत्र, ने.के.श.वि., २०४६, पृ.२२) तक

व्यक्तित्वलाई साहित्य र साहित्येतर गरी दुई श्रेणीमा विभाजन गरी हेर्न सकिन्छ । साहित्यिका कविता, आख्यान, नाटक आदि विभिन्न साहित्यिक विधाले व्यक्तिको साहित्यिक व्यक्तित्व निर्माण गर्दछ । साहित्यसँग संलग्न नरहेर समाजमा समाजिक हितका लागि कार्य गर्ने व्यक्तिको व्यक्तित्वलाई साहित्येतर व्यक्तित्वभित्र राखेर हेर्न सकिन्छ ।

### ३.३ बाह्य व्यक्तित्व

#### ३.३.१ शारीरिक व्यक्तित्व

हरिप्रसाद पाण्डेय बाल्यकालमा धेरै विरामी परेका थिए । त्यसैले बाल्यकालमा उनी त्यति हृष्टपुष्ट हुन सकेनन् । पछि गएर हेर्दा उनको शारीरिक संरचना भने हृष्टपुष्ट भएको देखिन्छ । उनको शारीरिक बनावटलाई हेर्दा मझौला कद, हाँसिलो अनुहार, गोलो मुख, पङ्क्ति मिलेका सेता दाँत, काला ठूला आँखा, ठिक्कको उचाई रहेको छ । उनी वर्तमान समयमा ६० वर्षको हाराहारीमा पुगिसकेका भए पनि ४० को दशकको जस्तो शारीरिक संरचना देखिन्छ । यही हृष्टपुष्ट शारीरिक संरचनाले नै पाण्डेयको शारीरिक व्यक्तित्वको निर्माण भएको देखिन्छ ।

#### ३.३.२ स्वभाव

हरिप्रसाद पाण्डेय देखेको कुराभित्र लुकाएर नराखी स्पष्ट रूपमा भन्ने व्यक्ति हुन् । उनको व्यक्तिगत स्वभाव अनुशासनप्रेमी तथा अन्यायका विरुद्ध जस्तोसुकै ठूलाबडासँग वादविवाद गर्ने पछि नहट्ने हट्टी खालको देखिन्छ । कार्यालयमा इमान्दारीपूर्वक काम गर्ने स्वभाव पनि उनमा देखिन्छ । खरो मिजासमा आफ्ना कुरा अरू समक्ष अभिव्यक्त गर्ने उनको अर्को व्यक्तिगत स्वभाव रहेको छ । सबैलाई समान

व्यवहार गर्ने उनको अर्को स्वभाव देखिन्छ । महिलाहरूलाई सम्मान गर्नुपर्छ भन्ने भावना उनको व्यक्तिगत स्वभावमा भलिक्न्छ । पाण्डेय कहिल्यै पनि खाली हात बस्न रुचाउँदैनन् । कार्यालयको कामबाट केही फुर्सद मिल्लासाथ उनी केही न केही लेखिरहन्छन् । अरूलाई सहयोग गर्नु पर्दा उनी चौबीसै घण्टा तयार रहन्छन् । यही व्यक्तिगत स्वभावका कारण उनी विश्वविद्यालयमा परिचित व्यक्तित्व बनेका छन् । उनी सबैलाई समान व्यवहार गर्ने आदर्शलाई भन्दा यथार्थलाई मनपराउँछन् । उनी परम्परालाई मन पराउने र संस्कृतिप्रेमी छन् ।

### ३.३.३ खानपिन

मानिसको खानपिनको रुचिमा समय र उमेरले परिवर्तन गराउँछ । हरिप्रसाद पाण्डेय बीसबाइस वर्षको उमेरसम्म तरकारीमा भन्टा, फर्सी, फर्सीको मुन्टा, सिमी, लौका आदि मन पराउँदैनथे । उनलाई मासु भने ज्यादै मनपर्थ्यो । समय र उमेरको परिवर्तनसँगै उनलाई सबै चीज मीठो लाग्न थाल्यो । उनले मासु खान पनि छाडिदिए । मादक पदार्थको सेवनबाट पनि पाण्डेय टाढा देखिन्छन् । उनी वर्तमान समयमा साकाहारी भोजन गर्न मन पराउँछन् ।

### ३.३.४ व्यवहार

हरिप्रसाद पाण्डेय मानवीय व्यवहार मन पराउने व्यक्ति हुन् । उनमा आफूभन्दा अग्रजलाई आदर र सानालाई माया गर्ने समान व्यवहार भएको जानकारी पाइन्छ । अरूलाई चौबीसै घण्टा सहयोग गर्न रुचाउने पाण्डेयको व्यवहारले धेरै परिचितहरू उनलाई मन पराउँछन् । अनुशासनप्रेमी तथा इमान्दार व्यवहारका कारण पाण्डेय कार्यालयमा परिचित व्यक्तित्व भएका छन् । भएको कुरालाई स्पष्टरूपमा सबैसामु पस्कने व्यवहार उनमा देखिन्छ ।

### ३.४ आन्तरिक व्यक्तित्व

आन्तरिक व्यक्तित्व भित्र व्यक्तित्वका विविध रूपमा कुनै पनि व्यक्तिलाई हेर्ने गरिन्छ । कुनै पनि मानिसको जीवन जीउनेक्रममा आएका उकाली-ओराली, घात-प्रतिघात तथा क्रिया-प्रतिक्रियाले व्यक्तित्व निर्माणमा महत्वपूर्ण भूमिका खेलेको हुन्छ ।

यसका साथै व्यक्तिको व्यक्तित्व निर्माणमा उसले बाँचेको परिवेश, परिवार, सामाजिक, सांस्कृतिक स्थिति, रुचि, पेसा, शिक्षा-दीक्षा आदिले उल्लेखनीय सहयोग पुऱ्याएको हुन्छ

।

हरिप्रसाद पाण्डेयको व्यक्तित्वमा पनि उल्लिखित कुराले प्रभाव पारेको पाइन्छ । सर्वप्रथम उनको जन्म साहित्यिक वातावरणमा भएको थियो किनकि उनका पिता तोयनाथ पाण्डेय संस्कृतका ठूला विद्वान् थिए । बाजे पुराण भनेर जीविका चलाउँथे । उनका पिता तोयनाथ पाण्डेय आफूले लेखेका कविताहरू पढेर घरमा सुनाउँथे । लेखहरू पढ्न दिन्थे । त्यही पिताको प्रभाव हरिप्रसाद पाण्डेयमा पनि परेको देखिन्छ । खासगरी हरिप्रसाद पाण्डेयको जीवनभित्र निम्न व्यक्तित्वहरू देखापर्दछन् ।

### ३.५ साहित्यकार व्यक्तित्व

साहित्यकार व्यक्तित्व भनेको साहित्यसँग सम्बन्ध राख्ने व्यक्तित्व हो । उनको साहित्यिक व्यक्तित्व महत्वपूर्ण व्यक्तित्व हो । उनको साहित्यिक क्षेत्रफलको अभिरुचि विद्यार्थी जीवनदेखि नै बढेको देखिन्छ । पाण्डेका पिता संस्कृतका विद्वान् थिए<sup>१४</sup> । उनी घरमा छोराछोरीलाई कविता लेखेर सुनाउँथे । उनै पिताको प्रभाव हरिप्रसादमा परेको देखिन्छ । उनले पिताको जीवनकालमा धेरै साहित्यको रचना गरेका भए पनि प्रकाशन भने गरेका थिएनन् । तोयनाथ पाण्डेय स्मृतिग्रन्थको सम्पादन तथा प्रकाशन २०५९ सालमा गरेपछि मात्र उनले आफ्ना लिखित कृतिलाई प्रकाशनमा त्याउने सौभाग्य प्राप्त गरे । उनको सबैभन्दा पहिलो प्रकाशित कृति (उपन्यास) कुमारीको सपना २०६० सालमा

प्रकाशित

भयो । यसै वर्षदेखि पाण्डेयले आफ्ना कृतिहरूलाई प्रत्येक वर्ष अटुटरूपमा प्रकाशन गर्दै आएका छन् । उनले उपन्यासको क्षेत्रमा आफ्नो कलम यात्रालाई सशक्त ढड्गले अघि बढाउन लागि परेका छन् । त्यसैगरी उनले एउटा कथासङ्ग्रह र एउटा कवितासङ्ग्रहसमेत प्रकाशन गरेका छन् । साथै पाण्डेयले ‘काठमाडौँका पोडे एक परिचय’ (विशेष अनुसन्धान म.सं.वि-२०५२) भन्ने अनुसन्धानात्मक कृतिसमेत प्रकाशित गरेका छन् । यो २०६५ सालमा म.सं.वि.ले प्रकाशनमा त्याएको हो ।

### ३.५.१ उपन्यासकार व्यक्तित्व

हरिप्रसाद पाण्डेयको साहित्यिक व्यक्तित्वका महत्वपूर्ण पक्षमध्ये विशेषरूपमा उपन्यासकार व्यक्तित्व देखिन आउँछ । उनको प्रथम प्रकाशित कृति पनि उपन्यास नै रहेको छ । जुन उनको मौलिक उपन्यास कुमारीको सपना-२०६० सालमा प्रकाशित भएको हो । उनले समाजमा भएका सत्यतथ्य घटनालाई उपन्यासको आधार बनाएर उपन्यास लेखेका छन् । उनको उपन्यास लेखनको लक्ष्य समाजको अन्वेषण गरी आदर्शतिर लाग्न प्रेरित गर्नु हो ।

आधुनिक नेपाली उपन्यास परम्परामा लैनसिंह वाङ्देलले मुलुकबाहिर उपन्यास (२००४) बाट सुरु गरेको सामाजिक यथार्थवादी धारमा रहेर पाण्डेयले आफ्नो मौलिक उपन्यास लेख्ने प्रयत्न गरेका छन् तर पनि ती उपन्यासहरूमा कतै आदर्शोन्मुख यथार्थवाद, कतै आलोचनात्मक यथार्थवादको भलक पाइन्छ । हालसम्मको अवधिमा पाण्डेयले ४ वटा उपन्यासहरूको प्रकाशन गरिसकेका छन् । ती सबै उपन्यासमा यथार्थवादको भलक भने देख्न सकिन्छ । उनले समाजमा देखापरेका तीतामीठा चरित्रहरूको प्रयोग गरी नराम्भ पक्षमा लाग्नेहरूलाई खबरदारी गर्ने काम गरेका छन् । उनको उपन्यासमा नारीपात्रलाई महत्वपूर्ण भूमिका प्रधान गरिएको देखिन्छ । उनले समाजमा नारीहरू हेपिएका, चेपिएका हुन्छन् भन्नेकुरालाई यथार्थरूपमा उपन्यासमा प्रकट गरेका छन् । साहित्यकार हरिप्रसाद पाण्डेयका उपन्यासका पात्रहरू प्रायजसो शिक्षित देखिन्छन् । उनले उपन्यासमा धेरै सन्दर्भलाई जोड्ने गरेको पाइन्छ । उनका उपन्यासमा मूलकथा पहिल्याउन निकै कठिनाई पर्दछ । साहित्यकार हरिप्रसाद पाण्डेयले ४ वटा उपन्यासहरूको प्रकाशन गरिसकेका छन् । ती निम्नानुसार रहेका छन् ।

- १) ‘कुमारीको सपना’ (२०६०)
- २) ‘आशाका रेखाहरू’ (२०६१)
- ३) ‘नदेखिएका पाइलाहरू’ (२०६३)
- ४) ‘मुटुभित्रका ढुक्ढुकीहरू’ (२०६५)

### ३.५.२ कथाकार व्यक्तित्व

नेपाली कथाको इतिहासमा आधुनिक कालको अधिस्थापन नै सामाजिक यथार्थवादबाट भएको हो । यसै धारामा आधारित रहेर कथाकार हरिप्रसाद पाण्डेयले आफ्ना कथाहरूको रचना गरेका छन् । उनले बाइसवटा कथाहरूको रचना गरेका छन् जुन अन्जान कथासङ्ग्रह रहेको छ । प्रस्तुत सङ्ग्रहमा पाण्डेयले आफ्नो जीवनमा देखेभोगेका घटनाहरूलाई तथा केही कल्पनालाई आधार मानेर कथाहरू लेखेका छन् । व्यक्तिगत जीवनको भोगाई, अनुभव, प्रेम, इतिहास, सुख-दुःख, नारीमनका अन्तर्वेदनालाई कथाकार पाण्डेयले कथाका माध्यमबाट व्यक्त गरेका छन् । उनका धेरै जसो कथाहरू यौन वासनालाई केन्द्रीय आधार मानेर रचिएका छन् । उनको अधिकांश कथाहरू मध्यमवर्गीय समाजका ग्रामीण परिवेशबाट आधुनिक सहरिया परिवेशमा प्रवेश गरेका र प्रवेश गर्न खोजेका पात्रहरूलाई आधार बनाइएको छ । यस सङ्ग्रहका अधिकांश पात्रहरूले सामाजिक यथार्थलाई नै आफ्नो विषयवस्तु बनाएका छन् ।

ती कथाले मनोवैज्ञानिक शैलीमा नारी समस्याको प्राधान्य देखाउनुको साथै समाजमा देखापर्ने विकृति तथा विसङ्गतिलाई पनि चित्रण गर्न पुगेका छन् । पाण्डेयले आफ्ना कथाहरूमा युवा-युवतीका स्वतन्त्रताको नाममा हुनेगरेको छाडापन तथा नाताका नाममा हुने गरेका बासनालाई उजागर गरेका छन् । त्यस्तै पुनर्विवाह, अनमेल विवाह, छोरी-बुहारीको भेदनीति, इमान्दार राष्ट्रसेवकको आर्थिक दयनीय अवस्था आदि समस्यालाई कथाकार पाण्डेयले कथाका माध्यमबाट यथार्थ रूपमा पस्किएका छन् ।

यसरी हरिप्रसाद पाण्डेय सामाजिक कथाकार हुन् । उनले समाजमा देखापरेको विकृति तथा विसङ्गतिको यथार्थ चित्रण गरी सुधारका लागि सन्देश पनि प्रस्तुत गरेका छन् । सरल तथा विषय सुहाउँदो भाषा, हृदयस्पर्शी संवादले ती कथाहरू सबैका लागि पठनीय तथा सम्प्रेषणीय रहेका छन् ।

### ३.५.३ कवि व्यक्तित्व

हरिप्रसाद पाण्डेयको कवि व्यक्तित्व पनि महत्वपूर्ण व्यक्तित्वका रूपमा रहेको छ । वास्तवमा उनको साहित्यकार व्यक्तित्वको सुरुवात नै कविताको रचनाबाट भएको हो । उनी विद्यार्थीकालदेखि नै कवितामा विशेष भुकाव राख्ये । उनलाई कविताको

रचना गर्न घरमा उचित वातावरण पनि मिलेको थियो । उनका बाबु तोयनाथ पाण्डेय संस्कृतका विद्वान थिए<sup>१५</sup> । उनी कविताहरू लेखेर घरमा पढेर सुनाउँथे । तिनै पिताको प्रभाव र प्रेरणा स्वरूप पाण्डेयको कवितायात्रा अगाडि बढेको देखिन्छ । २०२६ सालमा स्वतन्त्र राष्ट्रवादी विद्यार्थी मण्डलले गराएको कविता प्रतियोगितामा उनले पुरस्कारसमेत पाएका थिए । उनको अहिलेसम्ममा एउटै मात्र कवितासङ्ग्रह ‘सम्भना’ (२०६२ प्र.) प्रकाशित भएको छ । जसभित्र लामा-छोटा १५ वटा कविताहरू रहेका छन् । तिनका नामहरू यसप्रकार रहेका छन् :

सम्भना, भावना, प्रभात, दुःख, सन्देश, वेदना, पीडा, बाला, नेपाल, म, वन, मोह, विचार, बद्रीनाथ यात्रा, यात्रा ।

प्रस्तुत कविताहरूबाट पाण्डेयले आफ्नो कवि व्यक्तित्वको परिचय स्थापित गरेका

१५. पूववत् ।

|   |    |   |    |   |                      |
|---|----|---|----|---|----------------------|
| ` | -- | ० | ०० | ` | योग गरेका छन् भने    |
|   |    |   |    |   | रको प्रयोग गरेका छन् |

। उनका कविताहरूमा आधुनिक चेतनासँगसँगै हाम्रो परम्परागत मान्यताहरूको पनि प्रस्तुति भएको छ । कथा र उपन्यासमा जस्तै उनले कवितामा पनि नारी समस्या, समाजका कुरीति, विकृति, विसङ्गति, शोषण, अन्याय, अत्याचार, वाध्यता र विवशतालाई प्रस्तुत गरेका छन् । उनका कविताहरूमा पूर्वीय संस्कृतिप्रति मोह छ, भने आधुनिकताप्रति पनि त्यतिकै लगाव रहेको छ । कविताको उद्देश्य देशभक्ति, समाजसुधार, महिलाहरूको उजागर तथा हाम्रा परम्परागत मूल्यमान्यताहरूको संरक्षण गर्नु रहेको छ । साथै उनका कविताहरू भावउडानका दृष्टिले स्वच्छन्दतावादी र शिल्पका दृष्टिले परिष्कारवादी रहेका छन् । यसरी यिनै कविताका मध्यमबाट उनको कवि व्यक्तित्वको पहिचान पाउन सकिन्छ ।

#### ३.५.४ सम्पादक व्यक्तित्व

हरिप्रसाद पाण्डेय सम्पादक व्यक्तित्वका रूपमा पनि परिचित रहेका छन् । उनले तोयनाथ पाण्डेय स्मृति ग्रन्थ को सम्पादन गरेका छन् । तोयनाथ पाण्डेय हरिप्रसाद पाण्डेयका आपनै पिता थिए । उनी संस्कृतका मर्मज्ञ तथा ज्योतिषि पनि थिए

। उनै पिताका छारिएर रहेका कृतिहरूको सङ्कलन तथा सम्पादन गर्ने सौभाग्य हरिप्रसाद पाण्डेयले पाएका थिए । उनले २०५९ सालमा उक्त कृतिको प्रकाशनसमेत गरेका छन् जुन कति संस्कृत साहित्य तथा नेपाली साहित्यका लागि महत्वपूर्ण रहेको छ ।

### ३.५.५ अन्वेषक व्यक्तित्व

साहित्यकार हरिप्रसाद पाण्डेयले अनुसन्धानात्मक अध्ययन पनि गरेका छन् । उनले काठमाडौँका पोडे एक परिचय (विशेष अनुसन्धान-म.सं.वि. २०५२) भन्ने विषयमा अन्वेषण गरेका छन् । जुन कृतिलाई म.सं.वि.ले प्रकाशनमा ल्याएको छ । यो कृति २०६५ सालमा प्रकाशनमा आएको हो । यस कृतिमार्फत अन्वेषक हरिप्रसाद पाण्डेयले काठमाडौँका पोडेहरूको संस्कृति, रहनसहन, जीवनशैली, कथाव्यथा आदि कुराहरूलाई अनुसन्धान गरी व्यक्त गरेका छन् । त्यसैले पाण्डेयको अन्वेषक व्यक्तित्व पनि महत्वपूर्ण रहेको छ ।

### ३.६) साहित्येतर व्यक्तित्व

हरिप्रसाद पाण्डेयले साहित्यिक कार्यहरूको अपेक्षा साहित्येतर कार्यहरू पनि गरेका छन् । उनको हालसम्मको जीवनावधिलाई हेर्दा उनको जीवनचक्र विभिन्न परिवेशको माध्यमबाट गुज्रेको देखिन्छ । हरिप्रसाद पाण्डेयले सानै उमेरदेखि उचित शिक्षादीक्षा प्राप्त गरेर अनुभव बटुलेको देखिन्छ । उनले जीवन भोगाइका क्रममा आएका विभिन्न आरोह-अवरोहका क्षणका बीचमा जीवनलाई परिष्कार गर्दै लगेको देखिन्छ । उनका लेख रचनामा जीवन भोगाइका कटुयथार्थ र विभिन्न अनुभवहरू समेटिएका छन् । जीवनका चाप-प्रतिचाप, घात-प्रतिघात तथा अन्तर्वाह्य वातावरणबाट धार्मिक एवं सांस्कृतिक व्यक्तित्व, सामाजिक व्यक्तित्व तथा प्रशासनिक व्यक्तित्वको निर्माण भएको देखिन्छ ।

उचित शिक्षादीक्षा, आदर्श घरको पारिवारिक वातावरणले हरिप्रसादलाई धार्मिक कार्यक्रम र ईश्वरीय आस्थाप्रति ठूलो विश्वास जागेर आएको देखिन्छ । त्यसैगरी प्रशासनिक व्यक्तित्व निर्माणमा पिताको प्रेरणा मिलेको देखिन्छ भने सामाजिक व्यक्तित्वका लागि श्रीमतीको साथ तथा पिताको आशीर्वाद मिलेको पाइन्छ ।

### ३.६.१ धार्मिक एवम् सांस्कृतिक व्यक्तित्व

हरिप्रसाद पाण्डेय धार्मिक एवम् सांस्कृतिक चरित्र बोकेका व्यक्तित्व हुन् । उनको परिवार धार्मिक पृष्ठभूमिमा आधारित भएकाले उनले सानै उमेरदेखि परिवार नै उनको यस व्यक्तित्वको लागि प्रेरणाको स्रोत बनेको देखिन्छ । उनमा सानै उमेरदेखि पूजाआजा गर्ने र ईश्वरप्रति ठूलो आस्था रहेको पाइन्छ ।

हरिप्रसाद पाण्डेय हिन्दू धर्मअनुसार विभिन्न किसिमका पूजा गरिरहने ईश्वरप्रति सधैँ आस्थावान् सकारात्मक सोच भएका व्यक्ति हुन् । उनमा दुःखीको उपकार नै परम धर्म हो र परपीडा नै पाप हो भन्ने भावना रहेको छ । हरिप्रसाद पाण्डेय हिन्दू धर्मअनुसार परम्परा, धर्म तथा संस्कृतिको जगेन्द्रा गर्ने व्यक्ति हुन् । उनले यही परम्परामा रहेर स्वदेश तथा विदेशका विभिन्न तीर्थस्थलहरूको भ्रमणसमेत गरेका छन् । तिनै तीर्थस्थलको यात्रा गर्दा भएका तीतामीठा अनुभवहरूलाई बटुलेर उनले दुईवटा कविताहरू समेतरचना गरेका छन् जुन अत्यन्त प्रशंसनीय देखिन्छ । उनले ती कविताहरूका माध्यमबाट हाम्रा धर्म तथा संस्कृतिको पालना हुनपर्ने सन्देशसमेत व्यक्त गरेका छन् । साथै धर्मका नाममा हामी अन्धभक्त भने हुन नहुने कुरामा उनले उल्लेख गरेका छन् । त्यसैगरी पाण्डेयको अर्को एक प्रकाशित कृतिले काठमाडौँका पोडे जातिको संस्कृतिलाई भक्त्याएको पाइन्छ ।

हरिप्रसाद पाण्डेय धेरै वर्ष अगाडिदेखि नै धार्मिक कार्यहरूमा सहयोग गर्दै आएका

छन् । उनले धार्मिक मठमन्दिर निर्माणका लागि विभिन्न ठाउँमा तनमनधनले सहयोग गर्ने गरेका छन् । उनले बालुवा गा.वि.स. ज्ञाननिकुञ्ज आश्रम निर्माणमा उल्लेखनीय योगदान गरेका छन् । यसरी धार्मिक तथा सांस्कृतिक संरक्षणमा सदा सहयोग गर्न तत्पर पाण्डेयले आफ्नो धार्मिक व्यक्तित्वको निर्माण गरेका छन् ।

### ३.६.२ सामाजिक व्यक्तित्व

मानिस एउटा सामाजिक प्राणी हो । जीवन जिउने क्रममा सामाजिक प्राणीका हैसियतले उसले समाजबाट कतिपय कुराहरू ग्रहण गरेको हुन्छ भने विभिन्न माध्यम र

क्रियाकलापद्वारा समाजलाई यथासम्भव योगदान पुऱ्याई पनि गरिराखेको हुन्छ । यसरी समाजसँग सम्बन्धित भएर रहेको कुनै पनि कुरा सामाजिक व्यक्तित्व हो ।

हरिप्रसाद पाण्डेय समाज तथा सामाजिक सङ्घ संस्थामा संलग्न रहेको तथ्यहरूबाट उनको सामाजिक व्यक्तित्व स्पष्ट हुन्छ । उनले सामाजिक कार्यमा संलग्न रहेर समाज उन्तीका लागि विभिन्न सेवा गरेका छन् । २०४८ सालमा हरिप्रसाद पाण्डेयले बालाजुको बालुवामा घर बनाएका थिए । त्यतिबेला त्यस घरसम्म आउने राम्रो बाटो थिएन । उनी बालाजुमा बस्न आएपछि ‘टोल सुधार समिति’ को गठन गरे । त्यसपछि उनले उक्त समितिको सदस्य सचिवमा रहेर काम गर्दै गए । दिनरात नभनी बाटो बनाउने काममा खटिरहे । त्यसको फलस्वरूप आज बालाजु शान्तिनगर माछापोखरी मार्ग वरिपरि १५-१८ फुटको पिच बाटो बनेको छ । यसैगरी हरिप्रसाद पाण्डेय टोलमा गर्नुपर्ने विकास कार्यमा सदासर्वदा अग्रणी भएर लागिरहन्छन् । बाटोघाटो बनाउन होस्, मठ-मन्दिर बनाउन होस् तनमनधनले सहयोग गर्न उनी पछि पर्दैनन्<sup>१६</sup> । पाण्डेयले मठ-मन्दिर निर्माणका लागि आफ्नो शक्तिले भ्याएसम्म चन्दा दिँदै आएका छन् । कतिपय ठाउँमा उनले श्रमदान गरेर विकास कार्यमा टेवा पुऱ्याएका छन् । उनको सामाजिक अर्को उल्लेखनीय कार्य बालुवा गा.वि.स.मा अवस्थित ‘ज्ञाननिकुञ्ज’ आश्रम निर्माणमा सहयोग गरेका छन् । यसरी हरिप्रसाद पाण्डेय आफ्नो हैसियतले भ्याएसम्म तनमनधनले सामाजिक कार्यमा सहयोग गर्ने व्यक्ति हुन् । यसै आधारमा नै उनको सामाजिक व्यक्तित्वको निर्माण भएको देख्न सकिन्छ ।

२.६.३. राषाग्रनित्त लाङ्किल  
१६. शाश्वतायकबाट प्राप्त जानकारीनुसार ।

मा परिवारिक पृष्ठभूमिको महत्वपूर्ण भूमिका रहेको देखिन्छ । उनको परिवारमा बाजे पुराण आदि भनेर जीविका चलाउँथे भने पिता संस्कृतका विद्वान् थिए । साथै उनका पिता संस्कृत अध्ययन संस्थानका ६ वर्ष सहायक डीन भएर कुशलतापूर्वक प्रशासन चलाएका थिए । हरिप्रसाद पाण्डेयले पनि २०२९ सालदेखि प्रशासकीय सेवा सुरु गरी विभिन्न निकायमा कार्य गरेका छन् र २०३५ साल जेठ १५ गतेदेखि स्थायी सेवामा प्रवेश गरेका हुन् । हाल उनी नेपाल संस्कृत विश्वविद्यालयमा कार्यरत रहेका छन् । साथै उनी सहयोगी,

इमान्दार, कुशलतापूर्वक कार्यालय सञ्चालन गर्ने कार्यालय प्रमुखका रूपमा परिचित व्यक्तित्व रहेका छन् । देखेको कुरालाई नलुकाई जस्ताको तस्तै भन्ने प्रष्ट व्यवहारका कारण उनी कार्यालयमा कुशल कार्यालय सञ्चालक बनेका छन् । त्यसैले प्रशासनिक क्षेत्रमा राम्रो काम गर्ने व्यक्तिको रूपमा उनलाई चिन्न सकिन्छ ।

### ३.७ हरिप्रसाद पाण्डेयका जीवनी, व्यक्तित्व र कृतित्वका बीच अन्तरसम्बन्ध

हरिप्रसाद पाण्डेयको हालसम्मको जीवनयात्रालाई हेर्दा विभिन्न परिवेशबाट गुज्रेको देखिन्छ । उनले आफ्नो जीवन भोगाइमा अनुभव गरेका सरल-जटिल परिस्थिति, पढाइका क्रममा बटुलेका अनुभव, सामाजिक क्षेत्रमा गरेका कार्यहरू, जागिरका सिलसिलामा प्राप्त गरेका सीप, ज्ञान तथा पारिवारिक पृष्ठभूमिले उनको साहित्यिक व्यक्तित्वको निर्माण भएको छ । बाल्यकालमा पिताले सुनाएका कथा-कविताहरू एवम् निरन्तरको विभिन्न पुस्तकहरूको अध्ययन नै साहित्य लेखनका प्रेरक तत्व बनेका छन् । उनको जीवनशैलीले निर्माण गरेको व्यक्तित्व र अध्ययनबाट प्राप्त गरेको ज्ञानले साहित्यिक लेखनलाई ढोच्याएको छ । उनको साहित्यिक व्यक्तित्वमा उपन्यासकार, कथाकार, कवि तथा सम्पादक आदि विविधताहरू समेटिएका छन् । उनले गद्य तथा पद्य दुवै साहित्यिक रचनामा सामाजिक विसङ्गतिप्रति व्यङ्ग्य गर्दै समाज सुधारको सङ्केत दिएको पाइन्छ । साहित्यका विविध विधाका सर्जक पाण्डेयले गाउँदेखि सहरसम्मको सामाजिक जीवन भोगिसकेका छन् । उनका साहित्यिक रचनाहरूले मूलतः शहरीया र ग्रामीण जीवनको सामाजिक वस्तुस्थिति, सामाजिक विकृति विसङ्गतिप्रति तीखो रोष प्रकट गर्दछन् । उनले आफ्ना साहित्यिक रचनामा समानता, राष्ट्रप्रेम, प्रणाय, प्रकृतिचित्रण र नारीहरूप्रति सम्मान पोखेका छन् । साहित्य सिर्जनामा भावनाको सरलता, भाषाको सहज अभिव्यक्ति स्पष्ट शैलीमा रोचक ढङ्गले प्रस्तुत गरी आफ्नै छुट्टै वर्चस्व कायम गर्ने पाण्डेयको एक दशकको समयावधि साहित्य सिर्जनामै वितिसकेको छ । साहित्यिक पारिवारिक पृष्ठभूमि, अध्ययन अनुशीलनको निरन्तरता, एकपछि अर्को कार्यमा मिलेको सफलता, हौसला आदिले उनमा जोश र जाँगर बढिरहेको देखिन्छ । जीवनयापनमा पाइरहेको सरलता तथा घरायसी सङ्कटबाट मुक्त रहन पाएका पाण्डेय हाल पनि सिर्जन क्षेत्रमा लागिरहेका हुनाले नेपाली साहित्यले अझै

उनबाट धेरै कुरा प्राप्त गर्ने सम्भावना रहेको देखिन्छ । देखेको कुरा नलुकाई स्पष्ट रूपमा भन्ने व्यक्तिगत स्वभाव उनमा भएकाले साहित्यमा पनि त्यस्तै प्रभाव रहेको पाइन्छ । इमान्दारीपूर्वक कुशल कार्य गर्ने कर्मचारीको हैसियतले उनको प्रशासनिक व्यक्तित्वको निर्माण भएको छ । चौबीसै घण्टा अरूलाई सहयोग गर्ने बानीले गर्दा उनलाई सामाजिक व्यक्तित्व प्राप्त छ । त्यस्तै हिन्दू धर्ममा रहेर पूजाआजा गर्ने, ब्रततीर्थ जाने आदि परम्पराको पालनाबाट उनलाई धार्मिक व्यक्तित्वको श्रेय प्राप्त छ । यही उनको सरल जीवन र कुशल व्यक्तित्वले साहित्य सिर्जनामा सघाउ पुऱ्याएको देखिन्छ ।

### ३.८ निष्कर्ष

हरिप्रसाद पाण्डेयको ५८ वर्षे जीवनयात्रामा उनको व्यक्तित्व साहित्यिक, सामाजिक, सम्पादक, अन्वेषक, धार्मिक, प्रशासनिक, आदि विविध किसिमले निर्माण भएको देखिन्छ । पाण्डेयले आफ्नो व्यक्तित्व निर्माणमा परिवारिक वातावरणको उचित अवसर पाएका छन् । पिता तोयनाथ पाण्डेयको प्रभाव र प्रेरणा तथा आफ्नो जीवनमा देखे भोगेका तीतामीठा अनुभवबाट साहित्यिक व्यक्तित्वको निर्माण गरेका छन् । असल परिवारको कुशल छोराको हैसियतले उनी सामाजिक व्यक्तित्व बन्न सफल भएका छन् । इमान्दारीपूर्वक काम गर्ने, सहयोगी तथा खरो मिजासका कारण उनी प्रशासनिक क्षेत्रमा पनि त्यति नै प्रशंसनीय देखिन्छन् । आफ्नो धर्म तथा संस्कृतिलाई सही ढंगले संरक्षण गर्नुपर्छ तथा परम्परालाई विसर्नु हुँदैन भन्ने देशभक्तिपूर्ण भावना भएकाले उनको धार्मिक व्यक्तित्व पनि त्यतिकै उच्च रहेको छ ।

नेपाली साहित्यका उपन्यास, कथा तथा कविता विधामा कलम चलाएर पाण्डेयले आफ्नो साहित्यकार व्यक्तित्वको निर्माण गरेका छन् । यसरी हेर्दा हरिप्रसाद पाण्डेयको व्यक्तित्वमा मुख्यतया : दुईवटा पाटाहरू देखा पर्दछन् । उनको साहित्यिक व्यक्तित्वले समाजमा रहेका सामाजिक विकृतिलाई औल्याएर आदर्शको बाटोतिर जान सङ्केत गरेको पाइन्छ भने उनको कुशल प्रशासनिक, सामाजिक व्यक्तित्वले समाजलाई उज्यालो दिशातर्फ फर्काउन सङ्केत गरेको देखिन्छ ।

## परिच्छेद - ४

### साहित्यकार हरिप्रसाद पाण्डेयका साहित्यिक कृतिहरूको अध्ययन

#### ४.१ हरिप्रसाद पाण्डेयका साहित्यिक यात्रा

हरिप्रसाद पाण्डेयको जन्म काठमाडौंको ठमेलमा आफ्नै निवासमा भएको हो । उनको बाल्यकाल मातापिताको स्नेह, संरक्षण र ममताको छाहारीमा हुँकेको देखिन्छ । उनका आफ्नै पिता तोयनाथ पाण्डेय संस्कृत साहित्यका विद्वान् थिए । उनले धेरै साहित्यको सिर्जना गरेका थिए । उनी आफ्ना कथा कविताहरू घरमा पढेर सुनाउँथे । त्यही प्रभाव र प्रेरणाले हरिप्रसाद पाण्डेयले पनि साहित्य सिर्जना गरेका छन् । पाण्डेय विद्यार्थी जीवनदेखि नै साहित्यमा भुकाव राख्ये । एस. एल. सी. पछि फुर्सदको समयमा उनले धेरै कथा कविताहरूको सिर्जना गरेका थिए । यसरी विद्यार्थी जीवनदेखि नै साहित्यिक गतिविधिमा सक्रियरूपले सहभागी हुँदै आएका पाण्डेय उनको दीर्घ जीवनयात्रामा विभिन्न साहित्यिक कृतिहरूको रचना गर्दै आएका छन् । नेपाली साहित्यका फाँटमा औपचारिकरूपले भने उनी अलिपछि आएर मात्र देखापरेका छन् ।

हरिप्रसाद पाण्डेयको साहित्य लेखनयात्रा विद्यार्थी जीवनबाट नै सुरु भएको हो । त्यसबेला सामान्य साहित्यिक रचनाहरूबाट नै उनमा साहित्य सिर्जनाको पूर्वाभ्यास भएको देखिन्छ । कृतिहरूको रचना गर्ने काम धेरै अगाडिदेखि भए पनि प्रकाशन यात्रा भने २०५९ सालबाट सुरु भएको देखिन्छ । तोयनाथ पाण्डेय स्मृति ग्रन्थ (२०५९ प्र.) उनको सम्पादित कृति हो । यही सम्पादित कृतिबाट नै उनको प्रकाशन यात्रा अगाडि बढेको छ । उनले २०६० सालमा आफ्नो मौलिक उपन्यास कुमारीको सपना प्रकाशन गराएका छन् जुन कृतिलाई पाण्डेयको औपचारिक साहित्य सिर्जनाको सुरुवात भनेर चिन्न सकिन्छ । यसपछि उनले प्रत्येक वर्ष एउटाएउटा कृतिहरूको प्रकाशन गर्दै आएका छन् । हालसम्ममा उनले ४ वटा उपन्यासहरू, एउटा कथासङ्ग्रह, एउटा कवितासङ्ग्रहको प्रकाशन गरिसकेका छन् ।

यसरी हरिप्रसाद पाण्डेयको लेखनयात्रा विद्यार्थी जीवनबाट नै सुरु भए पनि औपचारिक साहित्यिकयात्रा भने २०६० सालबाट मात्र सुरु भएको हो । उनी अहिलसम्मको साहित्यिक जीवनयात्रामा अनवरत लागि परेका छन् । उनले साहित्यका विविध विधामध्ये उपन्यास क्षेत्रलाई उर्वर बनाएका छन् ।

साहित्यकारका साहित्यिक यात्रामा फरक मोडहरू देखिनमा विभिन्न कारणहरू हुन सक्छन् । यसमा साहित्यकारको समाज, वरिपरिको वातावरण, राजनैतिक वातावरण, जीवन भोगाइको महत्त्वपूर्ण भूमिका रहन्छ । साहित्यिक यात्रामा प्रायः सबै साहित्यकारका सुरुका र पछिका साहित्यिक दृष्टिकोणमा पनि परिवर्तन आयो भने उनका साहित्यिक कृतिहरूको विश्लेषण गर्न चरण विभाजनको आवश्यकता पर्दछ तर हरिप्रसाद पाण्डेयको औपचारिक साहित्यिक लेखनयात्रा वि.सं. २०६० बाट सुरु भएको र हालसम्म निरन्तर रहेको पाइन्छ । यो जम्मा आधादशक लामो साहित्यिक लेखन यात्रामा भिन्नभिन्न साहित्यिक मोडलाई सिर्जना र प्रवृत्तिमै परिवर्तन गर्नुपर्ने कारणहरू आएको पाइदैन । हुन त चरणविभाजन गर्न परिणाम, तिनको प्रकाशन समय, गुणस्तर परिवर्तन, साहित्यिक धारागत प्रवृत्तिको अन्तर विकास आदिको आधारमा समेत चरण विभाजन गर्न सकिन्छ, तर यी सबै कुराले हरिप्रसादको साहित्यिक लेखनमा भिन्नता त्याएको पाइदैन । उनले परिणामका दृष्टिले सामान्यस्तरका ४ वटा यथार्थवादी उपन्यास, एउटा कथासङ्ग्रह र एउटा कवितासङ्ग्रह लेखेको पाइन्छ । गुणस्तरका दृष्टिले पनि सुरुमा सरल र पछि उच्चस्तरका साहित्यिक कृति नलेखी सुरुदेखि नै समाजमा भएगरेका घटनाहरूलाई लिएर ती घटनाहरूबाट कसरी बच्ने र समाजसुधार गर्दै जाने भन्ने मुख्य लक्ष्य लिएर सुरु भई त्यही प्रवृत्तिमा आफ्नो लेखनलाई सीमित राखेको हुँदा उनका सुरुका र हालका साहित्यिक दृष्टिकोणमा परिवर्तन नआएको हुँदा चरण विभाजन गरिएको छैन ।

#### ४.२ हरिप्रसाद पाण्डेयको विधागत साहित्यिक यात्रा

हरिप्रसाद पाण्डेयको विधागत साहित्यिकयात्रा २०६० बाट सुरु भएको हो । उनको प्रथम प्रकाशित कृति कुमारीको सपना मौलिक उपन्यास रहेको छ । प्रस्तुत उपन्यास पाण्डेयको सामाजिक उपन्यास हो । त्यसपछि पाण्डेयले अरू तीनवटा मौलिक उपन्यास प्रकाशन गराइसकेका छन् । उनका उपन्यासमा प्रायः गरेर शिक्षित पात्रहरूको प्रयोग गरिएको छ । साथै नारीहरूका समस्यालाई विशेष रूपमा उल्लेख गरी तिनको समाधान पनि औल्याइएको पाइन्छ । हरिप्रसाद पाण्डेयले नेपाली साहित्यको आख्यान र कविता विधामा सशक्त ढङ्गले कलम चलाएका छन् भने उपन्यासको क्षेत्रमा

उत्कृष्टता प्राप्त गरेका छन् । उनले एउटा कथासङ्ग्रह तथा एउटा कवितासङ्ग्रहको पनि रचना गरेका छन् । यथार्थवादी धारामा रहेर लेखिएका उनका कथाहरू छोटा तथा मीठा रहेका छन् । कविताहरू पनि छोटा तथा लामा दुबै खालका छन् । उनले ती कविताहरूका माध्यमबाट समाजमा देखापरेका विकृतिप्रति लक्ष्य गरेका छन् । साथै ती कतिपय कविताहरूमा देशभक्तिपूर्ण भावना रहेको पाइन्छ ।

हरिप्रसाद पाण्डेयको साहित्यिक यात्रालाई हेर्दा उपन्यास, कविता तथा कथा विधामा कलम चलाएको देखिन्छ । यी सबै विधामा कलम चलाए तापनि उनको उपन्यासको क्षेत्र भने केही फराकिलो भएको देखिन्छ । उनले लेखेको रचनामा उनीभित्रको प्रकृतिप्रेम, युगचेतना, व्यद्ययभाव, देशप्रेम, संस्कृति र साहित्यप्रतिको अनुराग प्रकट गरेको पाइन्छ । यसरी उपन्यास विधाबाट अगाडि बढेको औपचारिक लेखनयात्राले विविध साहित्यिक कृति एवम् विभिन्न विधालाई समेटेको पाइन्छ । उनले साहित्यका धेरै विधामा कलम चलाए पनि बढी साहित्यिक प्रतिष्ठा दिलाउने विधा आख्यान बनेको छ ।

उनका केही मौलिक कृतिहरू प्रकाशित भइसकेका छन् भने केही प्रकाशोन्मुख रहेका छन् । यस अध्यायमा मौलिक प्रकाशित, अप्रकाशित कृतिहरूलाई सूचिकृत गर्दै प्राप्त मौलिक पद्य र गद्य कृतिको अध्ययन गर्ने प्रयास गरिएको छ । उनका हालसम्म प्रकाशित तथा प्रकाशोन्मुख साहित्यिक कृतिहरू निम्नानुसार छन् ।

- १) तोयनाथ पाण्डेय ‘स्मृति ग्रन्थ’ २०५९ सम्पादित कृति
- २) ‘कुमारीको सपना’ (उ. २०६० प्र.)
- ३) ‘आशाका रेखाहरू’ (उ. २०६१ प्र.)
- ४) ‘सम्झना’ कवितासङ्ग्रह (२०६२ प्र.)
- ५) ‘नदेखिएका पाइलाहरू’ (उ. २०६३ प्र.)
- ६) अन्जान कथासङ्ग्रह (२०६४ प्र.)
- ७) ‘मुटुभित्रका ढुक्कुकीहरू’ (उ. २०६५ प्र.)
- ८) ‘काठमाडौंको पोडे एक परिचय’ (विशेष अनुसन्धान म.सं.वि.-२०५२, २०६५ प्र.)
- ९) ‘प्रेम पिपासु’ (कथासङ्ग्रह अ.)

- १०) ‘दैवको लीला’ (कथासङ्ग्रह अ.)
- ११) ‘माया’ (खण्डकाव्य अ.)
- १२) ‘मुटुका धड्कनहरू’ (उपन्यास अ.)
- १३) ‘डाँडामाथिको घाम’ (उपन्यास अ.)

#### ४.३ उपन्यासको सैद्धान्तिक स्वरूप

नेपाली साहित्यमा प्रचलित ‘उपन्यास’ तत्सम शब्द हो । उपन्यास शब्द ‘अस’ धातुमा ‘उप’ र ‘नि’ उपसर्ग लागेर त्यसमा ‘घञ’ प्रत्ययसमेत जोडिएर व्युत्पत्ति भएको हो । यसको व्युत्पत्तिमूलक अर्थ कुनै पनि वस्तुलाई कसैको नजिक राख्नु भन्ने हुन्छ । ‘उपन्यास’ शब्द नेपालीको ललित गद्यकाव्यको आख्यानात्मक प्रविधालाई सङ्केत गर्नमा प्रवृत्त छ । यसको इतिहास साहित्यका अन्य विधाहरू जति पुरानो नभएपनि विश्व साहित्यमा मात्र नभएर नेपाली साहित्यमा पनि स्थापित लोकप्रिय विधाको रूपमा गनिएको छ । संस्कृत साहित्यमा ‘उपन्यास’ शब्दको प्रयोजनपरक अर्थ कुशलतापूर्वक विशेष अर्थ प्रकट गर्ने प्रक्रिया विशेष भनी लगाइएको छ । जीवन जगत्का सत्य पक्षलाई समेटेर आफै नजिकमा विन्यास गरिनु अर्थात् प्रस्तुत गर्नु नै उपन्यास हो । व्यवहारिक रूपमा भन्नुपर्दा ‘उपन्यास’ जीवनजगत्को साङ्गोपाङ्गो प्रस्तुति हो भन्ने कुरा सिद्ध हुन्छ । उपन्यास पाश्चात्य साहित्यिक चिन्तनको उपज भएर पनि आधुनिक नेपाली साहित्यमा आफ्नो छुटै पहिचान बनाउन सफल साहित्यिक विधा हो । यसको विधागत सम्बन्ध अड्गेजी साहित्यमा प्रचलित शब्द नोबेलसँग नजिक रहेको छ । अड्गेजी साहित्यमा प्रचलित नोबेल शब्द ल्याटिन भाषाको नोवोस अर्थात् नोबोलसबाट विकास भएको हो । आज उपन्यास शब्द यसै ल्याटिन भाषाबाट विकसित हुँदै फ्रान्समा पुगेको नोबेल्ला शब्द उपन्यासका अर्थमा प्रयोग हुन पुगेको छ<sup>१७</sup> । आजभोलि नोबेल शब्दको प्राविधिक अर्थ उपन्यास बनेको छ । यही अड्गेजी साहित्यको नोबेल शब्दको समानर्थी शब्दको रूपमा पूर्वीय आख्यान नेपाली शब्द उपन्यास प्रचलनमा आएको छ । उपन्यास गद्यात्मक आख्यानको जीवनसापेक्ष प्रस्तुति हो र नोबेल शब्दको आधुनिक उत्पत्ति हो भन्ने कुराको बोध गराउँछ<sup>१८</sup> । शब्दगत अर्थ, विधागत स्वरूप, संरचना र

ढाँचाका दृष्टिले हेर्दा पनि नोबेल र उपन्यास शब्द एक अर्काका समानार्थी बनेका छन्।

रचनाका आधारमा उपन्यास पाश्चात्य साहित्यको देन हो । पूर्वीयजगत्मा आख्यान भनिने कथा र उपन्यासलाई पाश्चात्य समीक्षाशास्त्रमा फिक्सन भनिन्थ्यो । पछि गएर पाश्चात्य जगत्मा त्यही फिक्सन शब्दले उपन्यासको स्थान ओगट्दै पुगेको हो । विविध शब्दका फरकफरक अर्थानुसार आख्यानको परम्पराभित्र उपन्यासलाई १७. प्रा. राजेन्द्र सुवेदी, नेपाली उपन्यास, परम्परा र प्रवृत्ति, दो.स., (सा.प २०६४) पृ. ५

१८. इन्द्रबहादुर राई, नेपाली उपन्यासका आधारहरू, (सा.प्र. २०५२, पृ. ४०)

प्रचलित साहित्यिक विधा उपन्यास आधुनिक नेपाली साहित्यमा पनि ऐउटा लोकप्रिय विधाका रूपमा स्थापित हुन पुग्यो । उपन्यासलाई चिनाउने क्रममा विभिन्न विद्वान्‌हरूले विभिन्न तरिकाले परिभाषा प्रस्तुत गरेका छन् ।

मानवजीवनसँग सम्बद्ध भएर आउने पक्षलाई जतिसम्म समेट्दै सकिन्छ त्यतिसम्मको अनुवीक्षण गराउने रचनालाई उपन्यास भनिन्छ । उपन्यास खासगरी मानवीय आवेगद्वारा रचना गरिने विधा भएको हुनाले यसको आकार वृहत् वा वृहत्तरजस्तो पनि हुनसक्छ । “उपन्यास यथार्थमा भावनाको भाषा जीवनको उद्गार हो । साँचो उपन्यासमा जीवनको छाया नै प्रस्तुत भएको हुन्छ । औ साँचो उपन्यास जीवनको मार्गदर्शक बन्दछ”<sup>१९</sup> । उपन्यासमा जीवनजगत्का यथार्थ प्रस्तुतिहरूको प्रतिपादन गरिएको हुन्छ । यसर्थ जीवनको आकृति, परिभाषा र आयाम जति व्यापक र फराकिलो हुन्छ, उपन्यासको पनि त्यति नै । तसर्थ आख्यानको एक प्रमुख अङ्गका रूपमा देखापरेको साहित्यिक उपविधा उपन्यास मानव जीवनको प्रतिविम्ब प्रस्तुत गर्ने कला हो ।

यसप्रकार उपन्यास पाश्चात्य साहित्यबाट विकसित आख्यान प्रविधा हो । युरोपबाट विकसित भएको आधुनिक उपन्यास जापानमा जन्मिई, वेलायतमा हुर्किई संसारभरि प्रचलित हुनपुग्यो । यसर्थ उपन्यास मानवजीवनको यथार्थ प्रस्तुति हो, जसमा वस्तुलाई शिल्पलाई शैलीले संयोजन गरिदिएको हुन्छ । त्यसैले उपन्यासलाई जीवनको प्रतिछाया मान्न सकिन्छ ।

## उपन्यासका तत्त्वहरू

उपन्यास रचनाका क्रममा अनेकौं स्वरूप र विविध विषयहरू रहन्छन् । उपन्यास रचनाका आधारभूत तत्त्वका बारेमा विभिन्न विद्वान्हरूले विभिन्न मत प्रस्तुत गरेका छन् । यस्ता तत्त्वहरूको घटिबढी हुनु नहुनु जस्ता असमानताभित्रै केही समान वस्तुको पनि अपेक्षा गरिएको हुन्छ । देख्दा विश्रृद्धखल लाग्ने अनियमिततामा पनि यस्तो एक संयोजन हुन्छ जसको पूर्णतामा जीवनको सम्बद्ध चित्र वा कुनै प्रतिकृति अवधारित हुन्छ<sup>२०</sup> । कृष्णचन्द्रसिंह प्रधानले उपन्यासको संरचनाका आधारभूत तत्त्वका रूपमा कथानक,<sup>१९.</sup> इन्द्रबहादुर राई, नेपाली उपन्यासका आधारहरू, (सा. प्र. २०५२, पृ. ४०) ।  
<sup>२०.</sup> कृष्णचन्द्रसिंह प्रधान, नेपाली उपन्यास र उपन्यासकार, काठमाडौं (सा. प्र.: २०३७) पृ. ७ ।

ग छन्

। यस्तै ऋषेराज बरालले उपन्यास संरचनाका तत्त्वका रूपमा कथानक चारेत्र, विचार, दृष्टिविन्दु, भाषाशैली र परिवेशलाई प्रस्तुत गरेका छन् । यस्तै प्रा. राजेन्द्र सुवेदीले वस्तु, चरित्र, कथोपकथन, द्वन्द्व, परिवेश भनेका छन्<sup>२१</sup> । यसैगरी कृष्णहरि बराल र नेत्र एटमले कथानक, चरित्र र चरित्रचित्रण, पर्यावरण, दृष्टिविन्दु, सारवस्तु, भाषा, प्रतीक, विम्ब, गति र लयलाई उपन्यास तत्त्वहरूका रूपमा उल्लेख गरेका छन् । यी विभिन्न विद्वान्हरूका मतलाई समग्रमा समेट्दा मूल तत्त्व र सहायक तत्त्वका रूपमा निम्नानुसार हेर्न सकिन्छ । मूल तत्त्वमा कथानक, चरित्रचित्रण, परिवेश, भाषाशैली, उद्देश्य गरी पाँच वटा र सहायक तत्त्वमा कौतुहल, द्वन्द्व, कथोपकथन र दृष्टिविन्दुलाई लिन सकिन्छ । यिनै उल्लेखित मुख्य तत्त्वहरूलाई यस प्रकारले चित्रण गर्न सकिन्छ ।

### कथानक

कथानक उपन्यासनिर्माण गर्नका लागि नभई नहुने महत्त्वपूर्ण तत्त्व हो । यसको निर्माण जीवनले आत्मसात् गरिरहेका वस्तु र घटनाहरूलाई जोरजाम गर्ने प्रक्रियाबाट हुन्छ<sup>२२</sup> । उपन्यासमा घटित घटनाहरूको योजनाबद्ध ढाँचा नै कथानक हो । कथानकमा आउने घटनाहरू कार्यकारण सम्बन्धद्वारा कसिएका हुन्छन् । कथानकमा विचार, बुद्धि, कल्पना आदि कुराहरू समाविष्ट गरिएका हुन्छन् । इतिहास, यथार्थमूलक अनुभव, मिथक रागात्मक सौन्दर्य, स्वैरकल्पनालाई कथानकको स्रोतको रूपमा लिन सकिन्छ ।

सामान्यतया कथावस्तुको विकास आदि, मध्य र अन्त्यको ढाँचामा हुन्छ तर आधुनिक उपन्यासमा कथावस्तुको ढाँचा वृत्ताकारीय पनि हुनसक्छ । कथानकको आङ्गिक विकास आरम्भ, सङ्घर्षविकास, चरम, सङ्घर्षहास र उपसंहारका रूपमा रहेको हुन्छ । कथानकको प्रकार मुख्य र सहायक, सुगठित र अव्यवस्थित, सरल र संयुक्त गरी धेरै खालका हुन्छन् । कथानकका आधारमा उपन्यास साहसिक, नाटकीय, चरित्रप्रधान र घटनाप्रधान गरी चार किसिमको हुन्छ । प्रारम्भकालीन उपन्यासमा घटना तथा कथावस्तुलाई विशेष जोड दिइन्थ्यो । समयको बदलिंदो चिन्तनसँगै आधुनिक उपन्यासमा कथावस्तु तथा

---

२१. कृष्णचन्द्रसिंह प्रधान, नेपाली उपन्यास र उपन्यासकार, काठमाडौं (सा.प्र. २०३६, पृ. ७)  
 २२. राजेन्द्र सुवेदी, नेपाली उपन्यासः परम्परा र प्रवृत्ति, ने.रा.पृ. ५०

आधुनिक  
उपन्यासमा

कथावस्तुको आवश्यकता छैन भन्ने होइन, बरू यसको आवश्यकता स्पष्ट रूपमा परिलक्षित भएको देखिन्छ ।

### चरित्रचित्रण

“चरित्रचित्रण उपन्यासको अर्को महत्त्वपूर्ण तत्त्व हो । उपन्यासभित्र कुनै विशेषता बुझाउन व्यवस्थितरूपले प्रयोग गरिने मानव वा मानवेतर प्राणीलाई पात्र वा चरित्र भनिन्छ<sup>२३</sup> ।” प्राचीन तथा मध्यकालीन आख्यान परम्परामा अलौकिक तथा मानवेतर पात्रहरूको प्रयोग भए पनि आधुनिक उपन्यासमा भने मानवपात्रहरू मात्र उपन्यासको पात्र बनाइएको पाइन्छ । “उपन्यासको आयतनभित्र सिङ्गो मानव सभ्यता चरित्रचित्रणकै आधारमा परिभाषित भएको हुन्छ<sup>२४</sup> ।” उपन्यासमा कथानकलाई अगाडि बढाउदै लैजाने काम चरित्रबाटै भएको हुन्छ । प्रत्येक चरित्र अर्को चरित्रभन्दा कुन अर्थमा फरक छ, उसका चारित्रिक विशेषताहरू केके हुन भन्ने कुरा चरित्रको वर्गीकरणद्वारा स्पष्ट पार्न सकिन्छ । उपन्यासमा विभिन्न आधारमा पात्रहरूको वर्गीकरण गरिएको हुन्छ ।

१) कार्यका आधारमा :

प्रमुख, सहायक र गौण

२) प्रवृत्तिका आधारमा :

अनुकूल र प्रतिकूल

३) लिङ्गाका आधारमा :

## पुरुष र स्त्रीलिङ्ग

- ४) स्वभावका आधारमा :  
गतिशील र गतिहीन
- ५) जीवन चेतनाका आधारमा :  
वर्गीय र व्यक्तिगत
- ६) आवद्धताका आधारमा :  
बद्ध र मुक्त
- ७) आसन्नताका आधारमा :  
मञ्चीय र नेपथ्यीय

२३. कृष्णहरि बराल र नेत्र एटम, उपन्यास सिद्धान्त र नेपाली उपन्यास, प्र. सं., (सा. प्र. २०५६), पृ. २९। बाट अध्ययन  
२४. प्रा. राजेन्द्र सुवेदी, नेपाली उपन्यास परम्परा र प्रवृत्ति, (दो. सं. (सा.प्र., २०६४), पृ. २३।

त्र पूरै युग र

परिवेशको संवाहक भएर उपस्थित भएको हुन्छ ।

### परिवेश

परिवेश उपन्यासको अर्को महत्त्वपूर्ण तत्त्व हो । उपन्यासमा कुनै कार्य हुनका लागि उपयुक्त मानिएको स्थल वा कार्यपीठिका नै परिवेश हो । पात्रहरूको क्रियाकलाप गर्ने वा घटनाहरू घट्ने स्थान, समय र पात्रमा पार्ने मानसिक प्रभावलाई पर्यावरण भनिन्छ । उपन्यासमा देशकालको तात्पर्य वातावरणको कुनै सीमा हो । तसर्थ उपन्यासलाई प्रभावशील र तीव्र बनाउनमा परिवेशको पनि भूमिका रहेको हुन्छ । परिवेश समाज, संस्कार र सभ्यता कार्यपीठिका र पात्रका निकट नेपथ्यमा निहित हुन्छ । परिवेशको ढाँचाकाँचा र रङ्गरोगन स्थानीय किसिमको हुन्छ ।

उपन्यासमा देश भन्नाले औपन्यासिक घटनाहरू घटित भएका स्थानलाई बुझिन्छ । त्यस्तै काल भन्नाले ती घटनाहरू घटित भएको समयलाई बुझिन्छ भने वातावरण भन्नाले तत्कालीन समयमा भएका धर्म, संस्कृति, रीतिरिवाज, परम्परा, आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक अवस्था आदिको चित्रणको साथै तिनले पाठकमा पार्ने प्रभावलाई समेत बुझाउँछ ।

## भाषाशैली

कुनै पनि साहित्यलाई अभिव्यक्त गर्नका लागि भाषा आवश्यक पर्दछ । भाषाले नै उपन्यासका सबै तत्त्वहरूलाई एकिकृत गर्दछ । भाषाका माध्यमले गरिने अभिव्यक्तिको निजी तरिका नै शैली हो । आवश्यकताअनुसार उपन्यासमा कथ्य र लेख्य, औपचारिक र अनौपचारिक भाषाको प्रयोग गरिन्छ । “उपन्यासकारको विभिन्न व्यक्तित्व भएजस्तै उपन्यासका पनि भिन्नभिन्न शैली रहेका हुन्छन् । जस्तै वर्णनात्मक, विश्लेषणात्मक, आलोचनात्मक, संस्मरणात्मक आदि <sup>२५</sup> ।” भाषाशैली सरल, स्वाभाविक र रोचक भएमात्रै उपन्यास पढ्दा आनन्द आउँछ । त्यसैले उपन्यासको भाषा सरल, स्वाभाविक तथा सम्प्रेष्य हुनुपर्दछ । भाषाशैली मीठो भएमात्र उपन्यास पढ्दा पनि आनन्द आउँछ । त्यसैले उपन्यासको महत्त्वपूर्ण तत्त्वका रूपमा भाषाशैलीलाई पनि लिने गरिन्छ ।

२५. कृष्णचन्द्रसिंह प्रधान, नेपाली उपन्यास र उपन्यासकार, ते.सं., (सा.प्र., २०५२) पृ. ९ ।

। वना । उद्देश्य कुन पान साहित्यका इनमाणि नभएजस्त उपन्यासको पनि हुँदैन । उपन्यास मानव जीवनको यथार्थ प्रस्तुति भएका हुनाले यसको रचना कुनै न कुनै प्रयोजनका लागि गरिन्छ । कुनैकुनै उपन्यासमा उद्देश्यलाई सिधै व्यक्त गरिएको हुन्छ भने कुनैमा समग्रमा व्यक्त गरिएको हुन्छ । उपन्यासमा उद्देश्यलाई सिधै अभिव्यक्त गर्दा साहित्यिक मूल्यमा कमी आउँछ तथा छरिएर रहेका घटनाबाट समग्र उद्देश्यको पहिचान हुँदा उपन्यासको साहित्यिक मूल्य बढ्छ । युगीन र विश्व परिवेशका व्यापक मूल्यहरू, पारदर्शी र जीवनमुखी दृष्टिकोणहरू उपन्यास सिर्जनाको क्षमता उपन्यास स्रष्टाको उद्देश्य बनेर पात्रका आचरणमा प्रक्षेपित भएका हुन्छन् <sup>२६</sup> । त्यसैले आधुनिक उपन्यासको सही उद्देश्य पाठकलाई उचित मनोरञ्जन दिनु वा साथै समाजलाई चेतनशील बनाएर परिवर्तनको बाटोमा ढोयाउनु हो । यसको अभावमा उपन्यासको सृजना अर्थहीन रहन्छ ।

## सहायक तत्त्वहरू

माथि उल्लेखित तत्त्वहरूका साथै उपन्यासमा सहायक तत्त्वहरू पनि रहन्छन् । दृष्टिविन्दु कथयिताले कथावाचनका लागि बस्न रोजेको ठाउँ हो जसबाट कसले कथा भनेको हो र कसरी कथा भनिरहेको छ भन्ने कुरा बुझिन्छ । उपन्यासलाई अगाडि

बढाउन पात्र पात्रका बीचको द्वन्द्वले महत्वपूर्ण भूमिका खेलको हुन्छ । त्यस्तै कौतुहलले पाठकलाई उपन्यास पढनका लागि जाँगर र उत्साह बढाउँछ । चरित्रचित्रणले उपन्यासलाई सुरुदेखि अन्त्यसम्म सक्रिय तुल्याउँछ । दृष्टिविन्दु आन्तरिक र बाह्य गरी दुई किसिमको हुन्छ, जुन उपन्यासमा कथयिताले बस्न चाहेको ठाउँ हो । समग्रमा उपन्यासलाई पूर्ण र सफल बनाउनमा यी उल्लेखित तत्त्वहरूको पनि महत्वपूर्ण भूमिका रहेको हुन्छ ।

यिनै समग्र औपन्यासिक तत्त्वहरूका आधारमा आधारित भएर हरिप्रसाद पाण्डेयका उपन्यासहरूको अध्ययन गर्ने प्रयास गरिएको छ ।

२६. प्रा. राजेन्द्र सुवेदी, नेपाली उपन्यास परम्मरा र प्रवृत्ति, (दो. सं. (सा.प्र., २०६४), पृ. २६ ।

## ४.४.१ कुमारीको सपना उपन्यासको विश्लेषण

### परिचय

उपन्यासकार हरिप्रसाद पाण्डेयद्वारा रचित कुमारीको सपना उनको प्रथम प्रकाशित मौलिक उपन्यास हो । यो उपन्यास २०६० सालमा प्रकाशित भएको हो । पाण्डेयको प्रस्तुत उपन्यासको कथावस्तु समसामयिक घटनाहरूमा आधारित रहेको छ । यसमा नारीहरूका लागि समाजमा हुने विविध सङ्घर्षमय क्षणको चर्चा गरेका छन् । यो उपन्यास सरल तथा स्वाभाविक भाषाशैलीमा लेखिएको छ ।

### शीर्षक विधान

कुमारीको सपना उपन्यास मदनकी छोरी दीपाको वैवाहिक सङ्घर्षमय जीवनबाट अगाडि बढ्दै गएको छ । उपन्यासको अन्तिममा पति मरिसकेकी दीपा र स्वास्नी मरेपछिको विदुर खगेन्द्रको विवाह गरिएको छ । हाम्रो समाजमा दीपाजस्ता कुमारीहरूको सपना सबै विधुवा नारीहरूमा रहन्छ । त्यसलाई समाजले सकारात्मक दृष्टिबाट प्रोत्साहन दिन सकेमात्र खगेन्द्र र दीपाको जस्तै विवाह सम्भव रहन्छ । त्यसबाट मात्रै दीपाजस्ता हाम्रा समाजका कुमारीको सपना साकार हुनसक्छ भन्ने अर्थमा                    उपन्यासको                    शीर्षक                    विधान                    उपयुक्त देखिन्छ ।

## उपन्यासको संरचना पक्ष

कुमारीको सपना उपन्यास चौधुर खण्डमा विभाजित रहेको छ। यो १३८ पृष्ठमा समेटिएको समसामयिक उपन्यास हो। यसमा प्रयोग भएका चौधुर खण्डहरू न साना न ठूला सबै एकै आकारका जस्ता देखिन्छन्। प्रस्तुत उपन्यासको प्रारम्भ काठमाडौँबाट कार्यालयको निरीक्षण गर्न भनी सिन्धुपाल्चोक गएका भोलाबाट सुरु हुन्छ। मदनकी छोरी दीपाको सङ्घर्षमय जीवनबाट उपन्यासअगाडि बढ्दै जान्छ। सहायक पात्रका रूपमा माने र चमेलीका कथाहरू जोडिन्छन् जो निम्न वर्गका प्रतिनिधि पात्र पनि हुन्। अन्त्यमा दीपाको सङ्घर्षमय जीवनअगाडि बढ्दै जाँदा र खगेन्द्रसँगको मिलनमा उपन्यासको अन्त्य हुन्छ।

प्रस्तुत उपन्यासको कथानकको संरचना पक्षलाई हेर्दा रैखिक ढाँचामा अगाडि बढेको देखिन्छ। कौतुहलका दृष्टिले पनि उपन्यास राम्रो देखिन्छ। पाण्डेयले उक्त उपन्यासमा समाजका यथार्थपक्षलाई मात्र विषयवस्तु बनाउन खोजे पनि उपन्यास केही हदसम्म स्वच्छन्दवादतर्फ ढल्किएको देखिन्छ।

## कथावस्तु

उपन्यासकार हरिप्रसाद पाण्डेयद्वारा रचित कुमारीको सपना उपन्यास मौलिक तथा सामाजिक उपन्यास हो। यसको कथावस्तु सामाजिक सुख-दुःखका यथार्थ घटनामा आधारित छ। यसमा पाण्डेयले तत्कालीन समयमा समाजमा घटित भएका घटनालाई प्रस्तुत गरेका छन्। उपन्यासभित्र तत्कालीन समाजभित्र हुने गरेका जनजीवनको वास्तविक चित्रण प्रस्तुत गरिएको छ। यस उपन्यासको प्रारम्भ काठमाडौँबाट कार्यालयको निरीक्षण गर्न भनी सिन्धुपाल्चोक गएका भोलाबाट सुरु हुन्छ। मदनकी छोरी दीपाको वैवाहिक सङ्घर्षमय जीवनबाट उपन्यासअगाडि बढ्दै जान्छ। सहायक कथाका रूपमा चमेली र मानेका कथा जोडिन्छन् जो निम्न वर्गका प्रतिनिधि पात्रहरू पनि हुन्। अन्त्यमा दीपाको सङ्घर्षमय जीवन अगाडि बढ्दै जाँदा खगेन्द्रसँगको मिलनमा र भोला तथा रेनुकाको मिलनमा उपन्यासको अन्त्य हुन्छ। त्यसैले प्रस्तुत उपन्यास चरित्रप्रधान तथा घटनाप्रधान उपन्यास भएर देखा पर्न आएको छ।

प्रस्तुत उपन्यासको आदिभाग दीपाको घरमा भोलासँग भएको भेटवार्ताबाट सुरु हुन्छ । त्यस्तै मध्यभागलाई हेर्दा दीपा सहरमा पढ्न बस्दा अपहरणमा पर्नु चरम विकासको भाग हो भने दीपा र खगेन्द्र, रेनुका र भोलाको विवाह हुनु उपन्यासको अन्त्य भाग हो ।

प्रस्तुत उपन्यासको मुख्य कथा दीपा र खगेन्द्रको देखिन्छ भने सहायक कथावस्तुमा चमेली र माने, भोला र रेनुकाको कथा रहेको छ । कथानकको स्रोतको रूपमा सामाजिक समस्यालाई यथार्थपरक ढंगले प्रस्तुत गरिएको छ । उपन्यास सुरुदेखि अन्त्यसम्म श्रृङ्खलित रूपमा विकास भएको छ । त्यसैले कथानकको विकास रैखिक ढाँचामा विकास भएको छ ।

### चरित्रचित्रण

उपन्यासकार हरिप्रसाद पाण्डेयद्वारा लिखित कुमारीको सपना उपन्यास मझौला आकारमा रचित उपन्यास हो । त्यसो भए तापनि प्रस्तुत उपन्यासमा धेरै पात्रहरूको प्रयोग गरिएको छ । यथार्थवादी धारामा रचना गरिएको यस उपन्यासलाई चरित्रप्रधान उपन्यास पनि भन्न सकिन्छ । उपन्यासमा कथावस्तुलाई अगाडि बढाउनका लागि पात्रहरूको भूमिका महत्त्वपूर्ण रहन्छ । साथै उपन्यासमा कार्यका आधारमा प्रमुख, सहायक र गौण सबै खालका पात्रहरूको उपस्थिति पाइन्छ । त्यस्तै लिङ्गका आधारमा स्त्री र पुरुष पात्रको उपस्थिति रहेको छ । प्रवृत्तिका आधारमा सत र असत दुवै प्रकारका पात्रको प्रयोग गरिएको छ ।

### प्रमुख पात्रहरू

कुमारीको सपना उपन्यासको प्रमुख पात्र दीपा हो । ऊ गतिशील नारी पात्रका रूपमा उपस्थित भएकी छ । दीपाको विवाह सानै उमेरमा भइसकेको छ र लोगनेको नराम्रो व्यवहारका कारण ऊ घरमा बस्न नसकी माइतमा बसेकी छ । त्यसैले दीपा माइतमा बसेर व्यक्तिगत स्वार्थभन्दा माथि उठेर भ्याएसम्म सबैलाई सहयोग गर्न मन पराउने अनुकूल पात्र पनि हो । उपन्यास दीपा कै सेरोफेरोमा बढी केन्द्रित भएकाले ऊ यस उपन्यासकी प्रमुख पात्र पनि हो ।

खगेन्द्र यस उपन्यासको अर्को प्रमुख पात्र हो । साथै ऊ सुरुमा विवाह गर्न नमान्ने तरपछि दीपालाई देखेपछि प्रभावित हुने गतिशील पात्र हो । खगेन्द्र विवाहित नारी दीपालाई विवाह गर्ने अनुकूल तथा बद्ध पात्र पनि हो । प्रवृत्तिका आधारमा अरूको भलो चाहने सत पात्र पनि हो ।

भोला यस उपन्यासको अर्को प्रमुख पुरुष पात्र हो । ऊ दीपालाई काठमाडौं ल्याई पढ्नको लागि सहयोग गर्ने अनुकूल पात्र हो । भोला यस उपन्यासको बद्ध तथा मञ्चीय पात्र पनि हो । प्रवृत्तिका आधारमा सतपात्र ताथ व्यक्तिगत स्वार्थभन्दा माथि उठेर अरूको सहयोग गर्ने भोला वर्गगत पात्र पनि हो ।

रेनुका यस उपन्यासकी नारी पात्र हो । ऊ यस उपन्यासमा भोलाकी प्रेमीका पनि हो । धनी बाबुकी छोरी भए पनि रेनुकाले मध्यमवर्गीय भोलालाई प्रेम गरेकी छ । ऊ सधैं भोलासँग रमाइरहने स्थिर पात्र हो । उपन्यासको अन्त्यमा पनि भोला र रेनुका देखिनुले रेनुका पनि बद्ध तथा मञ्चीय पात्र हो । रेनुका व्यक्तिगत प्रेममा मात्र लागेकी व्यक्तिगत पात्र हो । धनी बाबुकी छोरी भएर पनि भोलासँग प्रेममा सधैं लागिएर्नु र अन्त्यमा विवाह पनि गर्नुले ऊ यस उपन्यासको सत्पात्र पनि हो ।

#### सहायक पात्रहरू

कुमारीको सपना उपन्यासमा माने, चमेली, सुरेश, खगेन्द्रका, आमाबाबु, मदन आदि सहायक पात्रहरू रहेका छन् । माने यस उपन्यासको गरिब परिवारको सच्चा प्रेम गर्ने सहायक पुरुष पात्र हो । ऊ मञ्चीय तथा सत् पात्र पनि हो । चमेली यस उपन्यासकी सहायक नारी पात्र हो । साथै ऊ स्थिर तथा मञ्चीय पात्र पनि हो । बासुदेव सर, सुरेन्द्र, रविन्द्रका आमाबाबुआदि यस उपन्यासका सहायक पात्रहरू हुन् । उपन्यासलाई अगाडि बढाउन यी सहायक पात्रहरूको पनि महत्त्वपूर्ण भूमिका रहेको छ ।

#### गौण पात्रहरू

यस उपन्यासमा सानो तिनो भूमिकामा आवद्ध रहेर गौण भूमिका निर्वाह गर्ने केही पात्रहरू यसप्रकार रहेका छन् । कुमार, मिनु, अन्जु, कमला, शिवराम, शारदा, राजेन्द्र, रीता, महेश, भोलाकी आमा, मदनका गाउँलेहरू आदि ।

## परिवेश

उपन्यासमा चरित्रचित्रणलाई सहज तथा जीवन्त बनाउन र कथावस्तुलाई मूर्त रूप दिने कार्यमा परिवेश चित्रणको महत्वपूर्ण भूमिका हुन्छ । कुनैपनि पात्रहरू कुनै न कुनै परिवेशको धरातलमा आश्रित हुन्छन् र कुनै पनि घटनाहरू कुनै न कुनै स्थान, समय र वातावरणमा घटित हुन्छन् । यस उपन्यासमा काठमाडौँका विभिन्न स्थान र सिन्धुपाल्चोकको प्राकृतिक सौन्दर्यको भलक पाइन्छ । प्रस्तुत उपन्यासमा सामाजिक परिवेशका रूपमा सिन्धुपाल्चोक र काठमाडौँका विभिन्न स्थलहरू र दीपाका सङ्घर्षका क्षणहरू चित्रण भएका छन् । समयको हिसाबले हेर्दा यो उपन्यास दीपाको विवाह भएपछि घरमा बस्न नसकेर माइतमा आई १८/२० वर्षकी हुँदादेखिको खगेन्द्रसँग विवाह नहुन्जेल सम्मको ४/५ वर्षको अवधि रहेको छ । प्रस्तुत उपन्यासले नेपाली ग्रामीण समाजमा हुनेगरेका बालविवाहको यथार्थचित्रण गर्नुका साथै त्यस्ता चपेटामा परेका नारीले स्वावलम्बी हुनका लागि गर्नुपरेको सङ्घर्षलाई रोचक तथा यथार्थपरक ढङ्गले प्रस्तुत गरिएको छ ।

## भाषाशैली

कुनै पनि साहित्यलाई अभिव्यक्त गर्नका लागि भाषा आवश्यक पर्दछ । त्यसैले उपन्यासको विचारलाई प्रस्तुत गर्ने माध्यम भाषा हो भने शैली त्यसलाई प्रस्तुत गर्ने तरिका हो । कुमारीको सपना उपन्यास सरल भाषा तथा सरल ढङ्गमा रचना गरिएको छ । साथै शिक्षित तथा उच्च शिक्षित सबैले बोध गर्न सक्ने भाषामा यस उपन्यासको रचना गरिएको छ । यस उपन्यासमा भाषालाई अकृत्रिम ढङ्गमा नचाइएको छ । सरल भाषाशैलीको प्रयोग भएको प्रस्तुत उपन्यास विशेष गरेर युवायुवतीको लागि शिक्षाप्रद रहेको छ । उपन्यासकार पाण्डेयले यस उपन्यासमा ग्रामीण समाजमा हुने गरेका गीतको पनि समावेश गरेका छन् ।

रातो सारी फरर पारी

नाच मैयाँ सबैको मेखमारी

समग्रमा भन्नुपर्दा प्रस्तुत उपन्यासको भाषाशैली वर्णनात्मक किसिमको छ । सरल पदपदावलीको प्रयोग भएको छ । सरल वाक्य गठनका कारण उपन्यास सबैका

लागि बोधगम्य बन्न पुरेको छ । संस्मरणात्मक शैलीको प्रयोग भए पनि कथनपद्धति र शिल्पगत आधारमा उपन्यासको आयाम निर्धारित भएको देखिन्छ । ग्रामीणदेखि सहरी वातावरणसम्म सुहाउँदो भाषाको प्रयोग उपन्यासमा गरिएको छ । साथै भाषामा व्याकरणगत विचलन खासै देखिदैन । तसर्थ कुमारीको सपना सरल तथा स्वाभाविक भाषामा र बोधगम्य शैलीमा लेखिएको सबैका लागि ग्राह्य हुनसक्ने उपन्यास हो ।

### उद्देश्य

साहित्यिक सिर्जनाको कुनै न कुनै प्रयोजन हुन्छ । उपन्यासकारले कुनै विचार अभिव्यक्त गर्नका लागि उपन्यास सिर्जना गर्दछ । पाण्डेयको कुमारीको सपना उपन्यासको मुख्य उद्देश्य नेपाली ग्रामीण समाजमा हुनेगरेका बालविवाहको यथार्थ चित्रण गर्नु हो । साथै त्यसबाट उत्पन्न समस्यालाई दीपा र खगेन्द्रजस्ता कुमारी र कुमारको विवाहगराई समस्याको समाधानको अपेक्षा राख्नु हो । प्रस्तुत उपन्यासको मुख्य नायिका दीपाको जीवन आकाङ्क्षा नै कुमारीको सपना हो । ग्रामीण अशिक्षित परिवेशबाट शिक्षित स्वाबलम्बी जीवनका लागि सङ्घर्षशील दीपाको चरित्र नै आधुनिक विकसित समाजमा ज्ञान चाहने नारीहरूका लागि आवश्यक चरित्र हो । उपन्यासको सुरुमा देखापरेको सहयोगी पात्र भोलासँग दीपाको विवाह हुनसकेको छैन । दीपाको लागि भोला भन्दा विदुर खगेन्द्र नै ठीक छ किनकि खगेन्द्रले नारी हृदय बुझिसकेको छ र दीपा पनि पतिसुख पाउन नसकेकी कुमारी हो । दीपाको लोगने मरिसकेपछि मात्रै उसले खगेन्द्रसँग विवाह गरेकी छे । यसबाट दीपा समाजले लगाउने लान्छनाबाट पनि जोगाएकी छ । यसरी विधुवा भएपनि कुमारीका रूपमा रहेकी दीपा र पत्नी मरिसकेको विदुर खगेन्द्रको मिलन गराएर उपन्यासकार पाण्डेयले समाजमा परिवर्तनको आकाङ्क्षा राखेका छन् । साथै समाजका सकारात्मक र नकारात्मक दुवैको समिश्रण गरी सत्यको विजय उपन्यासको अन्त्यमा देखाइएको छ ।

प्रस्तुत उपन्यासको प्रमुख उद्देश्य हाम्रो समाजमा रहेका रुदिग्रस्त संस्कृति, बालविवाहको समर्थन र पुनर्विवाहको अवरोधलाई भत्काउनु रहेको छ । एउटी नारीलाई संरक्षण गर्नका लागि भोला, खगेन्द्र र रविन्द्रजस्ता आदर्श पुरुषहरूको सहयोग आवश्यक देखाएर प्रस्तुत उपन्यासमा नारीको सम्मान भएमात्र समाज परिवर्तन हुन्छ

भन्ने उद्देश्य देखाइएको छ । साथै समस्यामा परेकी दीपा, खगेन्द्रजस्ता दुई नारी र पुरुषको मिलनबाट नै समाज परिवर्तनको दिशातर्फ अगाडि बढन सक्छ भन्ने सन्देश यस उपन्यासले बोकेको देखिन्छ ।

उपन्यासकार हरिप्रसाद पाण्डेय यथार्थवादी उपन्यासकार हुन् । उनले वि.सं. २००४ मा वाङ्देलले सुरु गरेको मुलुकबाहिरबाट यथार्थवादी धारामा आधारित रहेर उपन्यास लेखनको सुरुवात गरेका छन् । प्रस्तुत उपन्यासमा ग्रामीण समाजमा हुने गरेका बालविवाह र शोषण, अन्याय, अत्याचारलाई जस्ताको तस्तै प्रस्तुत गरेका छन् । तैपनि कतैकतै उपन्यासमा आदर्शवादको भलक देख्न भने सकिन्छ । पाण्डेयले यस उपन्यासमा समाजमा हुने गरेका बालविवाह र त्यस्ता समस्यामा परेका नारी र पत्नीको मृत्युका कारण छटपटाएका पुरुषका बीचमा पुनर्विवाह गराई परिवर्तनको आकाङ्क्षा राखेका छन् । समाजमा यस किसिमको उद्देश्य बोकेको प्रस्तुत उपन्यासमा पाण्डेयले सकारात्मक तथा नकारात्मक समाजका दुबै पक्षको अवलोकन गरी सत्यको पक्षमा वकालत गरेका छन् । तसर्थ यस उपन्यासमा ग्रामीण नारीकामात्र यथार्थ चित्रण नभई सम्पूर्ण नारी तथा पुरुषको चरित्रलाई समेत प्रस्तुत गरिएको छ ।

#### ४.४.२ आशाका रेखाहरू उपन्यासको विश्लेषण

##### परिचय

उपन्यासकार हरिप्रसाद पाण्डेयको औपन्यासिक कृति आशाका रेखाहरू औपन्यासिक यात्राको द्वितीय उपन्यास हो जुन २०६१ सालमा प्रकाशित भएको छ । हाम्रो समाजमा हामीले देखेका, भोगेका, स्वीकारेका सम्पूर्ण स्थितिहरू यथार्थ हुन् । यसै यथार्थवादी धारामा आधारित भएर पाण्डेयले आशाका रेखाहरू उपन्यासको प्रकाशन गरेका छन् । समाजमा घटित भएका र घटित हुन सक्ने यथार्थको परिकल्पना गरेर उनले प्रस्तुत उपन्यासमा सामाजिक विषयवस्तु प्रदान गरेका छन् । सामाजिक यथार्थवादी अर्थात आदर्शोन्मुख यथार्थवादी प्रवृत्तिको लेखनलाई समाजको चित्रण गर्ने साधन बनाउने प्रचलन नेपाली उपन्यास परम्परामा २००४ सालबाट प्रारम्भ भएको हो । वस्तुको प्रस्तुतिमा सत्यता, विश्वसनीयता र स्वाभाविकता नै यथार्थ हुन् । उपन्यासकार विचारका औजारले समाजका कच्चा वस्तुलाई आकृति दिने कलाकार पनि हो । आशाका रेखाहरू उपन्यास सामाजिक उपन्यास हो । यसमा समाजमा दुर्जनहरू मात्रै होइन सज्जन, सहयोगी र साधु पात्र पनि छन् भन्ने सन्देश दिइएको छ ।

आशाका रेखाहरू घटना प्रधान उपन्यास हो । यसमा समाजका कुरीति, विसङ्गति, शोषण, अन्याय, अत्याचार, वाध्यता र विवशतालाई समावेश गरिएको छ । नारीहरूको यौन शोषणको लागि प्राध्यापकजस्ता व्यक्ति पनि सरिक हुन सक्छन् भन्ने तीतोयथार्थ यसमा देखाइएको छ भने अर्कोतिर आदर्शजस्तो सहयोगी व्यक्ति पनि समाजमा नहुने होइन भन्ने कुरा पनि देखाइएको छ । समाजमा आदर्शपात्र पनि हुन्छन् र शोषण गर्ने पात्र पनि हुन्छन् बढीभन्दा बढी आदर्शपात्रको समाजमा मान सम्मान र इज्जत हुन्छ, उसको सबैले आदर गर्न्छन् माया गर्न्छन् भन्ने विचार पनि उपन्यासमा प्रस्तुत भएको छ ।

आधुनिक नेपाली उपन्यासको सामाजिक यथार्थवादी धारामा आधारित रहेर लेखिएको प्रस्तुत उपन्यास सामाजिक उपन्यास हो । असल सन्देशका लागि मार्गदर्शन बन्न सक्ने यो उपन्यास घटनाप्रधान उपन्यास हो । कथावस्तु घटनाहरूको सञ्जाल हो । त्यसै सञ्जालमा घटित हुने यथार्थघटना र केही काल्पनिक घटनालाई एक सूत्रमा बाँधेर उनले उपन्यासको स्वरूप प्रस्तुत गरेका छन् । पाण्डेयले यस उपन्यासको स्रोतका रूपमा सामाजिक विषयवस्तुलाई लिएका छन् । जीवनका आरोह तथा अवरोहलाई समेटेर तयार गरिएको प्रस्तुत उपन्यासमा पाण्डेयले असल विचार सबैभन्दा ठूलो कुरा हो भन्ने सन्देश दिएका छन् ।

### शीर्षक विधान

आशाका रेखाहरू उपन्यासमा प्रमुख पात्र आदर्श र उसका तीनवटी नायिकाको जीवनमा घटित घटनाहरूको अभिधात्मक र ध्वन्यात्मक अर्थ समेटेर उपन्यासको शीर्षक राखिएको छ । यसमा उपन्यासका नायक तथा नायिकहरूलाई सतपात्र बनाई उपन्यासभरि आशा नै आशाका रेखाहरूको निर्माण गरिएको छ । हरेक मानिसको जीवन आशामा नै बाँचेको हुन्छ, तर ती आशा तथा अभिलाषाहरू कति त पूरा हुन्छन् कति पूरा हुँदैनन् । ती हाम्रा जीवनका विसङ्गति हुन भन्ने तीतो यथार्थ प्रस्तुत उपन्यासमा व्यक्त गरिएको छ । पात्र, कथ्य, परिवेश र उद्देश्य आदि कुनै पनि आधारमा उपन्यासको नाम अर्थात शीर्षक राखिन्छ । उपन्यासकार पाण्डेयले उक्त उपन्यासको शीर्षक कथावस्तुका आधारमा राखेका छन् । प्रेम कथामा आधारित उपन्यास भएर पनि

प्रस्तुत उपन्यास घटनाप्रधान रहेको छ । आदर्श आशाका घटनाहरूमा अतिथिएको छ, भने तीनवटी नायिकाहरू पनि आदर्शलाई पाउने आशामा नै रुमल्लिएका छन् । तसर्थ आशाका रेखाहरू उपन्यासको शीर्षक सार्थक नै देखिन्छ । उक्त उपन्यासमा नारीलाई केन्द्रबिन्दु बनाई उनीहरूको अन्तर्वेदना केलाउने प्रयास गरिएको छ । उपन्यासको प्रमुख नायक आदर्श कहिले अनन्तको, कहिले विमलाको, कहिले मीनाको र कहिले घरपरिवारको विछोडमा छटपटाएको छ । उसको जीवनमा सधैँ आशाका रेखाहरू एकपछि अर्को हुँदै देखापरेको छ । मीना मात्रै आदर्शको आशाका रेखामा सफल भएकी छ । सज्जन पात्र भएकै कारण आदर्शका पछाडि धेरै केटीहरू लागेका छन् र उसले तिनीहरूबाट धेरै सहयोग पाएको छ । मन पराउने सबै केटीहरूसँग उसको विछोड मात्र भएको छ, मात्र आशाका रेखाहरू बाँकी देखिन्छन् । त्यसैले प्रस्तुत उपन्यासको शीर्षक अभिधात्मक रूपमा सार्थक देखिन्छ ।

### उपन्यासको संरचना पक्ष

आशाका रेखाहरू उपन्यास १८ खण्डमा विभाजित रहेको छ । यो १४८ पृष्ठमा समेटिएको घटनाप्रधान उपन्यास हो । यसमा प्रयोग भएका १८ खण्डहरू न साना न ठूला सबै एकै आकारका जस्ता देखिन्छन् । प्रस्तुत उपन्यास विराटनगरमा अनन्तले एउटा माग्नेजस्तो मान्छेलाई देखेपछि सुरु हुन्छ । त्यो मान्छे उसको पटनामा पढाको साथी आदर्श हुन्छ । राधाकृष्णको मन्दिरमा आदर्श र अनन्तको भेट हुन्छ । अनन्तले आदर्शलाई घरमा लिएर जान्छ । अनन्तकी पत्नी सचिताले आदर्शका बितेका घटनाबारे विस्तारै थाहा पाउँदै जान्छे । अनन्तको परिवारले आदर्शलाई खुब माया गरेर राख्छन् । जागिर पनि लगाई दिन्छन् । त्यतिकैमा सिन्हाकी बहिनी विमलाले आदर्शलाई मनपराउँछे । आदर्श अफिसको कामले काठमाडौँ जाँदा विमला पनि त्यही पुगेकी हुन्छे । विमला र आदर्शका बीचमा दक्षिणकालीमा विवाह पनि हुन्छ तर केही दिनमा नै विमलाको मृत्यु हुन्छ । उता विराटनगरमा मीना आदर्शविना छटपटाएकी थिई । मीना पनि आदर्शलाई प्रेम गर्थी तर एकदिन प्रा. शर्माको अभद्र व्यवहारमा परेपछि ऊ घरमा नबसी काठमाडौँतिर लाग्छे । काठमाडौँमा पनि मीना गुण्डाको जालमा फस्न पुग्छे । त्यसपछि मीनाले

बसोबासको खोजीमा शारदा भन्ने केटीलाई भेट्न पुछे र उसैसँग बस्छे । अन्तिममा मीना र आदर्शको भेट हस्पिटलमा हुन्छ । शारदाको भने मृत्यु हुन्छ । यसरी आशाका रेखाहरू उपन्यासको अन्त्य आदर्श र मीनाको मिलनसँगै भएको छ ।

यसरी घटनैघटनाको सञ्जालमा फैलिएको यो उपन्यासले समाजमा घटित हुने घटना वा काल्पनिक घटनालाई एक सूत्रमा बाँधेर नाटकीयरूप बनाई सामाजिक विषयवस्तुलाई उपन्यासको विषयवस्तु बनाएको छ । प्रस्तुत उपन्यासको संरचना पक्ष न ठूलो न सानो मझौला किसिमको देखिन्छ । आशाका रेखाहरू उपन्यास रोचकता र स्वाभाविकताका दृष्टिले सफल देखिन्छ । कौतुहलताका दृष्टिले पनि उपन्यास ज्यादै राम्रो छ । समाजमा आदर्श तथा अनादर्श सबै मानिस रहन्छन् तर आदर्श जस्तैपुरुष विद्यमान भए भने समाज अग्रगतिमा लम्कन्छ भन्ने सन्देश पनि यसले दिएको छ ।

### कथावस्तु

आधुनिक नेपाली उपन्यासको सामाजिक यथार्थवादी धारामा आधारित रहेर लेखिएको प्रस्तुत उपन्यास सामाजिक उपन्यास हो । कथावस्तुलाई घटनाहरूको सञ्जालमा उनेर पाण्डेयले उपन्यासलाई सामाजिक विषयवस्तु प्रदान गरेका छन् ।

आदर्श विराटनगरमा अलपत्र परेको घटनाबाट सुरु भई काठमाडौंसम्मको विषयवस्तुलाई समेटेर यो उपन्यास पूरा भएको छ । कथानक घटनाहरूको कार्यकारण शृङ्खलामा आवद्ध हुन्छ । यसमा द्वन्द्व र त्यसबाट उत्पन्न हुने क्रियाको सर्वाधिक महत्त्व

रहन्छ । प्रस्तुत उपन्यासमा द्वन्द्वको प्रभाव खड्किएको देखिन्छ । यो उपन्यास पूर्णरैखिक ढाँचामा लेखिएको छैन । उपन्यास आदर्शको जीवनको बीचभागबाट सुरु भई पूर्वदिशातर्फ फर्किएको छ । उपन्यासको प्रमुख कथाको रूपमा आदर्शसँग जोडिएका परिवार र अनन्तको परिवारलाई लिन सकिन्छ । यस उपन्यासमा सङ्गठित संयुक्त कथानकको प्रयोग भएको छ । कथावस्तुको विकासका आधारमा उपन्यास आदि, मध्य र अन्त्यको आड्गिक विकासमा केही खड्किएको छ तर उपन्यासको अन्त्य भने आदिको समस्याले समाधान पाई कथानक टुङ्गिएको छ । आदर्श पटनामा पुगी पढ्नु र अनन्तले मन पराउनु र दुवैजना भाग्नुसम्मको घटना उपन्यासको आदि भाग हो ।

विराटनगरमा पुगेर आदर्शले दुःख पाउनु, मीनासँग भेट हुनु, त्यसपछि काठमाडौं जानु, विमलासँग विवाह हुनु, केही दिनमा नै विमलाको मृत्यु हुनु, गङ्गा र सुदीपसँग भेट हुनु, अफिसको कामले आदर्श विराटनगर फर्कदा मीना हराएको थाहाहुनुसम्मको घटना कथानकको विकास अवस्था हो । मीना र शारदाको भेट हुनु तथा अन्तनामा र शारदाले अन्तिम सास फेर्नुसम्मको घटना कथानकको अन्तिम भाग हो । यो उपन्यास कौतुहलताको दृष्टिले उत्कृष्ट रहेको छ । तृतीय पुरुष दृष्टिबिन्दुमा लेखिएको प्रस्तुत उपन्यासमा सरल तथा कतैकतै कथ्य भाषाशैलीको प्रयोग गरिएको छ ।

### चरित्रचित्रण

उपन्यासलाई जीवन्त बनाएर कथानकलाई गति दिने काम पात्रको हुन्छ । जीवनका विभिन्न सन्दर्भबाट चरित्रहरूलाई टिपिने हुँदा तिनमा पनि विभिन्नताको आरोपण गरिएको हुन्छ । उपन्यासमा प्रयोग गरिने चरित्रहरूका प्रकारका आधारमा हेर्दा आदर्श उपन्यासको गतिहीन पात्र हो । त्यस्तै मीना, विमला, अन्तना पनि गतिहीन पात्र हुन् किनकि उपन्यासको अदिदेखि अन्त्यसम्म ती पात्रहरूमा चारित्रिक भिन्नता आएको छैन । आदर्श तथा उसका तीनवटी नायिकाहरू पनि आदर्श पात्र नै देखापरेका छन् । गङ्गा तथा सुचिता पनि आदर्श पात्रका रूपमा नै रहेका छन् । चरित्रचित्रणका आधारहरूलाई हेर्दा लिङ्ग, कार्य, प्रवृत्ति, स्वभाव, आसन्तता, अबद्धता आदि पर्दछन् । लिङ्गका आधारमा यस उपन्यासको प्रमुख पात्र आदर्श पुरुष पात्र हो । ऊ प्रवृत्तिका आधारमा अनुकूल र स्वभावका आधारमा गतिहीन पात्र हो त्यस्तै आसन्तताका आधारमा मञ्चीय र आबद्धताका आधारमा बद्ध पात्र हो । कार्यका आधारमा प्रमुख भूमिका निर्वाह गर्ने आदर्श असल पात्र हो । उसलाई सुरवीर, बहादुर, द्वन्द्व आदिका आधारमा हेनुपर्दा अनायकको भूमिका प्राप्त भएको नायक भन्न सकिन्छ । साथै आदर्शलाई जीवन चेतनाका आधारमा वर्णीय पात्र पनि भन्न सकिन्छ ।

मीना प्रस्तुत उपन्यासकी प्रमुख भूमिका निर्वाह गर्ने नायिका हो । प्रवृत्तिका आधारमा हेर्दा मीना अनुकूल पात्र हो भने स्वभावका आधारमा गतिहीन पात्र हो । आसन्तताका आधारमा मीना मञ्चीय पात्र हो भने आबद्धताका आधारमा बद्धपात्र पनि हो ।

यस उपन्यासमा सहायक पात्रका रूपमा थुप्रै चरित्रहरूको प्रयोग भएको छ । अनन्त, विमला, सूचिता, गङ्गा, यौन शोषण गराउने काममा लागेकी बुढी आदि नारी पात्रहरू सहायक पात्रहरू रहेका छन् भने अनन्त, सुदीप, सिन्हा, अग्रवाल, डा. शर्मा, गुण्डाहरू आदि पुरुष सहायक पात्रहरू हुन् । अन्तना यस उपन्यासमा भण्डै भण्डै प्रमुख भूमिका निर्वाह गर्ने नारी पात्र पनि हो । अन्तना, अनुकूल, सहायक, बद्ध तथा नारी पात्र हो । विमला पनि गतिहीन, मञ्चीय, अनुकूल सहायक, बद्ध नारी पात्र हो । अनन्त यस उपन्यासको सहायक पात्र हो । ऊ अनुकूल, गतिशील, मञ्चीय, बद्ध तथा वर्गीय पात्र हो । डा. शर्मा प्रतिकूल, सहायक, गतिशील व्यक्तिगत, पुरुष पात्र हो ।

प्रस्तुत उपन्यासका गौण पात्रका रूपमा गङ्गाकी आमा, गुण्डाहरू, मीनाका क्याम्पसका साथीहरू आदि पात्रहरूलाई लिन सकिन्छ । साथै गङ्गाका सौताहरू तथा आदर्शलाई घाइते बनाउने गुण्डाहरू यस उपन्यासका गौण पात्रहरू हुन् । यी पात्रहरूले पनि उपन्यासमा गौण भूमिकानिर्वाह गरेका छन् । साथै यी पात्रहरूले उपन्यासलाई अगाडि बढाउन मद्दत पुऱ्याएका छन् ।

### परिवेश

उपन्यासमा पात्रहरूको क्रियाकलाप वा घटनाहरू घटित हुने समय, स्थान र त्यसको मानसिक रूपमा पर्ने प्रभावलाई पर्यावरण भनिन्छ । त्यही पर्यावरणभित्र देशकाल र वातावरण पर्दछन् । त्यसैले परिवेश उपन्यासको महत्त्वपूर्ण तत्त्व हो । आशाका रेखाहरू उपन्यासमा विराटनगर, पटना र काठमाडौं सहरको सौन्दर्यको वर्णन गरिएको छ । समयको हिसाबले यो उपन्यास ८/१० वर्ष उमेरको आदर्श एम्. ए. पास गरी काठमाडौंमा नोकरी गर्न थालेसम्मको घटनाको अवधि उपन्यासमा वर्णित छ । यस उपन्यासमा सामाजिक विषयवस्तुमा आधारित प्रेमकथा रहेको छ । तीनवटी नायिकाहरूको आकस्मिक प्रेमप्रसङ्ग वरिपरि रुमलिलाएको यो उपन्यासमा ती नायिकाहरूबीच खासै कुनै द्वन्द्वको सिर्जना गरिएको छैन । प्रस्तुत उपन्यासमा सबैको भलो चाहने आदर्श व्यक्तिले सबैको माया पाउँछ भन्ने सन्देश व्यक्त गरिएको छ । उपन्यासले तत्कालीन समयको पटना, विराटनगर र काठमाडौंको सामाजिक, धार्मिक तथा राजनीतिक चालचलनलाई देखाएको छ । धनी परिवारका केटीले पनि आदर्श

पुरुषका लागि मरिमेटेको यथार्थ देखाएर धनभन्दा आदर्श चरित्रको खाँचो हुन्छ भन्ने यथार्थ उपन्यासमा व्यक्त गरिएको छ ।

### भाषाशैली

उपन्यास भाषाद्वारा प्रकट हुने साहित्यिक विधा हो । त्यसैले यो भाषाकै माध्यमबाट शक्तिशाली बन्दछ । शैली भनेको भाषालाई प्रस्तुत गर्ने तरिका हो । उपन्यासमा गद्य भाषाको प्रयोग गरिन्छ । आशाका रेखाहरू उपन्यास सरल तथा स्वाभाविक भाषाशैलीमा लेखिएको मौलिक उपन्यास हो । उपन्यासलाई स्वाभाविक बनाउनका लागि कुनैकुनै ठाउँमा स्थानीय कथ्य भाषाको पनि प्रयोग गरिएको छ । “क्या हुवा यिनको डाक्टर साब ?” यिनको “आपने किसाइड हुआ हँ ।”

यस उपन्यासमा हिन्दी तथा अङ्ग्रेजी आगन्तुक शब्दको प्रयोग गरिएको छ । यसमा व्याकरणगत विचलन पनि प्रशस्तै भेटिन्छ । कर्ता, कर्म र क्रियाको क्रम नमिलाई कर्म, क्रिया कर्ताको क्रम उपन्यासमा पाउन सकिन्छ । कतिपय ठाउँमा विम्ब, प्रतीक र अलङ्घारको प्रयोग भेटिन्छ । “बादलको घुम्टो ओढेकी पृथ्वी आफ्ना सन्तानका दुःख देखेर रुन ठीक्क परेकी जस्ती देखिएकी थिइन्” । आशाका रेखाहरू उपन्यास ग्रामीणभन्दा शहरी वातावरणको प्रभावमा अगाडि बढेको छ । यस उपन्यासमा तत्सम, तत्भव, आगन्तुक तथा कतै हिन्दी भाषाको पनि प्रयोग गरिएको छ । त्यसो भएता पनि शिक्षितदेखि उच्च शिक्षित सम्मका लागि पठनीय भाषाको प्रयोग गरिएको छ । सरल तथा स्वाभाविक भाषाशैलीको प्रयोगले उपन्यास सबैमा सम्प्रेषणीय हुन सक्ने देखिन्छ ।

### उद्देश्य

कुनै पनि साहित्यिक सिर्जना विना उद्देश्य लेखिन्दैन । उपन्यास लेखिनुको पनि कुनै न कुनै उद्देश्य रहेको हुन्छ । यो उपन्यास सामाजिक विषयवस्तुमा आधारित प्रेमकथा भएको सुखान्त उपन्यास हो । यसले आदर्श पुरुषलाई नायक बनाएर समाजलाई सुमार्गमा हिँडाउन प्रेरित गर्ने उद्देश्य बोकेको देखिन्छ । गरिब पात्र आर्दशका पछाडि तीनवटी नायिका पछि लाग्नुले समाजमा धनभन्दा पनि सदाचारी आदर्श व्यक्तिको खाँचो रहेको छ भन्ने सन्देश उपन्यासमा व्यक्त गरिएको छ । यस उपन्यासले समाजमा घटित भएका घटनाक्रमलाई टिपेर असल सन्देश सम्प्रेषण गरेको

छ । नारीलाई केन्द्रबिन्दु बनाई उनीहरूको अन्तर्वेदना केलाउन उपन्यास सफल देखिन्छ । तीनवटी नायिकाको सिर्जना गरिएको प्रस्तुत उपन्यास आकस्मिक प्रेम प्रसङ्गमा कथावस्तु अगाडि बढेको छ । धन सम्पत्तिको लोभमा छिटै नफस्ने पात्र आदर्श र यी नायिकाहरूका बीचमा खासै द्वन्द्वको सिर्जना गरिएको छैन । आदर्श जोसँग बस्दा पनि जहाँ बस्दा पनि सबैको प्रिय पात्रकारूपमा परिचित छ । ऊ परोपकारी तथा दुःखमा परेकालाई सहयोग गर्ने उपकारी पुरुष पात्र हो । आदर्शबाट प्राप्त हुने असल सन्देश नै यस उपन्यासको प्रमुख उद्देश्य हो । समाजमा डा. शर्माजस्ता शिक्षित पुरुषहरू पनि छन् तथा आदर्श र अनन्तजस्ता सदाचारी पुरुष पात्रले मात्र सबैको भलो हुने सन्देशको सम्प्रेषण गर्न सक्छन् भन्ने उद्देश्य उपन्यासमा देखिन्छ ।

### निष्कर्ष

उपन्यासकार हरिप्रसाद पाण्डेय सामाजिक उपन्यासकार हुन् । उक्त उपन्यासको मूल उद्देश्य समाजमा देखापरेका समस्यालाई आदर्श नायकहरूको स्थापना गरी समाधान गर्न सकिन्छ भन्ने रहेको छ । समाजमा देखापरेका वर्गीय समस्यालाई पनि आदर्श तथा असल चरित्रबाट केही मात्रामा भए पनि कम गर्नसकिन्छ भन्ने सन्देश यस उपन्यासले दिएको छ । नारीहरूमा रहेको अन्तर्वेदनालाई केलाउन पनि यो उपन्यास सफल देखिन्छ । गरिब नै भए पनि आदर्श चरित्र छ भने धन तथा ऐश आराममा बसेका नारीहरूले पनि आफ्नो बनाउन चाहन्छन् भन्ने आदर्श चरित्रको पक्षमा यो उपन्यास अगाडि बढेको छ ।

### ४.४.३ नदेखिएका पाइलाहरू उपन्यासको विश्लेषण

#### परिचय

उपन्यासकार हरिप्रसाद पाण्डेयद्वारा लिखित नदेखिएका पाइलाहरू उपन्यास लेखन यात्राको तेस्रो उपन्यास हो । यो उपन्यास २०६३ सालमा प्रकाशित भएको हो । प्रस्तुत उपन्यास सामाजिक यथार्थवादी धारामा लेखिएको उपन्यास हो । यसमा समाजमा घटित हुने तथा भएका घटनाहरूलाई विषयवस्तु बनाइएको छ । प्रस्तुत उपन्यासले समाजमा हुने गरेका चेलिबेटी बेचविखन, सासूले बुहारीप्रति गर्ने कु-व्यवहार, दलालीप्रथा आदि विषयवस्तुलाई यथार्थरूपमा प्रकट गरेको छ । धेरै पात्रहरूको प्रयोग

गरिएको उक्त उपन्यासले समाजमा अन्याय, अत्याचार, शोषण, छलकपट आदि विकृतिका कारण समाज नराम्रो अवस्थामा पुगदछ भन्ने सन्देश व्यक्त गरेको छ । समाजलाई परिवर्तन गर्ने हो भने आदर्श तथा कर्तव्यपरायण व्यक्तिको आचरणले सही दिशा पहिल्याउन सक्दछ भन्ने सन्देश पनि उपन्यासले बोकेको छ । रैखिक ढाँचामा लेखिएको प्रस्तुत उपन्यास संवाद प्रधान सामाजिक उपन्यास हो । यस उपन्यासमा संवादले यथेष्ट रूपमा नाटकीयतालाई आत्मसात् गर्न सकेको छ । त्यसैले नदेखिएका पाइलाहरू उपन्यास पूर्णतः घटनाप्रधान रहेको छ । यसको अध्ययनबाट हामीले नेपाली समाज भित्रका नैतिक द्वन्द्वहरू राम्ररी औल्याउन सक्छौं । त्यसैले पाण्डेयद्वारा लिखित नदेखिएका पाइलाहरू उपन्यास नेपाली पाठकवर्गमा रुचि उत्पन्न गराउन सक्ने क्षमता बोकेको उत्कृष्ट उपन्यास हो ।

### शीर्षक विधान

शीर्षक उपन्यासको शिर हो र यसले उपन्यासलाई परिचय गराउने कार्य गर्दछ । पात्र, कथ्य, उद्देश्य र परिवेश आदि कुनै पनि आधारमा उपन्यासको शीर्षक राख्ने गरिन्छ । उपन्यासकार पाण्डेयले पनि आफ्नो तेस्रो उपन्यासको नाम **नदेखिएका पाइलाहरू** राखेका

छन् । यो शीर्षक उपन्यासको कथावस्तुका आधारमा राखिएको हो । प्रस्तुत उपन्यासले मूलभूतरूपमा स्वार्थका कारण मानिस कतिसम्म अन्धो हुनसक्छ भन्ने कुरालाई देखाउन खोजेको देखिन्छ । स्वार्थका कारण कतिपय मानिसले बुद्धि र विवेकलाई बन्धकी राख्न आएको मात्र छैन मान्छेले मान्छेको समेत व्यापार गर्दै आएको छ । स्वार्थले अन्धा बनेका मानिसले के मात्र गरेको छैन । लुच्याईँ फट्याईँ त सामान्य कुरो नै भए आफ्नै छोरी, दिदीबहिनी भान्जी, शाली र सँगै बाँच्ने र सँगै मर्ने कसम खाएर वैवाहिक सूत्रमा बाँधिएकी आफ्नै श्रीमतीलाईसमेत प्रलोभन देखाएर बेचविखनको वस्तु बनाउदै त्याएका छन् । यस्तै सासूहरूको बुहार्तनमा परी बुहारीको जीवन तहसनहस हुने कुरोलाई पनि उपन्यासले प्रस्तुत गरेको छ । समसामयिक विषयवस्तुमा लेखिएको प्रस्तुत उपन्यासको शीर्षक **नदेखिएका पाइलाहरू** राखिएको छ । समाजमा नराम्रो काम गर्ने व्यक्तिले जतिसुकै षड्यन्त्रको जालोबुनेपनि एकदिन कुकर्म गर्नेले त्यसको फल भोग्नै पर्दछ भन्ने

सन्देश उपन्यासले व्यक्त गरेको छ । साथै यस्ता परपीडनबाट आत्मरतिलिन चाहनेलाई समयमै सजग रहने सङ्केतसमेत उपन्यासले गरेको छ । समाजलाई पथभ्रष्टतर्फ डोच्याउन अघि लम्कने यस्तो चरित्रहरूको गन्तव्य सुरुमा देखिदैन । जब उसका अपराधका कामहरू एकपछि अर्को गर्दै अगाडि बढौदै जान्छन् तब निश्चित नै तिनीहरूका नदेखिएका पाइलाहरू उदाङ्गे हुन पुगदछन् । जेलको कालो कोठामा तिनीहरूको अस्तित्व रहेको हुन्छ भन्ने यथार्थलाई उपन्यासले प्रष्ट्याएको छ । उपन्यासको शीर्षकअनुसार समाजमा कुकर्म गर्नेहरूका पाइलाहरू सुरुमा अन्जान नै हुन्छन् । धेरैले ती पाइलाहरूलाई देख्दैनन् तर पछि तिनीहरूको चरित्र उदाङ्गे भएपछि सबैका आँखा खुल्छन् भन्ने सन्देश उपन्यासले दिएको छ । यस्ता विलिन पाइलाहरूप्रति सबै सचेत रहनु पर्दछ भन्ने कथावस्तुले वहन गरेकाले उपन्यासको शीर्षक नदेखिएका पाइलाहरू सार्थक नै देखिन्छ ।

### उपन्यासको संरचना पक्ष

हरिप्रसाद पाण्डेयद्वारा लिखित नदेखिएका पाइलाहरू उपन्यास पच्चीस खण्डमा संरचित मौलिक उपन्यास हो । प्रस्तुत उपन्यास ऐंखिक ढाँचामा लेखिएको संवादप्रधान सामाजिक उपन्यास हो । उक्त उपन्यासका पच्चीसवटा खण्डहरू न ठूला न साना सबै ठीकका रहेका छन् । १०५ पृष्ठमा फैलिएको प्रस्तुत उपन्यासको आयतन पनि मझौला आकारको देखिन्छ । नाटकीय ढाँगमा अगाडि बढेको यो उपन्यास दुर्घटना प्रधान रहेको छ । उक्त उपन्यासको घटनाका संरचना पक्षहरू निम्नानुसार देखिन्छ ।

उपन्यासको पहिलो भागमा लासमाथि घोप्टोपरेर एउटी महिला रोइरहेकी हुन्छे । दौलतकुमारी कर्कश आवाज निकालेर बुहारीलाई सराप्दै हुन्निन्छन् । एकछिनपछि लासलाई उठाएर आर्यघाटतिर लगिन्छ । केशर बिष्टकी छोरी विमलाको विवाह दौलतकुमारीको छोरो गोकुलसँग बलराम थापाको जालभेलमा परेर भएको हुन्छ । बलराम थापाले विमलालाई जालभेलमा पारेर विवाह गरेको थाहा पाएकाले योजनाबद्ध ढाँगले थापालाई प्रेम गरेको स्वाड गरी विमलाको नाममा जग्गा पास गरिदिन्छ । त्यसैगरी उपन्यासअगाडि बढौदै जाँदा रामेश्वर शर्मा कृषि सामग्री संस्थानका महाप्रबन्धक थिए । उनकी श्रीमती शोभा र छोरी पूजा थिइन् । पूजा जवान भएपछि

दीपेशसँग प्रेम गर्न थाल्छन् । दीपेशको परिवार माओवादीको चपेटामा परी सबै मरेका हुन्छन् । ऊ र भाइ बहिनी मात्रै बाँच सफल हुन्छन् । दिपेश मामाघरमा बसेर पढेको हुन्छ । दिपेश इन्जिनियरिङ पढ्न क्यानडा जान्छ । क्यानडाबाट फर्केपछि दुवैजनाको विवाह हुन्छ । त्यस्तै उपन्यासको अर्को संरचनामा बलराम थापाकी छोरी शान्ताको विवाह गोपालसँग हुन्छ । गोपाल केटी बेच्ने दलाल हुन्छ । गोपाल र उसको साथी विष्णु लामा केटी बेच्ने दलालहरू हुन् । उनीहरूले घुम्न जाने बहानामा शान्ता र बुनुलाई भारतमा लगी बेच्दछन् । शान्ता र बुनु दुवै अनेक प्रयत्नपछि नेपाल फर्क्न सफल हुन्छन् । गोपाल र विष्णु लामाले शान्ता र बुनुलाई बेचेपछि काठमाडौँ आउने क्रममा इन्दिरा र सझीतालाई फकाउने योजना बनाउन थाल्छन् । त्यो कुरा इन्दिराले सबै सुन्छन् । त्यसपछि उनीहरूलाई प्रहरीको जालमाहाल नारीसुधार समितिमा कुरा मिलाईन् । मेनुका लगायतका धेरै नारीहरू मिलेर एउटा नारीसुधार समिति खोलिएको थियो । मेनुका त्यस समितिकी प्रमुख नारी सदस्य थिइन् । उनले त्यहाँ समितिमा रहेर बलराम थापा, गोपाल विष्ट, विष्णु लामा जस्ता सबै दलालहरू जम्मागरी प्रहरीको कब्जामा हाल्ने काम गरिन् । त्यसमा सहयोग गर्ने विमला, इन्दिरा, सझीता, रेखा ललिता, नगिना, कविता धेरै महिलाहरू थिए । यी सबै दलालीहरूलाई प्रहरीको जालमा हालेपछि मेनुकाले इ. सुरेशसँग विवाह गरिन् । विमलाको विवाह प्रकाशसँग र पूजाको विवाह दीपेशसँग भयो । एकैदिन भद्रकाली मन्दिरमा तीन जोडी सत्यबाटोमा लागेका युवायुवतीको विवाह सम्पन्न भयो । यसरी प्रस्तुत उपन्यासको संरचना पक्ष धेरै फैलिएको छ । दौलतकुमारीजस्ती कर्कश स्वभावकी नारीको गालीबाट सुरु भएको यो उपन्यास सत्य आचरण भएका तीन जोडीको विवाह सम्पन्न भएर टुडिगएको छ ।

### कथावस्तु

उपन्यासकार हरिप्रसाद पाण्डेयद्वारा लिखित नदेखिएका पाइलाहरू उपन्यास सामाजिक यथार्थवादी धारामा आधारित रहेको छ । प्रस्तुत उपन्यासको कथावस्तु सामाजिक दुःखसुखका यथार्थ घटनामा आधारित छ । आजको परिवर्तित नेपालको

सामाजिक चित्र उतारिएको यो उपन्यासमा नेपाली जनजीवनको वास्तविक चित्र प्रस्तुत गरिएको छ । साथै यो उपन्यासमा समाजमा देखापरेका राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक परम्पराको खरोचित्र उतारिएको छ । आजको समाज दलालहरूको हातमापर्दा पथभ्रष्ट भएको छ । दौलतकुमारीजस्ता हाम्रो समाजका सासूहरूको नराम्रो व्यवहारले परिवारको बेहालत भएको छ । नारीको जीवनमाथि खेलवाडगर्ने दलालहरू, बुहारीहरूमाथि अभद्र व्यवहारगर्ने सासूहरू, नातागोता तथा आफन्तबाट पाइने धोका, व्यक्तिभित्रका द्वन्द्वहरू, समसामयिक राजनीतिक विसङ्गति आदि कुराहरूलाई स्पष्ट देखाउन उपन्यास सफल देखिन्छ । उपन्यासको कथावस्तु कार्यकारण शृङ्खलामा उनिएर प्रस्तुत भएको छ । मान्छे स्वार्थका कारण कतिसम्म अन्धो हुनसक्छ भने कुरा उपन्यासले देखाउन खोजेको छ । यस उपन्यासको कथावस्तुको स्रोतमा समसामयिक विषयवस्तुहरू प्रस्तुत गरिएको छ । मेनुकाजस्ती सङ्घर्षशील नारीको प्रयासमा समस्यामा परेका नारीहरूको उद्धार भएको छ । पाण्डेयका पहिलाका दुईवटा उपन्यासभन्दा यो उपन्यास अभ बढी खारिएको छ । उपन्यासमा द्वन्द्वका पाटाहरू पनि सृजना भएका छन् । जुन स्वभाविक र रोचक पनि देखिन्छ । उपन्यासको सुरुको भाग वृत्ताकारीय ढाँचामा देखिएपनि सबै उपन्यास पर्दिसकदा उपन्यासमा मुख्य तथा सहायक कथानक बराबरी रूपमा अगाडि बढेका छन् । बलराम थापाजस्तो दलालको विश्वासमा पर्दा विमलाले वैवाहिक जीवनमा दुःख पाएकी छ । नारी जीवनमा विवाहले ठूलो मोड ल्याउने हुँदा त्यसतर्फ अभिभावक तथा स्वयम् नारीले पनि सजगता अपनाउनु पर्ने आवश्यकता विमला र शान्ताले विश्वासघातका कारण भोग्नुपरेका कष्टमय जीवनका पाटाहरूबाट देखाइएको छ । प्रस्तुत उपन्यासको कथानक यसरी अगाडि बढेको देखिन्छ ।

बलराम थापाको जालभेलमा परेर विमलाको विवाह हुन्छ । घरमा सासू र आमाजूको कर्कश स्वभावका कारण लोग्ने गोकुलको मृत्युको कारणले विमलाले दुःखदायी जीवन विताउन विवश हुनुपरेको छ । शान्ता र बुनुजस्ता पात्रले अनायास प्रेममा फस्नाले भारतमा बेचिएर दुःख भोग्नुपरेको छ । पूजाजस्ती सुशील केटी अचानक अपहरणमा परी दुःख भेल्नु परेको छ । त्यस्तै विष्णु लामा र गोपाल विष्टजस्तो केटी बेच्ने दलालहरूको भुठो प्रेममा फसी धेरै नारीहरू विदेसिएका घटनाहरू पनि यहाँ प्रस्तुत छ । सुरेश, दीपेश र प्रकाशजस्ता समाजका सत्पात्रले

मेनुका, पूजा र विमलाजस्ता नारीहरूलाई सही प्रेम गरेर विवाह गरेको घटनासम्म उपन्यासको कथावस्तु फैलिएको छ । उपन्यासको अन्तिममा विधुवा नारी विमलाको विवाह पत्नी मरेर बसेको प्रकाशसँग भएको छ भने सुरेश र मेनुकाजस्ता सच्चा समाजसेवीको पनि विवाह भएको छ । त्यस्तै राजनीतिक चपेटामा परी परिवार तथा आर्थिक अवस्था सबै गुमाएको दीपेशसित पूजाजस्ती असल नारीको विवाह गराएर उपन्यास टुडीगाएको छ ।

### चरित्रचित्रण

कथावस्तुलाई अगाडि बढाउनका लागि उपन्यासमा पात्रहरूको भूमिका महत्त्वपूर्ण रहन्छ । तिनै पात्रहरूको चरित्रचित्रण गर्नु पनि उपन्यासको महत्त्वपूर्ण पक्ष हो । नदेखिएका पाइलाहरू उपन्यास धेरै पात्रहरूको प्रयोग भएको संवादप्रधान उपन्यास हो । प्रस्तुत उपन्यासमा एउटा मात्र नायकलाई कार्यभार नदिई सबैलाई उत्तिकै महत्त्व दिइएको छ । साथै यस उपन्यासमा स-साना कथानक पनि जोडीएका छन् । यसमा कार्यका आधारमा प्रमुख, सहायक र गौण पात्रको उपस्थिति रहेको छ साथै यी चरित्रहरूलाई लिङ्ग, स्वभाव, आसन्नता, आवद्धता प्रवृत्ति आदि आधारमा पनि हेर्न सकिन्छ ।

### प्रमुख पात्रहरू

कार्यका आधारमा हेर्दा प्रस्तुत उपन्यासमा प्रमुख पात्रहरूमा विमला, मेनुका, पूजा, सुरेश, दीपेश, प्रकाश, बलराम रहेका छन् । लिङ्गका आधारमा हेर्दा विमला, मेनुका र पूजा स्त्री पात्रहरू हुन् । प्रवृत्तिका आधारमा उनीहरू अनुकूल पात्र हुन् । प्रवृत्तिका आधारमा उनीहरू गतिशील रहेकाछन् । त्यस्तै उनीहरू आसन्नताका आधारमा बद्ध पात्रहरू हुन् । सुरेश, दीपेश, प्रकाश तथा गोकुल यस उपन्यासका पुरुष पात्रहरू हुन् । कार्यका आधारमा उनीहरू पनि प्रमुख पात्र हुन् । साथै उनीहरू गतिशील मञ्चीय तथा बद्ध पात्र पनि हुन् । मेनुकाको चरित्रलाई हेर्दा सङ्घर्षशील व्यक्तित्वका रूपमा चिन्न सकिन्छ । मेनुका समाजमा महिलामाथि हुने गरेका अन्याय अत्याचारका विरुद्ध लड्न लागिपर्ने सङ्घर्षशील व्यक्तित्वका रूपमा परिचित छे । उपन्यासमा प्रमुख भूमिका निर्वाह गर्न धेरै पात्रहरूको प्रयोग गरिएको

छ । साथै यहाँ स्वाभाविक चरित्रचित्रणको प्रयोग गरिएको छ । विमलाको वैवाहिक जीवनबाट अगाडि बढेको यो उपन्यास उसकै जीवनमा बढी केन्द्रित रहेको छ । दलालबाट ठगिएर विवाह गरिएकी विमलाको लोगने गोकुलको मृत्यु र छोरीको मृत्यु भएपछि स्वास्नी मरेको प्रकाशसँग गरिएको छ । त्यसैले प्रमुख पात्रको भूमिका विमलाले पनि गरेकी छ ।

### सहायक पात्रहरू

नदेखिएका पाइलाहरू उपन्यासमा थुप्रै सहायक पात्रहरूको प्रयोग गरिएको छ । गङ्गा, रामेश्वर, शोभा, दौलतकुमारी, सानुमैयाँ, सझगीता, बुनु, शान्ता, इन्दिरा, गोकुल आदि पात्रहरू यस उपन्यासका सहायक पात्रहरू हुन् । यिनै पात्रहरूले उपन्यासको घटनालाई अगाडि बढाउन मद्दत पुऱ्याएका छन् । दौलतकुमारी हाम्रो समाजमा सासूले बुहारीमाथि गर्ने अभद्र व्यवहारकी प्रतिनिधि पात्र हो । गोपाल तथा विष्णु लामा चेलिबेटी बेचविखन गर्ने समाजका विकृत पात्रका रूपमा परिचित छन् । उनीहरू प्रेमको भुटो नाटकको रचनागरी आफ्नो स्वार्थ पूरा गर्ने सहायक पात्र हुन् । यस उपन्यासमा विभिन्न किसिमका समाजमा हुने गरेका विसङ्गति, महिला बेचविखनमा हुने गरेका कार्यहरू, महिला अपहरण, जग्गाको दलालगर्ने दलालीहरू आदि पात्रहरूले कथावस्तुलाई अगाडि बढाउन मद्दत पुऱ्याएका छन् ।

### गौण पात्रहरू

उपन्यासलाई अगाडि बढाउन गौण पात्रहरूको पनि महत्वपूर्ण भूमिका रहन्छ । यस उपन्यासमा माओवादीद्वारा मारिएका दीपेशका परिवार, पूजालाई अपहरण गर्ने गुण्डाहरू गोपाल र विष्णु लामाले होटेलमा तह लगाएका गुण्डाहरू, विमलाका छिमेकी दिदी तथा देवर देउरानीहरू आदि गौण पात्रहरू रहेका छन् । इन्द्रबहादुर के.सी., ईश्वर पनि यस उपन्यासका गौण पात्रहरू हुन् । यस्ता खालका थुप्रै गौण पात्रहरूको प्रयोग उपन्यासमा भएको छ । यी पात्रहरूले विमला, मेनुका तथा पूजाका जीवनकहानीलाई अगाडि बढाउनका लागि साथ दिएका छन् । साथै यी सबै पात्रहरू मञ्चीय पनि रहेका छन् ।

## परिवेश

उपन्यासमा चरित्रचित्रणलाई सहज तथा जीवन्त बनाउन र कथावस्तुलाई मूर्त रूप दिने कार्यमा परिवेश चित्रणको महत्त्वपूर्ण भूमिका रहन्छ । यस उपन्यासमा उपन्यास लेख्दाको समयको अधिकांश काठमाडौंको र केही भारतको प्राकृतिक सौन्दर्यको भलक पाइन्छ । त्यसबाहेक मुडलिन, नारायणघाट, रक्सौल आदि शहरको वर्णन उपन्यासमा गरिएको छ । समयको हिसाबले यो उपन्यास विमलाको विवाह गर्ने कुरा गरिएको समयदेखि उसको अर्को विवाह प्रकाशसँग भएको अवधिसम्म रहेको छ । यस उपन्यासको परिवेश आजको परिवर्तित नेपालको सामाजिक चित्र उतार्न सफल रहेको छ । यस उपन्यासमा परिवारभित्रका सास-बुहारीबीचका ढन्द, सासूबाट बुहारीले भोग्नु पर्ने यातनाहरू, प्रेमका नाममा हुने गरेका गुण्डागर्दी वा अपहरणको जालमा फसेका नारीहरू, चेलीबेटी बेचविखनका धन्दामा लागेका व्यक्तिका चर्तिकलाहरू, जग्गा बेच्ने दलालहरू, नातागोता तथा आफन्तबाट पाइने धोका, राजनैतिक विसङ्गति आदि कुरालाई सजीव चित्रण गरिएको छ । समसामयिक परिवेश रहेको प्रस्तुत उपन्यासमा समाजमा मान्छेले गर्ने गरेका नराम्भा आचरण र राम्भा आचरण दुवैलाई देखाइएको छ । यहाँ परम्परागत रीतिस्थितिले सताइएका नारी पात्रहरूमाथि सुधार हुनुपर्ने अपेक्षा राखिएको छ । साथै उपन्यासमा विधुवा विमलाको विवाह प्रकाशसँग गराई उनलाई न्याय दिलाउनु र मेनुकाजस्ती नारीले नारीमाथि नै सहयोग गरी उन्नतितर्फ पाइला चाल्नुले उपन्यासमा नारीहरूका चुनौतिसामना गर्न नारी आफै सक्षम हुनुपर्ने देखिन्छ । यस उपन्यासमा प्राकृतिक सौन्दर्यका चित्र पनि सजीव ढङ्गमा उतारिएको छ । विशेषगरी नेपाली समाजमा हुनेगरेका सामाजिक अन्याय अत्याचारका विरुद्धमा नारीका आवाज उठाउनु र घटनालाई सजिव परिवेश दिनसक्नु यस उपन्यासको प्रमुख पक्ष हो ।

## भाषाशैली

भाषा अभिव्यक्तिको माध्यम हो भने शैली प्रस्तुतीकरणको तौरतरिका हो । यस दृष्टिले प्रस्तुत उपन्यासलाई हेर्दा यसमा प्रयोग भएका पात्रहरूको जीवनको सामाजिक यथार्थ अवस्था र स्थितिलाई वर्णन र विश्लेषण शैली अङ्गालेर प्रस्तुत गरिएको छ ।

यसमा प्रस्तुत भएका घटनाक्रमलाई सामाजिक तथा केही प्राकृतिक यथार्थसँग संश्लेषण गरेर वर्णन गरिएको छ । भाषा प्रयोगका दृष्टिले संस्कृत, तत्सम, तत्भव, अङ्ग्रेजी तथा हिन्दी शब्दहरूको प्रयोग भएको छ ।

जस्तैः हालचा कैसा है दिनावार्इ

ठीक है आपके कृपा से ।

वर्णनात्मकशैलीले उपन्यासलाई सङ्गठित क्रमबद्ध र सङ्गतिपूर्ण बनाएको छ । थुप्रै ठाउँमा हिन्दी भाषाको प्रयोग गरिएको छ । समसामयिक विषयवस्तु भएको प्रस्तुत उपन्यासमा सरल वाक्य र शैली मीठो छ । कहीं कतै सानो तिनो ठाउँमा बाहेक उपन्यासको भाषामा व्यक्तारणगत विचलन खासै देखिदैन । सरल तथा स्वाभाविक भाषाशैलीको प्रयोगले उपन्यास शिक्षितदेखि उच्च शिक्षितसम्मका पाठकका लागि पठनीय देखिन्छ । संवादले यथेष्ट रूपमा नाटकीयतालाई आत्मसात् गर्न सकेको देखिन्छ । ठाउँ तथा समय सुहाउँदो भाषाको प्रयोग गरिएको यस उपन्यासमा यथार्थताको भलक पाइन्छ । समग्रमा नदेखिएका पाइलाहरू उपन्यास सरल तथा स्वाभाविक भाषाशैली प्रयोग भएको घटनाप्रधान उपन्यास हो ।

### उद्देश्य

विना उद्देश्य कुनै पनि साहित्यको सिर्जना गरिदैन । उपन्यास लेखनको पनि कुनै न कुनै प्रयोजन हुन्छ । प्रस्तुत उपन्यासबाट समाजमा हुनेगरेका चेलीबेटी बेचविखनका कार्यहरू, सासूले बुहारीप्रति गर्ने बुहार्तनहरू, अपहरण, लुटपाटजस्ता गुण्डागर्दीहरू, राजनीतिक नाममा हुने कतिपय विकृतिहरू, जग्गा किनबेच गर्ने दलालहरू आदिको यथार्थचित्र उतारी त्यसबाट सजगरहन निकै गहन सन्देश दिन खोजेको देखिन्छ । जस्तोसुकै जालभेल र षड्यन्त्रको जालबन्न समाजका धूर्त मान्छे केही क्षणका लागि सफल बने पनि एकदिन कुकर्म गर्नेले त्यसको फल भोग्नै पर्दछ भन्ने उद्देश्य उपन्यासमा व्यक्त गरिएको छ । त्यसैगरी नारीभित्रको साहसलाई देखाउन पनि यो उपन्यास त्यक्तिकै महत्त्वपूर्ण रहेको छ । नारीको समस्या पुरुषले मात्र नभई अभ शब्दल तरिकाले समाधान गर्न नारी आफै सक्षम रहन्छन् भन्ने कुरालाई पनि उपन्यासले प्रस्त्र्याएको देखिन्छ । नारी तथा पुरुष दुबैले नारीमाथि हुनेगरेका शोषणलाई

नारीहरूकै सहयोगबाट परिवर्तन गर्न सकिन्छ । समाजमा अपराधीहरूको ठेगान लगाउनकालागि पुरुष मात्र नभई मेनुकाजस्ती नारीको पनि आवश्यक रहन्छ भन्ने सन्देश उपन्यासले दिएको देखिन्छ । पाण्डेयद्वारा लिखित प्रस्तुत उपन्यासमा देशका आधासइख्यामा रहेका नारीहरूको उत्थानका लागि कलम चलाउनु अत्यन्त राम्रो पक्ष मानिन्छ । दलालका खेलवाडमा परेर विवाह बन्धनमा बाँधिएकी विमलाजस्ता नारीको प्रकाशसँग पूनर्विवाह गराएर न्याय दिलाउन पुजा र दिपेशको विवाह गराउनु, मेनुका र सुरेशजस्ता सच्चा समाजसेवीको विवाह गराउनुले उपन्यासकारको समाज परिवर्तनको आकाङ्क्षालाई सही रूपमा लिन सकिन्छ ।

समग्रमा उपन्यासको मूल उद्देश्य भनेको समाजमा विभिन्न नाममा हुनेगरेका समसामयिक दलाली प्रथाको व्यङ्ग्य गर्दै शान्ति, सदाचार र नैतिकताको शिक्षा दिनु हो । साथै नारीले समस्यामा परेका नारीलाई सहयोग गरे भने उन्नतितर्फ पाइला चाल्न सक्छन् यसो गर्न सक्ने अदम्य क्षमता नारीहरूमा निहित छ भन्ने कुरालाई पनि उपन्यासले देखाएको छ । तसर्थ प्रस्तुत उपन्यासमा आजका नेपाली समाजभित्रका नैतिक द्वन्द्वहरू बुझनका लागि राम्रो सन्देश व्यक्त गरिएको छ ।

### निष्कर्ष

नदेखिएका पाइलाहरू सामाजिक यथार्थवादी धारामा आधारित रहेर लेखिएको उपन्यास हो । यो वि. सं. २०६३ मा प्रकाशित भएको हो । पाण्डेयले प्रस्तुत उपन्यासमा समसामयिक विषयवस्तु प्रस्तुत गरेका छन् । समाजमा हुने गरेका राजनीतिक विसङ्गति, सासू र बुहारीको सामाजिक व्यवहार जग्गा किनबेचका नाममा हुने गरेका ठगी प्रथा, चेलीबेटी बेचविखनका धन्दामालागेका दलालहरूको खरो चित्र उतारिएको छ । समाजमा देखापरेका यस्ता कार्यहरूबाट सजग रहन निकै गहन सन्देश दिन उपन्यास सफल रहेको छ । हाम्रो नेपाली समाजमा नारीको भूमिका खासै नदेखिने भए पनि साँच्चै नै नारीले पनि उचित कदम चाल्न सक्छन् भन्ने देखाउन पनि उपन्यास अग्रसर देखिन्छ । समाजमा कुकर्म गर्नेको कदम सुरुमा नदेखिए पनि उचित सर्वेक्षण भयो भने त्यस्ता

पाइलाहरू एकदिन न एकदिन समातिन्छन् र अगाडि बढ्न सक्दैनन् भन्ने सन्देश उपन्यासमा व्यक्त गरिएको छ ।

मुटुभित्रका ढुक्ढुकीहरू उपन्यासको विश्लेषण

#### परिचय

उपन्यासकार हरिप्रसाद पाण्डेयद्वारा लिखित मुटुभित्रका ढुक्ढुकीहरू सामाजिक उपन्यास हो । यो उपन्यास २०६५ सालमा प्रकाशित भएको छ । प्रस्तुत उपन्यासको कथावस्तु समाजमा घटित हुने तथा घटित हुनसक्ने पक्षलाई लिइएको छ । विषयगत रूपमा हेदा सामाजिक उपन्यास भए पनि यो उपन्यासको दार्शनिक पक्ष आदर्शवादी रहेको छ । केही हदसम्म उपन्यास यथार्थवादीजस्तो देखिए पनि कहिले आदर्शोन्मुख यथार्थवाद त कहिले आलोचनात्मक यथार्थवादतर्फ उपन्यास उन्मुख देखिन्छ । यसमा पाण्डेयले धार्मिक धारणा, रहस्यवादप्रति विश्वास, ईश्वरप्रति आस्था र भाग्यवादप्रति विश्वास दिलाएका छन् । उपन्यासको आयतन भने मझौला खालको छ । उपन्यासमा धेरै महिला तथा पुरुष पात्रको प्रयोग गरिएको भए पनि यो नारी केन्द्रित बन्न पुगेको छ । साथै उपन्यासले अनमेल विवाहले जन्माउने समस्यालाई देखाएको छ । दुईवटी नायिकाको जीवन कहानीसँग उपन्यास बढी केन्द्रित रहेको छ । मीठो तथा पठनीय भाषाशैलीको प्रयोगले उपन्यास पठनीय देखिन्छ । यस उपन्यासमा पाण्डेयले ससुराले विधुवा बुहारीको विवाह गरिदिएको देखाएका छन् । यसले समाज परिवर्तनको आकांक्षा राखेको हो भने कुरा बुझन सकिन्छ । मुटुभित्रका ढुक्ढुकीहरू सामाजिक उपन्यास हो । त्यसैले समसामयिक विषयवस्तुलाई उनले आफ्नो उपन्यासको कथावस्तु बनाएका छन् । सामान्य चिनजानमा र वासनाका भरमा गरिने प्रेम विवाह र धन सम्पत्तिको आशामा बाबुआमाको हठमा परी गरिने मागी विवाहले जन्माउने समस्यालाई यस उपन्यासले आत्मसात गरेको छ ।

#### शीर्षक विधान

शीर्षक उपन्यासको शिर हो । यसले उपन्यासलाई चिनाउने काम गर्दछ । पात्र, कथानक, परिवेश र उद्देश्य आदि कुनै पनि आधारमा उपन्यासको शीर्षक चयन गर्ने गरिन्छ । उपन्यासकार पाण्डेयले पनि आफ्नो चौथो उपन्यासको शीर्षक मुटुभित्रका

दुक्दुकीहरू राखेका छन् । यही शीर्षकबाट नै उपन्यासको बारेमा धेरै कुराको अनुमान गर्न सकिन्छ । उक्त शीर्षक पाण्डेयले सम्पूर्ण कथावस्तुका आधारमा राखेको देखिन्छ । सानु र अन्जनीको भेटघाटबाट सुरु गरिएको यो उपन्यासको मुख्य कथावस्तु पनि उनीहरूकै जीवन कथासँग सम्बन्धित छ । सानु र अन्जनीको पुनर्विवाह भएर सुखद् परिस्थितिमा नै उपन्यासको अन्त्य भएको छ । रूपेश र मुकुन्दजस्ता कुशल व्यक्तिले आफ्नो मनपरेका प्रेमिकाहरूसँग विवाह गर्न पाएका छन् । विवाहपछि पनि दुवै जोडीहरू सुखद् भएको क्षणमा उपन्यासको अन्त्य भएको छ । त्यसैले उपन्यास सुखान्त रहेको छ । यसको शीर्षक मुटुभित्रका दुक्दुकीहरू राखिएको छ । नारीहरू मुटुभित्रका दुक्दुकीहरू हुन तर पनि अवसर पाउनासाथ ती नारीहरूलाई समाजका केही धूर्त व्यक्तिले मार्गी खाने भाँडो बनाउँछन् भन्ने अर्थमा पनि शीर्षक ठीकै रहेको छ । पुरुषका लागि महिलाहरू मुटुभित्रका दुक्दुकीहरू हुन् । उनीहरूलाई उचित व्यवहार गर्दामात्र समाज अग्रगतितिर लम्कन्छ भन्ने यथार्थ अन्जनी र सानुको कार्यबाट देखापरेको छ । अभिधात्मक तथा व्यञ्जनात्मक दुवै कोणबाट मुटुभित्रका दुक्दुकीहरू शीर्षक उपयुक्त नै देखिन्छ ।

### उपन्यासको संरचना पक्ष

मुटुभित्रका दुक्दुकीहरू उपन्यास बाह्न खण्डमा संरचित मभौला आकारको उपन्यास हो । यसको आयतन १२५ पृष्ठमा समेटिएको छ । धेरैवटा कथानकको सञ्जालमा उनिएको प्रस्तुत उपन्यासको संरचना पक्ष निम्नलिखित रहेको छ ।

पहिलो खण्डमा सानु र अन्जलीको भेट पशुपतिदर्शन गर्न जानलागदा हुन्छ । सानु विराटनगरबाट काठमाडौँ आएकी हुन्छे । अन्जनी र सानु केटाकेटीदेखि नै मिल्ने साथी हुन् । अन्जनीको कोठामा गएर दुवैजनाका विगतका कुराकारी सुरु गर्दै यो भाग सकिन्छ । दोस्रो खण्डमा सानुले आफू धर्मसङ्कटमा परेको कुरा बताउँछिन् । तेस्रो खण्डमा केदारनाथको स-परिवार विराटनगर जान लागदा बाटामा दुर्घटना परेको घटनामा केन्द्रित रहेको छ । चौथो खण्डमा सानुको विवाह आमा बाबुको हठमा परी धनी बाबुको छोरा रविन्द्रसँग भएको छ । विवाहपछिको सानु र रविन्द्रको सम्बन्ध दिन

प्रतिदिन बिग्रदै जान्छ । रविन्द्र आफै कोठामा अपरिचित केटीसँग निर्वस्त्र बसेको सानुकै आँखाबाट प्रत्यक्ष देखाएर यो भाग सकिएको छ ।

उपन्यासको पाँचौं खण्डमा रमेश धितालको कथा सुरु हुन्छ । रमेशका आमाबाबु र वीरेका लोगनेस्वास्नी तीर्थाटनमा जाने कुरा गर्दै यो खण्डको अन्त्य हुन्छ । खण्ड छ मा केदार र पुस्पिताको विवाह हुन्छ । उनीहरूका दुई छोरी र एक छोरा थिए । उनकी छोरी

सानु

थिइन् । उत्ता तीर्थाटनमा गएका रमेशका आमाबाबु र वीरे र उनकी पत्नी बस दुर्घटनामा परी मरे भन्ने खबर रमेश र दीपिकाले थाहा पाए । त्यसपछि रमेशको परिवार विराटनगरतिर बसाई सरे । उनीहरूका दुई छोरी र एक छोरा थिए । छोरी अन्जनीले एस्. एल्. सी. पास गरेपछि भागेर हिँडी भने छोरा आवारा भएकाले पुलिसको फन्दामा पन्यो । कान्छी छोरी पढ्नमा लगनशील थिई । त्यसैमा उनीहरूले चित्त बुझाएका थिए । सातौं खण्डमा सानुले आफ्नो लोगनेलाई निर्वस्त्र पराई आइमाइसँग बसेको देखेपछि उनलाई रातभरि निद्रा लागेन । । क्याम्पसमा पियनबाट रूपेशको चिठी फेला पारिन् र सानु माइततिर गइन् । क्याम्पस जाने बहाबमा उनी माइततिर लागिन । घरमा जाँदा उनले रविन्द्रको जीवनमा परिवर्तन आएको देखिन् ।

खण्ड आठमा अन्जनी र कमलको कुरा छ । अन्जनी अनीलको कोठामा जाँदा कमलसँग भेट भयो । त्यसपछि कमलको नक्कली प्रेममा अन्जनी फस्न पुगी । भाग नैमा सानु घरमा गएपछि रविन्द्रको बानी दिनप्रतिदिन सुधिँदै गयो । सासू ससुरा र रविन्द्र तीर्थाटनमा गए । बस दुर्घटना भएर तीनैजना घाइते भए । सबैको उपचारपछि सानुले उनीहरूलाई घरमा ल्याइन । श्रीमान् र सासूको भने मृत्यु भयो । ससुरा मात्र बाँच्न सफल भए । त्यसपछि एकदिन सानु काठमाडौं गइन् । सानुलाई ससुराले घरमा बोलाए र रूपेशसँग भेट गर्नु पर्ने कुरा बताए । भाग दसमा अन्जनीलाई कमलले साथीकोमा विवाह गरेर लगेका थिए । साथीकी श्रीमतीको मद्दतले अन्जनी फुपूको घरमा पुगिन् । अन्जनीले पुलिसमा जागिर खाइन् । त्यही काम गर्ने सिलसिलामा अन्जनीको भेट मुकुन्दसँग भयो । उनीहरूका बीचमा मायाप्रेम बस्दै गयो ।

भाग एघारमा सानुले ससुराकै अगाडि रूपेशको फोन लगाइन् । रूपेश र ससुराको कुराकानी भयो । रविन्द्रले रूपेशको अपहरण गरेकोमा ससुराले माफि

मार्गनुभयो । त्यसपछि ससुराले सानुको विवाह रूपेशसँग गरिदिने क्रान्तिकारी प्रस्ताव राख्नुभयो । प्रस्ताव दुवैले स्वीकार गरेकाले धुमधामसँग सानु र रूपेशको विवाह सम्पन्न भयो । विभिन्न पत्रपत्रिकाले सानुको ससुराको अन्तर्वार्ता लिए । विवाहपछि रूपेश र सानु दुवै खुशी देखिन्छन् । उपन्यासको बाहौ खण्डमा फुपूसँग कुरा मिलाएर मुकुन्द र अन्जनीको विवाह सम्पन्न भयो । उनीहरूले विवाह हुनुभन्दा पहिला कमललाई पुलिसको फन्दामा पारेका थिए । अन्जनी र मुकुन्दको विवाहपछि उनीहरू पनि खुशी देखिन्छन् । सानु र अन्जनीको फोनको घण्टी बज्छ दुवै हाँस्न थाल्दा थाल्दै उपन्यासको अन्त्य भएको छ ।

### कथावस्तु

**मुटुभित्रका ढुकढुकीहरू** धेरै कथानकहरूको सञ्जालद्वारा तयार पारिएको उपन्यास

हो । यो आदर्शोन्मुख यथार्थवादी धारामा आधारित रहेर लेखिएको सामाजिक उपन्यास हो । यसको कथावस्तु शहरी परिवेशमा आधारित रहेर त्यस परिवेशमा घटित हुने र घटित हुनसक्ने यथार्थ घटनालाई लिएर लेखिएको छ । यस उपन्यासमा आर्थिक समस्यादेखि प्रेम, यौन, विवाह र सम्पत्तिका निम्निदाजुभाइमा हुने मनमुटाव, सौतेनी समस्या, अनमेल विवाह, चेलीबेटी बेचविखन, तस्करीजस्ता विषयवस्तु प्रस्तुत भएका छन् । तीमध्ये केही विषयले विशेष महत्त्व स्थापित गर्दै सामाजिक यथार्थको जानकारी गराएका छन् । प्रस्तुत उपन्यासको कथावस्तु यसरीअगाडि बढेको छ । पशुपतिनाथको दर्शन गर्न जाँदा अन्जनीसँग सानुको भेट हुन्छ । उनीहरू केटाकेटी बेलादेखिका मिल्ने साथी हुन्छन् । उपन्यासका सबै कथावस्तु अन्जनी र सानुका संवादमालाका रूपमा प्रस्तुत गरिएको छ । सानुको पहिलो विवाह प्रेम गर्ने रूपेशसँग नभएर धनी बाबुको छोरो रविन्द्रसँग भएको छ । तर यो विवाह असफल भएको छ र दोस्रो विवाह भने रूपेशसँग भएको छ । त्यसैगरी अन्जनी कमलसँग बासनाको प्रेममा फसी घरबाट भागेकी छ । कमल भने केटी बेच्ने दलाल हुन्छ । उसले धेरै केटीहरूलाई फसाइसकेको हुन्छ तर अन्जनी भने उसको पञ्जाबाट फुत्कन सफल हुन्छे । अन्जनीको दोस्रो विवाह मुकुन्दसँग हुन्छ । मुकुन्द पुलिसलाइनमा काम गर्ने लगनशील केटा हो । अन्जनीले पनि

सङ्घर्षगरी पुलिसमा जागिर खाएकी हुन्छे, उसले आफै प्रयासमा कमललाई पुलिसको हातमा पार्न सफल हुन्छे । विवाहपछि अन्जनी र सानुको जीवन सुखमय देखिएको छ । यसरी मुटुभित्रका ढुक्ढुकीहरू उपन्यास सुखान्तमा टुडिगएको छ ।

### चरित्रचित्रण

उपन्यासमा धेरै पात्रहरूको प्रयोग गरिएको छ । तिनै पात्रहरूको चरित्रचित्रणबाट मात्रै उपन्यासको यथार्थ पहिल्याउन सकिन्छ । यो उपन्यास कुनै एकजोडी नायक नायिकाहरूको जीवनमा मात्रै आधारित छैन यसमा अनेक जीवन नदीहरू बगेका छन् । तीनका अनेक मोडहरू छन्, जीवनबोध र जीवनदृष्टि छन् । उपन्यास कार्यका आधारमा प्रमुख सहायक तथा गौण सबैखालका पात्रहरूको उपस्थिति देखिन्छ । लिङ्गका आधारमा स्त्री तथा पुरुष दुवै पात्रहरूको उपस्थिति छ । प्रवृत्तिका आधारमा हेर्दा सत् र असत् दुवै खालका पात्रहरू रहेका छन् । उपन्यासको प्रमुख पात्रका रूपमा अन्जनी र सानुको भूमिका महत्वपूर्ण देखिन्छ । त्यसैगरी अन्य प्रमुख पात्रहरूमा रूपेश, मुकुन्द, रविन्द्र र कमलजस्ता पात्रहरू रहेका छन् । उपन्यासलाई अगाडि बढाउनका लागि यिनै पात्रहरूको महत्वपूर्ण भूमिका रहेको छ । त्यसैगरी उपन्यासलाई अगाडि बढाउनका लागि अन्य सहायक तथा गौण पात्रहरूको पनि महत्वपूर्ण भूमिका रहेको छ जुन यस प्रकार देखिन्छ ।

### प्रमुख पात्र

मुटुभित्रका ढुक्ढुकीहरू उपन्यासको प्रमुख पात्रका रूपमा अन्जनी र सानु रहेका छन् । उनीहरूकै संवाद मालामा उपन्यास तयार भएको छ । सानु र अन्जनीको जीवनसँग सम्बन्धित कथावस्तु नै उपन्यासमा प्रमुख कथावस्तु बनेको छ । उपन्यासको सुरु तथा अन्त्य पनि उनीहरूकै कथाबाट भएको छ । त्यसैले यस उपन्यासको प्रमुख पात्र सानु तथा अन्जनी रहेका छन् । दुवै पात्र गतिशील तथा मञ्चीय रहेका छन् । लिङ्गका आधारमा उनीहरू दुवै स्त्री पात्र हुन् भने कार्यका आधारमा प्रमुख पात्र हुन् । उपन्यासमा मुख्य भूमिका बोकेका यी पात्रहरू दुवै अनुकूल तथा बद्ध पात्र हुन् । सानु र अन्जनी दुवै केटाकेटीदेखिका मिल्ने साथी हुन् । अन्जनी एस. एल. सी. मात्र पास गरेकी स्त्री पात्र हो भने सानु एम. ए. पास गरेकी पात्र हो । अन्जनी पुलिसमा जागिर

खान सक्ने हट्टाकट्टा स्त्री पात्र हो भने सानु उप-प्राध्यापक स्त्री पात्र हो । त्यसैले दुवै शिक्षित तथा दहा पात्रहरू रहेका छन् । प्रमुख भूमिका निर्वाह गर्न सक्ने यी दुवै पात्रहरूमा नायकत्वमा हुनुपर्ने गुण रहेको देखिन्छ ।

### सहायक पात्रहरू

प्रस्तुत उपन्यासमा प्रमुख पात्रहरूका साथसाथै सहायक पात्रहरूको पनि उपस्थिति

छ । उपन्यासलाई अगाडि बढाउने क्रममा प्रमुख पात्रहरू सानु र अन्जनीको जीवनसँग सम्बन्धित रूपेश, रविन्द्र, कमल, मुकुन्द यस उपन्यासका सहायक पात्रहरू हुन् । उनीहरूले उपन्यासको कथावस्तुलाई अगाडि बढाउन सहायक भूमिका निर्वाह गरेका छन् । रविन्द्र यस उपन्यासको खल पात्रको रूपमा देखापरेको छ । उसले सानुसँग विवाह गर्नका लागि रूपेशलाई अपहरण गर्न लगाएको छ । त्यसैगरी कमल केटी बेच्ने दलाल हो । उसले अन्जनीलाई नाटकीय प्रेमजालमा फसाएर दुःख दिएको छ । मुकुन्द अन्जनीलाई विवाह गरी सही मार्ग निर्देश गर्ने सहायक पात्र हो भने रूपेश विहे भइसकेकी विधुवा प्रेमीलाई विवाह गर्ने असल चरित्र भएको सहायक पात्र हो । यसका साथसाथै अन्जनीका बाबुआमा, सानुका बाबुआमा र ससुरा पनि यस उपन्यासका सहायक पात्रहरू हुन् । उनीहरूले पनि उपन्यासलाई अगाडि बढाउन सहायक भूमिका निर्वाह गरेका छन् ।

### गौणपात्रहरू

मुटुभित्रका ढुक्कुकीहरू उपन्यासमा अन्य थुप्रै गौण स्त्री तथा पुरुष पात्रहरू रहेका छन् । ती पात्रहरू कुनै अनुकूल त कुनै प्रतिकूल रहेका छन् । उपन्यासको कथावस्तुलाई अगाडि बढाउनका लागि ती गौण पात्रहरूको पनि केही न केही भूमिका भने रहन्छ । ती गौण पात्रहरू निम्न रहेका छन् । केशरनाथ लुङ्गेट, केदारनाथ, पुष्पिता प्राचार्य, रश्मि, अनिता, रमेश धिताल, रणवीर, गौथली, दीपिका, कान्छा, अनील, बुढी आदि यी सबै पात्रहरू मञ्चीय छन् ।

## परिवेश

उपन्यासमा चरित्र चित्रणलाई सहज तथा जीवन्त बनाउन र कथावस्तुलाई मूर्त रूप दिने कार्यमा परिवेश चित्रणको महत्त्वपूर्ण भूमिका हुन्छ । मुटुभित्रका ढुक्कुकीहरू उपन्यासमा उपन्यास लेख्दाको समयको विराटनगर र काठमाडौंको प्राकृतिक सौन्दर्यको भलक पाइन्छ । साथै कलकत्ता, लखनऊ आदि ठाउँको भलक पनि उपन्यासमा देख्न सकिन्छ ।

समयको हिसाबले हेर्दा यो उपन्यास सानु र अन्जनीको केटाकेटी उमेरदेखि उनीहरूले आफ्नो पेशा बनाई दोस्रो विवाह गरेसम्मको अवधि रहेको छ । लगभग ३०/३५ वर्षको समयावधिमा उपन्यास घुमेको देखिन्छ ।

मुटुभित्रका ढुक्कुकीहरू उपन्यासको परिवेश नयाँ शिक्षित युगको रूपमा चर्चित छ । यहाँ प्रयोग भएका धेरै पात्रहरू शिक्षित देखिन्छन् तर उनीहरूको मनस्थिति भने पुरानो सामन्ती युगको जस्तो देखिन्छ । यो संसार खाली निमित्त हो, गर्ने गराउने सबै उनै ईश्वर हुन् जस्ता अभिव्यक्तिको प्रयोगले गर्दा उपन्यासको मनस्थिति केही पुरानो देखिन्छ । यसमा प्रयोग भएका कथावस्तु यथार्थ भए पनि पुरानो आदर्शले ती जकडिएका छन् । सामाजिक यथार्थ घटनालाई विषयवस्तु बनाइएको यो उपन्यास आदर्शवादी विश्वदृष्टिकोण बोकेरअगाडि बढेको छ ।

## भाषाशैली

भाषा उपन्यासको विचार प्रस्तुत गर्ने माध्यम हो भने शैली त्यसलाई प्रस्तुत गर्ने तरिका हो । भाषा र त्यो भाषालाई प्रयोग गर्ने शैलीले उपन्यासलाई सरल तथा बोध्य बनाउँछ । मुटुभित्रका ढुक्कुकीहरू उपन्यासमा सरल तथा स्वाभाविक भाषाशैलीको प्रयोग गरिएको छ । संस्मरणात्मक तथा संवादात्मक शैलीले उपन्यासलाई सङ्गतिपूर्ण बनाएको छ । भट्ट हेर्दा वृत्ताकारीय ढाँचा देखिए पनि उपन्यास पढ्दै जाँदा त्यो सरल ढाँचाजस्तो देखिएको छ । सुहाउँदो तथा मीठो भाषाशैलीको प्रयोगले गर्दा उपन्यास पठनीय देखिन्छ । हिन्दी भाषाको प्रयोग पनि उपन्यासमा देखिन्छ । यस उपन्यासको भाषामा व्याकरणगत विचलन पनि भेटिन्छ । प्राय सबै जसो वाक्यमा कर्ता, कर्म र क्रियाको क्रम भने मिलाएर राखिएको पाइन्छ । शिक्षितदेखि उच्चशिक्षित

पाठकका लागि उपन्यास सम्प्रेषणीय रहेको देखिन्छ । विषय सुहाउँदो भाषाशैली प्रयोग गरिएको यो उपन्यासमा सरल भाषाशैली प्रयोग गरिएको छ । चलचित्रमा भै एक पछि अर्को कथानक जोडिदै अगाडि बढेको यो उपन्यासको शैली भने वर्णनात्मक रहेको छ । पाठकले उपन्यास पढौंदै जाँदा मूल कथा पहिल्याउन गाहो पर्ने जस्तो स्थिति उपन्यासमा देखापरेको छ । कौतूहलताका दृष्टिले यो उपन्यास महत्त्वपूर्ण रहेको देखिन्छ । त्यसैले यो उपन्यास पाठकले रुचिपूर्वक पढनका लागि उपयुक्त रहेको छ । भाषा सबै खालका पाठकका लागि सम्प्रेषणीय देखिन्छ ।

### उद्देश्य

विना उद्देश्य कुनै पनि कुराको सिर्जना हुँदैन । त्यसैले उपन्यास लेखनको पनि कुनै न कुनै प्रयोजन रहेको हुन्छ । उपन्यासकार हरिप्रसाद पाण्डेयले पनि यस उपन्यासमा केही न केही उद्देश्य राखेका छन् । समाजमा बाबुआमाको हठमा परी धन सम्पत्तिको लोभमा गरिने सानुकोजस्तो अनमेल विवाह र अन्जनी र कमलकोजस्तो सस्तो नाटकीय प्रेम विवाहले जन्माउने समस्यालाई यस उपन्यासले प्रष्ट्याएको छ । यस्ता समस्याबाट मुक्ति पाउनका लागि ससुराले आफ्नी बुहारीको विवाह अर्को केटासँग गरिदिएको क्रान्तिकारी विचारलाई देखाउनु यस उपन्यासको उद्देश्य रहेको छ । उच्च खालको उद्देश्य राखिएको भए पनि उपन्यास भाग्यवाद र रहस्यवादको चर्चाले त्यतिमाथि उठन सकेको छैन । समाजमा घटित हुने महिला बेचविखनका कार्यहरू, दाइभाइ बीचमा हुने मनमुटाब, प्रेमका विविध सन्दर्भहरूलाई यस उपन्यासले आत्मसात गरेको छ । अन्जनीजस्ती नारी जुन शिक्षा तथा उमेर दुवैमा अपरिपक्क उमेरमा कमलजस्तो धूर्त व्यक्तिसँग प्रेममा फस्न पुग्छे र कमलको पञ्जाबाट फुत्कन सफल भएपछि पुलिसमा जागिर खान्छे । त्यसपछि कमललाई पक्न पनि सफल हुन्छे र अन्तिममा मुकुन्दजस्तो कर्मठ पुरुषसँग विवाह गर्न पुग्छे । त्यसैगरी सानुजस्ती शिक्षित नारीको विवाह रविन्द्रजस्तो धूर्त व्यक्तिसँग गर्दा वैवाहिक जीवन वर्वाद हुन्छ भन्ने देखाउन यो उपन्यासको सिर्जना गरिएको हो । विविध सन्दर्भबाट विधुवा हुन पुगेका हाम्रो समाजका महिलाहरूलाई सानुको ससुरालेजस्तै विवाह गरिदिए मात्र

महिलाहरूलाई उचित स्थान दिन सकिन्छ भन्ने उद्देश्यले पनि उपन्यासको सिर्जना गरिएको छ ।

### निष्कर्ष

उपन्यासकार हरिप्रसाद पाण्डेय सामाजिक उपन्यासकार हुन् । उनले समसामयिक विषयवस्तुहरूको प्रयोग गरेर हालसम्म चारवटा उपन्यासहरूको सिर्जना गरिसकेका छन् । मुटुभित्रका ढुकढुकीहरू उनको चौथो उपन्यास हो । जुन नारी केन्द्रित रहेको छ । यस उपन्यासमा पाण्डेयले समाजमा देखापरेका अनमेल विवाह, प्रेम, दाजुभाइबीच हुनेगरेका मनमुटाव, सौतेनी व्यवहार, महिला बेचविखनजस्ता कुरालाई अभिव्यक्त गरेका छन् । केही हदसम्म यथार्थवादको प्रयोग गरिएको देखिए पनि धार्मिक तथा रहस्यवादको सञ्जालमा फसेकाले उपन्यास आदर्शवादतर्फ ढलिकएको छ । मूल कथानक पहिल्याउन अलिक गाहो पर्ने यस उपन्यासको कथानकको आड्गिक विकास त्यति सफल देखिदैन । वृत्ताकारीय ढाँचामा कथानकअगाडि बढेको देखिन्छ । सरल तथा स्वाभाविक भाषाशैलीको प्रयोगले यो उपन्यास सबैमा सम्प्रेषणीय रहेको देखिन्छ । आफ्नो छोराको मृत्युपछि विधवा बनेकी बुहारीको विवाह गरिदिने ससुराको क्रान्तिकारी सोच यस उपन्यासको धनात्मक पक्ष हो । नेपाली समाजमा घटित हुने र घटित भएका सानु र अन्जनीको घटनालाई विषयवस्तु बनाएर समाजमा सचेतना जगाउनु उनको उपन्यास लेखनको उद्देश्य रहेको छ ।

### ४.५ हरिप्रसाद पाण्डेयको अन्जान कथासङ्ग्रहभित्रका कथाहरूको अध्ययन

#### परिचय

कथाकार हरिप्रसाद पाण्डेयको ‘अन्जान’ कथासङ्ग्रह २०६४ सालमा प्रकाशित कृति हो । उनको यस कृतिभित्र २२ वटा कथाहरू सङ्कलन गरिएका छन् । ती सबै कथाहरू आकारका दृष्टिले छोटाखालका छन् । पाण्डेयले सबै कथाहरूमा समसामयिक विषयवस्तुलाई प्रस्तुत गरेका छन् । प्रायः कथाहरूमा उनले नारीपात्र एवम् नारी समस्याको मनोवैज्ञानिक शैलीमा अनेक रूप र रङ्गको विश्लेषण पनि गरेका छन् । साथै यी कथाहरूमा विविध सामाजिक समस्याहरू एकपछि अर्को गरि मुखरित भएका छन् र पर्यवसानमा ती सबै कथाहरूले समाधानका प्रभावकारी

सन्देश पनि व्यक्त गरेका छन् । सरल तथा सुमधुर भाषा, हृदयस्पर्शी संवादले उनका कथाहरू रोचक बनेका छन् । यथार्थोन्मुख आदर्शवादले सजिएको समयसापेक्ष विषयवस्तुमा आधारित यो कथासङ्ग्रह सबै पाठकका लागि पठनीय र सङ्ग्रहणीय छ । रचना विधानअनुसार ती कथाहरूको अध्ययन निम्नानुसार गरिएको छ :-

#### ४.५.१ करुणा

कथाकार हरिप्रसाद पाण्डेयद्वारा लिखित करुणा कथा अन्जान कथासङ्ग्रहभित्रको सबैभन्दा पहिलो कथा हो । करुणा कथाको विषयवस्तुलाई हेर्दा प्रमुख पात्र करुणाको जीवनमा घटित भएका घटनासँगै कथानकअगाडि बढेको छ ।

करुणाको विवाह भएको चारपाँच वर्षसम्म पनि उनको वैवाहिक जीवन राम्रै चलेको हुन्छ । गलत साथीको नराम्रो चरित्रका कारण उनको लोग्ने मदन रक्सीको कुलतमा

फस्छ । रक्सीले मातिएर बेहोस भएका समयमा छिमेकीलाई बोलाएर करुणाले मदनको उपचार गर्न लागेको मदनले देखेपछि मदन र करुणाको मनमुटाव बढ्दै जान्छ । त्यसपछि मदन सधैँजसो रक्सीमा मातिएर घरमा उत्पात मच्चाउन थाल्छ । करुणा घरमा बस्न नसकेर माइतिर लाग्छे । मदन विरामी परेको खबर सुनेपछि ऊ घरमा जान लाग्छे तर बाटामा नै मदनको लास भेट्न पुग्छे ।

यसरी प्रस्तुत कथामा हाम्रा समाजमा हुने गरेका यथार्थतालाई देखाइएको छ । मदनजस्तो सज्जन व्यक्तिलाई पनि गलत साथी सङ्गतले कसरी बिगार्दछ र परिवारको कसरी तहसनहस हुन्छ भन्ने कुरालाई उक्त कथामा व्यक्त गरिएको छ । आफै उपचारमा भौतारिएर छिमेकीलाई गुहार्न पुगेकी करुणालाई बुझ्दै नबुझी उल्टै गलत अर्थ लगाउने मदनजस्ता पुरुषहरू हाम्रा समाजमा विद्यमान छन् भन्ने कुरालाई पनि उपन्यासले देखाएको छ । हाम्रा समाजमा हुने पुरुष अहम्बादलाई देखाउन पनि उपन्यास महत्वपूर्ण रहेको छ ।

प्रस्तुत कथा तृतीय पुरुष कथनढाँचामा लेखिएको छ । यस कथाको प्रमुख पात्र करुणाको जीवनमा कथा आधारित रहेको छ । यो कथाले हाम्रो समाजमा

कुलतमा फसेका पुरुषहरूले नारीहरूको जीवनमा कसरी ज्वारभाटा पैदा गरिदिन्छन् र आफू पनि सिधिन्छन् भन्ने उद्देश्य बोकेको छ । सरल तथा स्वाभाविक भाषाशैलीले कथा पठनीय तथा सम्प्रेषणीय देखिन्छ साथै कथा रैखिक ढाँचामा नै अगाडि बढेको छ । यथार्थोन्मुख आदर्शवादी धारामा रहेर लेखिएको करुणा कथाको अर्थ अभिधात्मक नै रहेको छ । यस कथाको नाम करुणा मुख्य पात्रको नाममा राखिएको छ । कथावस्तु पनि करुणा कै जीवनको घटनासँग सम्बन्धित भएकाले शीर्षक सार्थक देखिन्छ । कथानकको आइडिएका विकास सहज ढड्गमा गरिएको छ । छोटो लम्बाई र सरल तथा स्वाभाविक भाषाशैलीको प्रयोगले कथा महत्त्वपूर्ण देखिन्छ ।

#### ४.५.२ बिजोग

अन्जान कथा सङ्ग्रहभित्र सङ्कलित बिजोग कथा सामाजिक विषयवस्तुमा आधारित रहेको छ । उक्त कथामा ग्रामीण परिवेशभन्दा बढी सहरी परिवेशको मध्यमवर्गीय परिवारको थर्थार्थचित्रण पाइन्छ । यो कथा राजनीतिक विसङ्गतिका कारण समाजमा भएका यथार्थ घटनालाई लिएर लेखिएको छ ।

प्रस्तुत कथा सुरेशका चारजना परिवारको जीवनमा आधारित रहेको छ । उसका परिवारका चारैजना सदस्यहरू जागिरे भएर पनि घरमा अभावै अभाव देखिएको छ । साथै कथामा तत्कालीन समयमा देखापरेका राजनीतिक विकृतिका कारण सहरी क्षेत्रमा बसोबास गर्ने परिवारलाई कार्यालय जान धेरै सङ्कट परेको र त्यसबाट परिवारको बिजोगसमेत भएको सत्य तथ्य यथार्थलाई देखाइएको छ । हाम्रो समाजमा सासू र बुहारी बीच चल्ने सम्बन्धलाई पनि यस कथाले उदाहरण पारेको छ । २०६३ सालतिर राजनीतिक असङ्गतिका कारण धेरै बन्द र हड्डिताल हुने गरेको र त्यसबाट उत्पन्न समस्याले धेरै घर परिवारको बिजोग भएको यथार्थलाई बिजोग कथाले आत्मसात् गरेको छ । त्यसैगरी परिवारमा सबै जागिरे भएपनि एकले अर्काको भावना नबुझ्दा परिवार असन्तुलित हुन्छ भन्ने सन्देश पनि यस कथाले दिएको छ । परिवार मिलेर बस्दामात्र सबै कुरामा खुशी बाँड्न सकिन्छ नत्र सुरेशलेजस्तै एकलै आफ्नो भावना अरूपमा बाँड्ने मौका पाइदैन भन्ने विचार पनि कथामा अभिव्यक्त देखिन्छ । अभिधामूलक अर्थ सापेक्ष रहेको प्रस्तुत कथामा आन्तरिक केन्द्रीय

दृष्टिविन्दुको प्रयोग गरिएको छ । कथानक ढाँचा रैखिक रहेको प्रस्तुत कथामा संवृत्त रूपविन्यासको प्रयोग गरिएको छ । यथार्थवादी शैलीमा लेखिएको यो कथामा सरल तथा स्वाभाविक भाषाशैलीको प्रयोग भएको छ । साथै कतिपय ठाँउमा राजनैतिक सुहाउँदो भाषाशैली पनि प्रयोग गरिएको छ ।

समग्रमा भन्नुपर्दा बिजोग कथा यथार्थवादी धारामा लेखिएको छ । यसमा पारिवारिक तथा राजनैतिक असङ्गतिले उत्पन्न समस्यालाई देखाइएको छ । यस कथाले राजनैतिक व्यवस्थामा सन्तुलन भएमात्र समाजमा सुधार हुनसक्छ नन्हे सुरेशका परिवारमा जस्तै विजोगको अवस्था थपिदै जान सक्छ भन्ने सन्देश दिएको छ ।

#### ४.५.३ फोनको घण्टी

पाण्डेयद्वारा लिखित फोनको घण्टी कथा सामाजिक यथार्थवादी धारामा लेखिएको

छ । पाण्डेयले यस कथामा सहरी परिवेशमा घटित हुने यथार्थलाई देखाएका छन् । रामकृष्ण, सुमित्रा, करुणा, चमेली, रूपक, नमिताजस्ता पात्रलाई प्रयोग गरेर लेखिएको यस कथामा सहरीया मानिसहरूको जीवनशैली र रहनसहनको यथार्थ चित्रण गरिएको छ । पाण्डेयले कथामा यथार्थवादी शैलीलाई आत्मसात् गर्दा पात्र चयन र विषयवस्तुको प्रस्तुतीकरण नै मूल आधार बनेको छ । प्रस्तुत कथामा यसै अनुरूप सहरी समाजका परिवारमा देखापर्ने असङ्गतिलाई रामकृष्णका परिवारले स्पष्ट्याएको छ । घरको मुली मान्छे नै नराम्रो आचरणमा फसेपछि उसका श्रमिती, छोरा, छोरीले पनि राम्रो शिक्षा पाउँदैनन् र नराम्रो व्यवहार गर्न पुग्छन् भन्ने यथार्थलाई कथाले व्यक्त गरेको छ । परिवारमा मूल भूमिका खेल्ने आमाबुबाले राम्रो शिक्षा दिन सकेमात्र छोरा छोरीले तिनको अनुसरण गर्न सक्छन् नन्हे भन्ने परिवारको वातावरण तहसनहस हुन्छ भन्ने उद्देश्य कथाले देखाएको छ । काम गर्ने मान्छे घरमा राखी मोजमस्तीमा बस्ने सहरीया मध्यमवर्गीय परिवारको यथार्थचित्रण गरिएको यो कथाको अर्थसापेक्ष अभिधामूलक रहेको छ ।

प्रस्तुत कथामा बाट्य दृष्टिविन्दुको प्रयोग गरिएको छ । कथाको मुख्य पात्रका रूपमा रामकृष्ण रहेको छ । उसकै परिवारमा कथावस्तु आधारित रहेको छ । रैखिक कथानक ढाँचामा रचिएको यस कथाको कथावस्तु समसामयिक विषयवस्तुमा आधारित छ । विषय सुहाउँदो भाषाशैलीको प्रयोगले कथा अझै सम्प्रेषणीय बनेको छ । कथामा कतिपय ठाउँमा व्याकरणगत विचलन पनि पाइन्छ । जस्तै: “घरपुगदा सुनसानजस्तो

लाग्यो

उसलाई ।” यस कथामा उच्च आदरार्थी शब्दको प्रयोग पनि भएको छ । जस्तै : “हजुर उठिस्यो” आदि । प्रस्तुत कथालाई मनोवैज्ञानिक रूपमा पनि हेर्न सकिन्छ । फोनको घण्टी पनि सहरी समाजमा आज विकृतिको भाँडो बनेको छ जसले परिवारलाई नराम्रो बाटो देखाएको छ । यौनलाई महत्त्व दिएर लेखिएको प्रस्तुत कथामा मध्यम वर्गीय स्तरलाई केन्द्रित गरेर केबल प्रेम, प्रणय र सम्भोगभित्र केन्द्रित संस्कारको भलक पाइन्छ । सहरी समाजदेखि ग्रामीण समाजसम्म आज फोन महत्त्वपूर्ण साधन बनेको छ । त्यसैले फोनलाई सही ठाउँमा प्रयोग गरेमात्र त्यसले सही सन्देश दिनसक्छ भन्ने सन्देश कथाले व्यक्त गरेको छ । सबैका लागि अति आवश्यक रहेको फोनलाई सही रूपमा मात्र प्रयोग गराउँ भन्ने उद्देश्य राखेर पाण्डेयले यस कथाको सिर्जना गरेका हुन् ।

#### ४.५.४ स्वार्थ

कथाकार हरिप्रसाद पाण्डेय आधुनिक नेपाली कथा क्षेत्रमा सामाजिक यथार्थवादी धारामा कथा लेख्ने कथाकार हुन् । उनका कथा यथार्थवादमा मात्रै सीमित भने देखिदैनन् । उनले आदर्शोन्मुख यथार्थवादको प्रयोग पनि गरेका छन् । स्वार्थ कथा पनि अन्जान कथासङ्ग्रहभित्र सङ्कलित कथा हो । यो कथाको कथावस्तु रूपाको जीवनमा घटित भएका घटनाहरूसँग सम्बन्धित छ । नन्दलाई छिटै विवाह गरिदिएदेखि आफूमात्र घरको मालिकनी बन्न पाउने अभिलाषामा एउटी भाउजुले देखाएको स्वार्थलाई यस कथामा प्रस्तुत गरिएको छ । स्वास्नीको डरमा परी यथार्थ थाहा हुँदाहुँदै पनि आफ्नी बहिनीलाई केदारजस्तो व्यक्तिसँग विवाह गरिदिने दाजुको

चरित्रलाई कथामा उजागर गरिएको छ । यिनै समसामयिक विषयवस्तुको सञ्जालमा कथाको निर्माण भएको छ ।

प्रस्तुत कथामा म पात्रका रूपमा रूपमा रहेकी छ । यसको विवाह भएको एकवर्षसम्म पनि रूपाको लोगनेले उसलाई सुखभोग गरेको छैन । त्यसैले रूपाको मनमा आगो दन्केको छ । उसले एकदिन केदारसँग केही प्रश्न गर्दै । केदारले खुलेर सुरेशले गरेको कुरा बताउँछ साथै कल्याणीको घरमा भएको घटना पनि सुनाउँछ । ती सबैकुरा सुनिसकेपछि रूपा भोलिपल्ट विहान माइततिर लाग्छे । दाजु र भाउजुप्रति उनको मनमा धृणाको ज्वाला दन्किरहन्छ । रूपाले पचासवटा निद्रा लाग्ने औषधि बोकेर माइततिर गएकी थिई । यसरी स्वार्थ कथाको कथावस्तुको अन्त्य भएको छ । कथाकार पाण्डेयले हाम्रो ग्रामीण तथा सहरी समाजलाई कथाको पृष्ठभूमि बनाएर त्यस समाजका मूल्य मान्यतालाई मूल विषयवस्तु बनाएका छन् । स्वार्थ कथाको रीतिक्षेत्र यथार्थवाद रहेको भए पनि पूर्वजन्मको पापको कुरा गरेकाले कथा केही हदसम्म आदर्शवादतर्फ ढलिएको छ । यस कथामा रूपाका दाजु भाउजुले रूपालाई केदारजस्तो व्यक्तिसँग विवाह गरिदिएर मानसिक यातना दिएका छन् । त्यसको बदला स्वरूप रूपाले क्रान्ति नगरी नातागोता सबैलाई त्यागी माइतमा नै आएर मर्ने विचारले कथा टुडिगको छ । आफ्नै मामाको छोरासँग बिग्रेकी भाउजुले यौन दुर्बलतामा परेको व्यक्तिसँग नन्दको विवाह गराउन लोगनेलाई अहाएर नन्दको पराजय हेन सक्ने नारी पनि हाम्रा समाजमा रहेका छन् भन्ने सन्देश कथाले व्यक्त गरेको छ । यस कथाले स्वार्थ स्वार्थले नै सबै कुरा बिग्रन्छ र परिवारको विघटन हुन्छ भन्ने कुरालाई देखाएको छ । सानो स्वार्थका कारण भाउजुले रूपाको जिन्दगीको खेलवाड गरेकी छ । आफ्ना परिवारका लागि दाजुले पनि जान्दाजान्दै यौन दुर्बलता भएको केटासँग रूपाको विवाह गरिदिएर बहिनीलाई मानसिक यातना दिएको छ । पाण्डेयले यस कथामा यौनविना मानिसको जीवन अपूर्ण हुन्छ भन्ने कुरालाई मनोवैज्ञानिक ढड्गामा प्रस्तुत गरेका छन् । स्वार्थले मान्छेलाई माथि होइन तल गिराउँछ भन्ने अभिधात्मक अर्थ बोकेको यस कथामा आन्तरिक केन्द्रीय दृष्टिकोणको प्रयोग गरिएको छ । यसको कथावस्तु रैखिक ढाँचामा तयार भएको छ । संवृत्त रूप

विन्यासको प्रयोग गरिएको उक्त कथामा सरल तथा स्वाभाविक भाषाशैलीको प्रयोग गरिएको छ ।

#### ४.५.५ नाता

नाता कथा सामाजिक विषयवस्तुमा आधारित रहेको छ । यसमा पाण्डेयले हाम्रा समाजमा नाताका नाममा हुने गरेका विकृत पक्षलाई विषयवस्तु बनाएका छन् । प्रमुख पात्र विनिताको जीवनसँग सम्बन्धित कथावस्तुमा नै कथाअगाडि बढेको छ । कथामा भाइको रहर भएकी विनिता र तिहारमा दाई मानेर टीका लगाई नातासम्बन्ध जोडेकी विपनाका वीचमा कुराकानी हुन्छ । विपनाको दाजु भनाउँदोले विपनालाई भगाएर दिल्ली पुऱ्याएको घटना पनि कथामा व्यक्त गरिएको छ । विनितालाई भने कसैसँग दाजुको नाता जोड्न मन लाग्दैनथो तर बुबाले साथीको छोरालाई तिहारमा टीका लगाउनु पर्ने कुरा गर्दा विनिताले रूपा र विपनाको सम्झना गर्दै कथाको अन्त्य भएको छ । यथार्थवादभित्र यौनलाई केन्द्रविन्दु बनाएर लेखिएको यस कथामा स्वार्थको गन्ध मजाले पाइन्छ । यथार्थवादीहरू सामान्य विषयवस्तुलाई नै आफ्नो कथाको विषय बनाउँछन् । यस दृष्टिकोणबाट हेर्दा पनि नाता कथाको रीतिक्षेत्र यथार्थवाद रहेको छ । यस कथाले हाम्रो समाजमा दाजुको नाता जोडी यौनका स्वार्थमा आफ्नो भोक मेटाउने व्यक्तिहरू पनि रहेका छन् भन्ने देखाएको छ । दाजुको नाता जोडी पछि विवाहको नाटक गर्ने र बेचबिखनसमेत गर्न पछि नपर्ने धूर्त व्यक्तिहरूको यथार्थ घटनालाई पनि कथाले प्रस्तुत गरेको छ ।

समग्रमा नाता कथा समाजमा नाताका नाममा जोडिएका विविध विकृतिहरू देखाउन सफल छ । बहिनीको नाता जोडी आफ्नो यौनइच्छा मेटाउनका लागि गरिने कुकर्मले जन्माउने समस्यालाई कथाले व्यक्त गरेको छ । प्रस्तुत कथाको अर्थ अभिधात्मक रहेको छ । नाता कथाले समाजमा नाताका नाममा हुने गरेका यस्ता परम्पराबाट समयमा नै सजग रहन गहन सन्देश दिएको छ । यस कथामा जस्तै हाम्रा समाजमा पनि नाताका नाममा महिलाको बेचबिखन भएको छ, यौन, शोषण भएको छ । यस्ता कुराहरूबाट जोगिनका लागि यो कथा मार्गदर्शन बन्ने देखिन्छ ।

प्रस्तुत कथा यथार्थवादी धारामा आधारित रहेर लेखिएको छ। यसको कथानक ढाँचा रैखिक रहेको छ। यस कथामा आन्तरिक केन्द्रीय दृष्टिविन्दुको प्रयोग भएको छ। सरल तथा हृदयस्पर्शी संवादले कथा सम्प्रेषणीय रहेको छ। हालको समयमा नाताका नाममा समाजमा देखापरेका विकृति र तिनबाट उत्पन्न समस्यालाई देखाउनु नै यस कथाको सारवस्तु हो। हाम्रो समाजमा दाजु-बहिनीको नातामा बाँधिएका कति दिदीबहिनीहरू कथामा जस्तै यौन शोषणमा रुमलिएका छन् त कति विदेशमा बेचिएर अलपत्र परेका छन् त्यस्ता कु-कर्म गर्नेहरूबाट जोगिएर समयमा नै विचार पुऱ्याउनु पर्ने सन्देश कथाले व्यक्त गरेको छ। त्यसैले कथा छोटो आयातनमा लेखिएको भए पनि गहन सन्देश दिन सफल रहेको छ।

#### ४.५.६ सन्ते

कथाकार हरिप्रसाद पाण्डेयद्वारा लिखित सन्ते कथाले जातीय छुवाछुतका नाममा समाजमा देखिने विकृतिलाई देखाएको छ। यो कथा अछुत भनिने सन्ते र पण्डित बाजेका घटनामा आधारित देखिन्छ। समाजमा तल्ला जातका भनिने मानिसलाई पण्डितहरूले कसरी हेलाँ गर्दछन् भन्ने कुरा यस कथामा देखाइएको छ।

|   |    |       |        |       |
|---|----|-------|--------|-------|
| सन्ते   | यस | कथाको | प्रमुख | पात्र |
| हो। ऊ खँलाती चलाएर जीवननिर्वाह गर्ने व्यक्ति हो। यस कथामा पण्डितले करुवा टाल्नका लागि सन्तेलाई दिन लाग्दा सन्तेले छोएको निहँमा पण्डितले सन्तेलाई गाली गरेको घटनासँगै कथाअगाडि बढेको छ। आफैसँग मनमा कुरा खेलाईरहेको बेलामा मुण्डे दमाई ठूलोठूलो स्वरमा कराईरहेको र धेरै मान्छे उसका घर अगाडि जम्मा भएको देख्न पुग्यो। सन्ते भगडा भएतिर लाग्यो। मुण्डे दमाईकी छोरीलाई पण्डितले बलात्कार गरेका रहेछन्। पहिला आफूसँग पण्डितले गरेको व्यवहार सम्झँदा सम्झँदै पण्डित र सन्तेका आँखा जुधै कथाको अन्त्य भएको छ। |    |       |        |       |

ग्रामीण समाजमा जातका नाममा हुने गरेका घटना तथा जीवनशैलीलाई कथामा जुन आधार बनाइएको छ त्यही नै यस कथाको रुचिक्षेत्र हो। पाण्डेय सामाजिक विषयवस्तुलाई लिएर कथा लेख्ने कथाकार हुन्। त्यसैअनुरूप उनको सन्ते कथामा पनि सामाजिकताभित्र यथार्थलाई संयोजन गरिएको छ। यथार्थको प्रयोग

हुँदाहुँदै पनि प्रस्तुत कथामा केही भाग्यवादका कुरा गरिएकाले कथा यथार्थोन्मुख आदर्शवादतर्फ ढल्किएको छ । उनले यस कथामा सन्ते, मुण्डे, जमुनी, पण्डितजस्ता पात्रहरूको प्रयोग गरेका छन् । हाम्रा समाजमा विद्यमान जातीय भेदभावलाई उनले आफ्नो कथाको विषयवस्तु बनाएका छन् । जातीय छुवाछुतका आधारमा समाजमा रहेका पण्डित भनाउँदाहरूले सन्ते तथा मुण्डेजस्ता साना जातका मानिने व्यक्ति तथा तिनका परिवारलाई कसरी हैपिरहेका छन् भनी यथार्थ बोध गराउन सक्नु नै यस कथाको उद्देश्य रहेको छ । ठूला जातका मानिने पण्डितहरूको करुवा भने सन्तेजस्ता साना जातका मानिसले टाल्नुपर्ने तर छुन भने भेदभाव गर्ने कु-संस्कारको अन्त्य गर्न मुण्डेजस्ता साना जातका मानिने व्यक्तिबाट नै क्रान्तिको थालनी हुनुपर्ने आकाङ्क्षालाई कथाले प्रष्ट पारेको छ । यस कथाको मुण्डे पात्रकी छोरीलाई पण्डितले बलात्कार गरेको छ । त्यो कुरा मुण्डेले थाहा पाएपछि सङ्घर्षमा उत्त्रिएर पण्डितको विरोध गरिरहेको छ । यसैगरी सबै साना मानिने व्यक्तिहरूले आफ्ना कुराहरू नडराई व्यक्त गर्न सकेमात्र समाजमा पण्डितजस्ता धूर्त व्यक्ति ठेगान लाग्दछन् भन्ने सन्देश पनि कथाले बोकेको छ । सन्ते कथा पात्रको नाममा राखिएको र सारवस्तुलाई सरल र स्पष्ट ढङ्गबाट प्रक्षेपण गरेको हुनाले अर्थसापेक्ष अभिधामूलक रहेको छ । कथामा सन्तेको मानसिक संसारको विचरण मात्रै गरिएको हुनाले बाह्य सीमित दृष्टिबिन्दुको प्रयोग गरिएको छ । कथानक ढाँचा रैखिक रहेको छ । पण्डित बाजेले सन्तेलाई करुवा टाल्ल लगाउनु कथाको आदि भाग हो, मुण्डे दमाइले ठूलो स्वरमा सबै सामु आफ्ना कुरा राख्नु मध्य भाग हो भने पण्डित बाजे र सन्तेका आँखा एकाएक जुध्नु यस कथाको अन्त्य भाग हो । यथार्थवादी शैलीमा लेखिएको यस कथामा संवृत्त रूपविन्यासको प्रयोग गरिएको छ । सरल तथा विषय सुहाउँदो पात्र तथा हृदयस्पर्शी संवादले कथा रोचक बनेको छ । यसरी जातीय विभेदका विकृति र छुवाछुतमा आधारित विषाक्त गतिविधिलाई सन्तेका आँखाले प्रश्न गरिरहेको देखाएर समाज परिवर्तनको आकाङ्क्षा प्रस्तुत कथाले राखेको छ ।

#### ४.५.७ किनारा

कथाकार पाण्डेयद्वारा लिखित किनारा कथा ऊ पात्रको केन्द्रीयतामा रचिएको छ । साथै ऊ पात्रकै सम्भन्ना र सोचाईमा घुमेर संस्मरणात्मक शैलीमा लेखिएको छ । प्रस्तुत कथा किरणको जीवनसँग सम्बन्धित रहेको छ । यस कथामा निसन्तानको कारणबाट उत्पन्न पारिवारिक विसङ्गतिलाई देखाइएको छ । कथाको मुख्य पात्र किरण लट्टीकै सहारामा इन्द्रचोकमा आइपुगेर एउटा साडी पसलमा उसका आँखा ठोकिकदा विगतका घटनाको संस्मरण हुन पुग्छ । सन्तान नभएका कारण उसकी श्रीमती कमला घरबाट हिँड्छे र घर पनि लिलाममा परेको हुन्छ । त्यसपछि किरण डेरामा बस्न थाल्छ ऊ विस्तारै रक्सीको कुलतमा लाग्दछ । ऊ अहिले लट्टीको सहारामा पाइला सार्दै

छ । किरणले यही आफ्नो विगत सम्भिरहेको बेलामा एउटा गाडिले हर्न बजाउँदा उसले कमला र हाकिमलाई देख्न पुग्छ र ऊ एकोहोरो हेरिरहन्छ । यसरी प्रस्तुत कथाको कथावस्तु टुङ्गिएको छ ।

कथाको रचना विधानका आधारमा कथालाई हेर्दा यस कथाको रुचिक्षेत्र सहरी परिवेशको मूल्य र मान्यतालाई मुख्य विषयवस्तु बनाइएको छ । किरण, कमला र हाकिमजस्ता पात्रहरूको प्रयोगगरी सहरी समाजमा बसेका मानिसहरूको काल्पनिक कथालाई यहाँ प्रस्तुत गरिएको छ । सन्तानबिना मातृहृदय कहिल्यै पूर्ण हुँदैन, त्यसले परिवारको वातावरण नै धमिल्याउँछ, भन्ने कुरालाई यस कथाले व्यक्त गरेको छ । यस कथामा किरणकी पत्नी सन्तान नभएकै कारण घरमा बस्न नसकेकी र किरणले आफ्नो घर तथा पत्नी गुमाउनु परेको छ । ऊ जीवनबाट नै किनारा लाग्न लागेको देखाएकाले कथाको अर्थ सापेक्ष अभिधामूलक नभई केही प्रतीकात्मक पनि बनेको छ । ऊ पात्रको केन्द्रीयतामा रचिएको प्रस्तुत कथा बाट्य सीमित दृष्टिबिन्दुमा केन्द्रित रहेको छ । प्रस्तुत कथाको कथानक ढाँचा पूर्ण रैखिक नभए तापनि संवृत्त रूप विन्यासको प्रयोग गरिएको छ । यस कथामा विषयवस्तु सुहाउँदो सरल भाषाशैली र आलड्कारिक अभिव्यक्तिको प्रयोग भएको छ । वाक्यगठनका दृष्टिले सामान्यतया सरल वाक्यहरूकै प्रयोग ज्यादा देखिन्छ भने संयुक्त तथा मिश्र वाक्यहरूको प्रयोग

पनि सरल रूपमा भएको छ । कथाकार पाण्डेयले खुशीसाथ जीवन बिताउनका लागि सन्तान पनि अपरिहार्य हुन्छ भन्ने कुरालाई देखाउन यो कथाको सिर्जना गरेका छन् ।

#### ४.५.८ परिणाम

प्रस्तुत कथा सहरी परिवेशमा घटित प्रमुख पात्र कृष्णको जीवनमा आधारित छ । बाबु-आमाको एक्लो छोरो कृष्ण र रामनारायण सुवेदीकी छोरी कमलाका बीचमा प्रेम

बस्छ । दुबैजना घरबाट भागेर कास्मीरसम्म जान्छन् । पैसा छउञ्जेल केही समय दुबैको राम्रो सम्बन्ध रहन्छ । पैसाको अभाव भएपछि कृष्ण कामको खोजीमा भौतारिन थाल्छ । कमला भने होटल मालिकको छोरासँग नजिकिन थाल्छे । एकदिन कृष्ण कामबाट घरमा फर्कदा कमलाले भएको अलिकति पैसा तथा लुगाफाटो बोकेर कोठाबाट भागेकी हुन्छे । त्यसपछि कृष्ण ज्वरोले थला पर्छ, कमलालाई खोज्छ कतै भेटाउदैन । ऊ कोठाबाट निकालिन्छ । कृष्ण चौराहामा रूखमुनि गएर बस्छ । उसले सुन्दर सिंह र कमलालाई देख्छ र ऊ त्यही पलिट्न्छ ।

प्रस्तुत कथामा प्रेमको परिणाम कृष्ण र कमलाको जस्तो पनि हुनसक्छ भन्ने सन्देश दिइएको छ । आजको जमानामा प्रेम पैसामा किनबेच हुनेजस्तो देखिन्छ, जुन कमलाले कृष्णलाई गरेकी छ । यो कथा समाजमा घटित हुनसक्ने यथार्थ र केही काल्पनिक कुरालाई लिएर लेखिएको छ । हाम्रो समाजमा हुने गरेका प्रेम र पैसाको अभावमा स्वार्थी बनी सच्चा प्रेमीलाई दिएको धोकालाई मुख्य विषयबस्तु बनाएर यो कथा लेखिएको छ । कृष्ण, कमला र सुन्दर सिंह मुख्य पात्र रहेको उक्त कथामा एउटी नारीको स्वार्थी प्रेमको प्रस्तुति भएको छ । यस कथाको रीतिक्षेत्र यथार्थवादभित्र मनोविज्ञान रहेको छ । आर्थिक, सामाजिक तथा पारिवारिक भावनाले मान्छेलाई कहाँसम्म अन्धो बनाउँछ भन्ने कुरा कथामा देखाइएको छ । नारीहरूको अलझ्कारप्रियता र त्यसबाट उत्पन्न समस्याले एउटा सच्चा प्रेमीको जीवन बर्वाद हुन्छ भन्ने सारवस्तु कथाले बोकेको छ । कमला आदर्श प्रेम गर्ने बहानामा कृष्णसँग कास्मीरसम्म जान्छे । भनेजति पैसा कमाउन नसकी कामको खोजीमा भौतारिएको कृष्णलाई सहयोग गर्नुको सट्टा उल्टै सुन्दर सिंहसँग नजिकिन्छे । हाम्रो समाजमा

प्रेमलाई भन्दा पैसा तथा धनलाई महत्त्व दिई आफ्नो स्वार्थ पूरा गर्ने नारीहरू पनि छन् । त्यसको परिणामले एउटा आदर्श व्यक्ति तथा सच्चा प्रेमी कृष्णको जीवन बर्वाद हुनपुगेको छ, भन्ने यथार्थलाई यस कथाले आत्मसात् गरेको छ । सच्चा प्रेम गर्ने प्रलोभनमा परी आफ्नो परिवारलाई समेत त्यागी एउटी नारीको पछि लागदा र त्यस नारीले आफूलाई दिएको धोकाले कृष्ण नराम्रो परिणाम भोग्न पुग्छ भन्ने देखाएकाले कथाको अर्थसापेक्ष अभिधामूलक रहेको छ । बाह्य सीमित दृष्टिविन्दुको प्रयोग गरिएको परिणाम कथामा रैखिक कथानक ढाँचाको प्रयोग गरिएको छ । कृष्ण र कमलाको प्रेम बस्नु कथाको आदि भाग हो । कास्मीरमा कमला कृष्णलाई छोडी सुन्दर सिंहसँग भाग्नु मध्य भाग हो भने कृष्ण चौराहामा माग्नेजस्तो भएर सुतेको बेलामा कमला र सुन्दर सिंहलाई देख्नु कथाको अन्त्य भाग हो । सरल तथा स्वाभाविक भाषाशैलीको प्रयोग गरिएको प्रस्तुत कथामा संवृत्त रूपविन्यासको प्रयोग भएको छ । साथै कथामा स्थानीय कथ्य भाषा हिन्दीको प्रयोग र व्याकरणिक विचलनयुक्त सुमधुर भाषाको प्रयोग भएको छ ।

#### ४.५.९ सङ्गत

हरिप्रसाद पाण्डेय सामाजिक कथा लेख्ने कथाकार हुन् । प्रस्तुत कथामा उनले ग्रामीण तथा सहरी समाजलाई कथाको पृष्ठभूमि बनाएर त्यस समाजका मूल्य र मानकहरूलाई मूल विषयवस्तु बनाएका छन् । विवाहका नाममा हुने गरेका विकृतिलाई प्रस्तुत कथामा देखाइएको छ । विश्वासमा परेर आमाबुवाले छोराछोरीको विवाह गर्ने परम्परा तथा खराब साथीको सङ्गतले पाइने धोकाको यथार्थ प्रस्तुति कथामा भएको छ । प्रस्तुत कथा यशोदाका जीवनमा घटित भएका घटनाहरूमा आधारित छ । म पात्रले यशोदालाई सोधेको प्रश्न र यशोदाले संस्मरणात्मक शैलीमा बताएको उत्तरहरूबाट सङ्गत कथाको निर्माण भएको छ । रातको समयमा यशोदा भाग्दै म पात्रको घरको पर्खालको आडमा लुकेकी हुन्छे । म पात्रले यशोदालाई घरमा लान्छ । त्यसपछि यशोदाले आफ्ना जीवनका घटनाहरू संस्मरणात्मक शैलीमा बताउन थाल्छे । अर्काको विश्वासमा परी आमाबाबुको ढिपीले गर्दा यशोदाको विवाह काठमाडौं बस्ने केटासँग हुन्छ । विवाहपछि लोगनेबाट आफू बेचिन लागेको थाहा

पाएपछि यशोदा भाग्दै त्यहाँ आइपुगेकी हुन्छे । यसरी कथाको अन्त्य संस्मरणात्मक शैलीमा प्रस्तुत भएको छ । ग्रामीण तथा सहरी समाजको यथार्थलाई कथाको आधार बनाइएको यस कथाको रुचिक्षेत्र सामाजिकताभित्र यथार्थवाद हो ।

प्रस्तुत कथामा म पात्र, यशोदा, शकुन्तला, यशोदाको लोगने दलाल आदि पात्रहरूको प्रयोग भएको छ । सङ्गत कथा हाम्रा समाजमा विवाहका नाममा दलालका हातमा परी बेचिन लागेको नारीको अन्तर्वेदना हो । सामान्य चिनजानकै भरमा छोरीको विवाह गरिदिने अशिक्षित बाबु-आमाले गर्दा पनि नारीहरू बेचिन पुगेका छन् । विवाह गर्दा आफूले चिनजानेका मानिससँग मात्रै गर्नुपर्द्ध, धन सम्पत्ति धेरै छ भन्दैमा राम्रोसँग कुरै नवुभी टाढाको व्यक्तिसँग गर्दा एउटी नारीको जीवन दलालको हातमा पनि पर्नसक्छ भन्ने कुरा कथामा व्यक्त गरिएको छ । समयमा नै यस्ता कुराबाट सजग रहन सकेमात्र हाम्रा चेलीबेटी बेचिदैनन् भन्ने उद्देश्य कथाले व्यक्त गरेको छ । कथाको मूल विषयवस्तुसँग सङ्गत शब्द आफैमा प्रतिक बनेर आएको छैन । त्यसैले सङ्गत कथाको अर्थसापेक्ष अभिधात्मक रहेको छ । यशोदाका जीवनमा घटित भएका घटनामा आधारित यो कथामा आन्तरिक परिधीय दृष्टिबिन्दुको प्रयोग भएको छ । कथा संस्मरणात्मक शैलीमा लेखिएको छ । यसका आदि, मध्य र अन्त्यको श्रृङ्खला क्रमिक रूपमा रहेको छ । समाजमा हुनसक्ने तथा घटित भएका यथार्थ पक्षलाई कथामा व्यक्त गरिएको छ । विवाहका नाममा केटी बेच्ने दलालबाट समयमा बच्न पर्ने उद्देश्य लिएर प्रस्तुत कथाको रचना भएको हो । छोटा वाक्यगठन तथा सरल भाषाशैलीको प्रयोगले कथा रोचक बनेको छ । यस कथाले समाजमा खराब व्यक्तिको सङ्गतबाट बच्न समायमा नै सचेत रहनु पर्छ भन्ने सन्देश दिएको छ ।

#### ४.५.१० मेरो भूल

मेरो भूल कथा संस्मरणात्मक शैलीमा लेखिएको छ । जुन ‘म’ पात्रको केन्द्रीयतामा ‘ऊ’ पात्रकै सम्भन्ना र सोचाइमा घुमेको छ । मीनाको सम्भन्नामा रहेको म पात्रको छटपटी र निराशालाई कथामा देखाइएको छ । समाजमा युवा-युवतीका

बीच हुने गरेका माया प्रेमको सम्बन्धलाई यस कथाले व्यक्त गरको छ । ‘म’ पात्र आफ्नी प्रेमिका मीनाको सम्झनामा मनमा अनेक कुरा खेलाउँछ । उसले मीनाको रहस्य थाहापाउन रोशनीलाई पनि भेटछ । एकदिन मीना अफिसमा आफूपुग्नु भन्दा दस मिनेटअगाडि आएर एउटा चिठी छोडिदिन्छे । आफू ढिला भएकाले मीनासँग भेट गर्न नसकेकोमा आफ्नो भूल सम्झौदै म पात्रका मनमा मीनाको खोजी र चाहना बढ्न थाल्छ, यतिकैमा कथा सकिन्छ ।

प्रस्तुत कथामा ‘म’ पात्र, मीना, रोशनी पात्रहरूको प्रयोग गरिएको छ । यो कथा यौनलाई केन्द्रबिन्दु मानेर लेखिएको सामाजिक कथा हो । कथा सहरी परिवेशमा व्याप्त युवा-युवतीको जीवनशैलीमा आधारित देखिन्छ । कथाको रीतिक्षेत्रलाई हेर्दा सामाजिकता भित्र यथार्थवादको संयोजन भए पनि केही मात्रामा काल्पनिक पनि रहेको छ । कथाकार पाण्डेयका कथाहरू ग्रामीण परिवेशमा मात्र सीमित छैनन् । उनले प्रायजसो कथाहरूमा शिक्षित पात्र तथा सहरी परिवेशलाई आफ्नो रुचिक्षेत्र बनाएका छन् । सानो भन्दा सानो विषयवस्तु पनि उनका कथामा रोचक बनेर देखिएका छन् । यस कथामा कुलतमा फसेका अभिभावकको कारणले घरमा आफ्नो सुरक्षा नदेखेपछि उमेर पुगेका युवतीहरूले घर छोड्न बाध्य हुनुपर्दछ भन्ने सारवस्तु रहेको छ । घरको प्रमुख अभिभावकले आफ्ना छोराछोरीको कुरालाई बुझ्न नसक्दा छोरा-छोरीमा निराशा पैदा हुन्छ भन्ने कुरा कथामा देखाइएको छ । मीनाका बाबु र दाजु पनि रिसाहा खालका थिए । उनीहरूले मीनाको भावनालाई बुझ्न खोजेनन् भन्ने कुरा देखाउन पाण्डेयले यो कथाको रचना गरेका हुन् ।

प्रस्तुत कथाको ‘म’ पात्र मीनालाई भेट्न नसक्नु आफ्नो भूल सम्झौदै भौतारिएको

छ । कथाको मूल विषयवस्तुसँग मेरा भूल शीर्षकको सम्बन्ध केवल घटनासँग मात्र रहेको छ । त्यसैले कथाको अर्थसापेक्ष अभिधात्मक नै देखिन्छ । संस्मरणात्मक शैलीमा लेखिएको यस कथामा आन्तरिक परिधीय दृष्टिबिन्दुको प्रयोग गरिएको छ । यसको कथानक ढाँचा आदि, मध्य र अन्त्यमा केन्द्रित भएकाले रैखिक नै देखिन्छ । विषयवस्तु सुहाउँदो सरल तथा स्वाभाविक भाषाशैलीले कथा सम्प्रेषणीय रहेको छ । पात्रअनुकूल रहको हृदयस्पर्शी संवादमा लेखिएको उक्त कथामा संवृत्त रूपविन्यासको

प्रयोग गरिएको छ । आफ्नो प्रेमीको भावनालाई समयमा नै बुझ्न नसक्नु र मात्रको भूल भएको देखाउनु प्रस्तुत कथाको उद्देश्य रहेको छ ।

#### ४.५.११ अन्जान

हरिप्रसाद पाण्डेय सामाजिक कथा लेखे कथाकार हुन् । उनले आफ्ना कथाहरूमा सामाजिक विषयवस्तुलाई प्रदान गरेका छन् । समाजमा विद्यमान् विविध विकृत पक्षलाई आफ्ना कथामार्फत पाठकसामु प्रस्तुत गर्नु उनको उद्देश्य रहेको छ । प्रस्तुत कथा म पात्रको जीवनमा आधारित रहेको छ । अन्जान कथामा प्रमुख चारजना पात्रहरू रहेका छन् । यसमा ‘म’ पात्रलाई अफिस जान ढिला हुँदा उसका मनमा घरका सबै सदस्यको कामको याद आउँछ । म पात्रकी छोरी सुनिता ट्राभल एजेन्सिमा जागिरे छे । छोरो बेरोजगार भएकोले लागूपदार्थ सेवन गर्दछ । उसकी श्रीमती पूजाआजा र घरको काममा व्यस्त छिन् । यी आदि कुराहरू मनमा खेलउँदा खेलाउँदै म पात्रले घरका पात्रलाई मैले बुझ्न सकिन, म अन्जान भएँ भन्ने सोच्दा सोच्दै कथाको अन्त्य भएको छ ।

प्रस्तुत कथाले सहरी क्षेत्रमा बस्ने मध्यमवर्गीय परिवारलाई आफ्नो रुचिक्षेत्र बनाएको छ । यसको रीतिक्षेत्र सामाजिकताभित्र यथार्थवादको संयोजन रहेको देखिन्छ । सहरी समाजमा रहेका मध्यम वर्गीय परिवारका समस्याको उद्घाटन गर्नु कथाको उद्देश्य रहेको छ । उनले सामाजिक कथाभित्र विषयवस्तुलाई यथार्थको संयोजन गर्दा सूक्ष्म र नगन्य विषयलाई लिएर पनि अत्यन्त रोचक ढड्गबाट प्रस्तुत गरेका छन् । उनका कथामा प्रेम वा रतिरागका नाममा कति पनि अशिष्टता व्यक्त गरिएको छैन । तर कुनै न कुनै रूपमा प्रेम तथा रतिरागको सङ्केत पाइन्छ । यस कथामा म पात्रलाई अफिस जान सधैँ ढिला हुन्छ । छोरी सधैँ भात नखाई अफिस जान्छे, बेरोजगारी समस्याले छोरो कुलतमा फसेको छ । श्रीमती पूजापाठ तथा घरधन्दामा व्यस्त छे । घरका सबै परिवारलाई आ-आफ्नै स्वतन्त्रतामा देखिनुले म पात्र पनि आफ्नै बारेमा नजान्ने देखिएको छ । यसरी परिवारमा एकले अर्काको कर्तव्यको बोध नगरेको देखाउनु नै कथाको सारवस्तु रहेको छ । साथै अन्जान कथाले

समाजमा शिक्षित बेरोजगारीले निम्त्याएको समस्यालाई पनि देखाएको छ । परिवारमा एकले अर्काको भावना नबुझी आ-आफ्नो स्वतन्त्रतामा हिडँदा घरको वातावरण नै बिग्रन्छ भन्ने कुरा म पात्रका परिवारको व्यवहारबाट थाहा पाइन्छ ।

प्रस्तुत कथा अभिधात्मक अर्थसापेक्षतामा आधारित देखिन्छ । यसमा आन्तरिक परिधीय दृष्टिबिन्दुको प्रयोग गरिएको छ । आदि, मध्य र अन्त्यको रास्तो संयोजनमा कथानकअगाडि बढेकाले कथा रैखिक ढाँचामा निर्माण भएको छ । सहरीया मध्यमवर्गीय परिवारको अव्यवस्थित समस्यालाई मनोवैज्ञानिक शैलीमा प्रस्तुत गर्नु कथाको मुख्य उद्देश्य रहेको छ । कथामा सरल तथा स्वाभाविक भाषाशैलीको प्रयोग छ । छोटो आयतनमा रचिएको भएपनि यो कथा धेरै समस्यालाई देखाउन सफल छ ।

#### ४.५.१२ कसको दोष ?

कथाकार पाण्डेयद्वारा लिखित कसको दोष ? कथा म पात्रको केन्द्रीयतामा अगाडि बढेको छ । यस कथामा मुख्य पात्रले भोगेको जीवनको विविध घटनाहरूको वर्णन संस्मरणात्मक शैलीमा गरिएको छ । यसको कथावस्तु यसरी अगाडि बढेको छ ।

‘म’ पात्र काठमाडौँमा पढ्न बस्दा दाजुको साथी र दाजुबाट आफू लुटिएको हुन्छे । विवाह भएपछाडि पनि लोग्ने बाहिर गएका बेलामा लड्डु खुवाएर सानिमाको छोरी ‘म’ पात्रको यैन शोषणमा परेको घटनालाई लिएर कथा लेखिएको छ । उनीहरूको यैनशोषण गर्नुमा कसको दोष थियो ? भन्ने कुरालाई मनोवैज्ञानिक शैलीमा लेखिएको छ । यस कथामा समाजमा अनेकौं बहानामा हुने गरेका यैन शोषणहरू नारीहरूका समस्या हुन् भन्ने यथार्थको प्रस्तुति गरिएको छ । यैन कथाको इतिहासमा नयाँ दिशा दिने कथाकार पाण्डेयको प्रस्तुत कथामा बहुविवाहको सन्दर्भ र त्यसबाट उत्पन्न समस्यालाई पनि उद्घाटन गरिएको छ । नारीहरू अरूबाट मात्र नभई आफै आफन्तबाट पनि यैन शोषणको चपेटामा पर्न सक्छन् भन्ने कुरालाई कथाले व्यक्त गरेको छ । दाजुले आफ्नो यैन शोषण गर्न लागेको थाहा पाउँदा पाउँदै पनि प्रतिकार नगरी निदाएको बहानामा सहयोग गर्नुले कथामा नारीलाई लाचारी भने बनाएको छ । यस कथाले सामाजिक विषयवस्तुभित्र बहुविवाह गर्ने पारिवारिक

समस्यालाई आफ्नो रुचिक्षेत्र बनाएको छ । कथाकार पाण्डेय आफ्ना कथाहरूमा सामाजिक विषयवस्तुलाई प्रस्तुत गर्ने भएका हुँदा त्यसै अनुरूप उनले आफ्नो विषयलाई यथार्थवादी बनाउने प्रयत्न गरेका छन् । ती विषयहरू कहिलेकाही अलिक काल्पनिकजस्ता पनि बनेका देखिन्छन् । कसको दोष ? कथाको रीतिक्षेत्रलाई हेर्दा सामाजिकताभित्र यथार्थलाई समेटेको पाइन्छ । यौनलाई प्रमुख पक्ष बनाएर लेखिएको प्रस्तुत कथामा नारी स्वतन्त्रतामाथि ठूलै प्रश्नचिह्न खडा भएको छ । कसैको यौन तृप्तिका लागि नारीले आफ्नो स्वतन्त्रतालाई गुमाउनु कतिसम्म न्यायको कुरा हो ? यस्ता कुराहरूमा समाजका स्वार्थीपुरुष भनाउँदाहरूले राम्ररी सोच्नु आजको आवश्यकता छ भन्ने उद्देश्य यहाँ प्रस्तुत भएको छ । नारीलाई अगाडि बढ्न नदिन यस्ता घृणित कामहरू हाम्रा समाजमा हुने गर्दछन् त्यसबाट समयमा सचेत रहन नारी तथा पुरुष दुवैलाई गहन सन्देश दिन यो कथा सफल छ । अचेत अवस्थामा भएका घटना कसले गयो त्यो थाहा हुन सक्तैन । त्यसैले कसको दोष ? कथाको सम्बन्ध केवल घटनासँग मात्र रहेकोले यसको अर्थ केवल अभिधात्मक रहेको छ । म पात्रको केन्द्रीयतामा रचिएको प्रस्तुत कथाको दृष्टिविन्दु आन्तरिक केन्द्रीय रहेको छ । मनोवैज्ञानिक तथा संस्मरणात्मक शैलीमा लेखिएको प्रस्तुत कथा पूर्ण रैखिक ढाँचामा रहेको छैन । यस कथामा सरल तथा स्वाभाविक भाषाशैलीको प्रयोग भएको छ । कहीकतै विम्बविधान र साधारण तुकाको प्रयोग भने कथामा भेटिन्छ । जस्तै ‘त्यसको कपालमा हातको काँइयो बनाइदिउँ कि जस्तो भएको थियो ।’ यसरी प्रस्तुत कथामा सरल वाक्य गठनका साथै पात्रहरूको सामाजिक बौद्धिक स्तरअनुसार बोलाचालको मीठो भाषको प्रयोग भएको छ । कथा मनोवैज्ञानिक शैलीमा लेखिएको छ । समाजमा नारीहरू यौन शोषणबाट धेरै नै थिचिएका छन् । यसकारण विविध सन्दर्भमा हुने यौन शोषणबाट बच्नका लागि नारी आफू पनि सचेत हुन जरुरी छ । साथै पुरुषहरूले पनि त्यस्ता कार्यहरूमा सही सहयोग गर्न आवश्यक देखिन्छ भन्ने सन्देश कथाले दिएको छ ।

#### ४.५.१३ वियोग

प्रस्तुत कथा सामाजिक विषयवस्तुमा आधारित रहेको छ । यो कथा कुलप्रसाद सेढाईको जीवनमा आधारित छ । कुलप्रसाद दुई छोरी र एक छोराका बाबु हुन् । उनको श्रीमतीको मृत्यु भइसकेको छ । त्यसैले पारिवारिक दुःख परेको देखिन्छ । कान्छा घर्तीले उनलाई विवाह गर्ने सल्लाह दिन्छ, उनको विवाह लक्ष्मीसँग सम्पन्न हुन्छ । चारपाँच वर्षसम्म घरव्यवहार राम्रोसँग चल्छ । एक दिन लक्ष्मीको पुरानो प्रेमी उनको घरमा आउँछ । लक्ष्मीले प्रेमी मधुलाई अनेक बहाना बनाई केही दिनका लागि घरमा राख्छे । कुलप्रसाद बाहिर गएका बेलामा लक्ष्मी र मधुसँगै बस्छन् । यसरी बस्दा एकदिन घरमा आगलागि हुन्छ । लक्ष्मी र मधु ढडेर मर्छन्, कुलप्रसाद घरमा आउँदा आगो लागेको देखेर बाटैमा ढल्न पुग्छ । यसरी वियोग कथाको अन्त्य भएको छ ।

प्रस्तुत कथाको रुचिक्षेत्र ग्रामीण समाजमा देखापरेको सामाजिक तथा पारिवारिक समस्या रहेको छ । पारिवारिक वियोगमा परेका परिवारको जीवनशैली, रहनसहन, परिवेशको यथार्थ चित्रण गरिएको यो कथा बहुविवाह तथा सौतेनी व्यवहारलाई देखाउन लेखिएको छ । यस कथामा पाण्डेयले कुलप्रसाद, लक्ष्मी, मधु, धर्ती कान्छाजस्ता पात्रहरूको प्रयोग गरेका छन् । पहिलो श्रीमतीको मृत्युले गर्दा दोस्रो विवाह गरेका कुलप्रसाद पारिवारिक वियोगमा परेका छन् । लक्ष्मीसँग उनको दोस्रो विवाह भए पनि जुन उमेरको हिसाबले अनमेल विवाह भएको छ । यौवन अवस्थामा मस्त रहेकी श्रीमती लक्ष्मी र तीन छोराछोरीका बाबु कुलप्रसादका बीचमा केही असमानता सिर्जना भएकाले उनको परिवार वियोगमा परेको छ । वियोग कथाको रीतिक्षेत्र सामाजिकताभित्र यथार्थवादको संयोजन रहेको छ । प्रस्तुत कथामा पात्र र विषयवस्तुको प्रस्तुतिकरणलाई हेर्दा पनि यथार्थवादको प्रयोग पाइन्छ । यस कथामा निम्नवर्गका पात्रहरूको उपस्थिति रहेको छ । पत्नी वियोगमा परेका कुलप्रसादको छोराछोरीको लालनपालनका लागि विवाह गरिएकी पत्नी लक्ष्मीले गर्दा झनै ठूलो वियोग थपिएको छ । अनैतिक व्यवहारमा लागेकी नारीको प्रवेशले परिवारमा वियोगको अवस्था मात्र आउँछ भन्ने सारवस्तु कथामा लुकेको देखिन्छ । यसको अर्थसापेक्ष अभिधात्मक रहेको छ । कथामा वाह्य सर्वज्ञ दृष्टिविन्दुको प्रयोग गरिएको

छ । आदि, मध्य र अन्त्यको श्रृङ्खलामा रेखिक कथानक ढाँचाको निर्माण भएको छ । यो यथार्थवादी शैलीमा रचिएको सामाजिक कथा हो । यसमा संवृत्त रूपविन्यासको प्रयोग गरिएको छ । ग्रामीण परिवेश सुहाउँदो भाषाशैलीको प्रयोग गरिएको प्रस्तुत कथा सरल तथा स्वाभाविक रहेको छ ।

#### ४.५.१४ तृष्णा

कथाकार पाण्डेयले तृष्णा कथामा ग्रामीण समाजलाई कथाको पृष्ठभूमि बनाएर त्यस समाजका मूल्य र मान्यतालाई मूल विषयवस्तु बनाएका छन् । सामाजिक यथार्थवादमा आधारित रहेर लेखिएको तृष्णा कथामा ग्रामीण समाजमा रहने मानिसहरूको जीवनशैली, परिवेशको चित्रण गरिएको छ । जसलाई चित्रण गर्नका लागि एउटा काल्पनिक कथालाई आधार बनाइएको छ । सुन्तली, भगवान, देवराज, कृष्ण, देवेन्द्रजस्ता गाउँघरमा राखिने नाम पात्र बनाएर कथा वस्तुमा तीनलाई उतारिएको छ । गाउँ घरमा बिहान उठेर गाग्नो च्यापेर पध्नेरामा गई पानी ल्याउने चलन हुन्छ । त्यहाँ धेरै आइमाईको जमात हुन्छ । त्यहाँ आ-आफ्नो सासू बुहारीको कुरा काट्ने यथार्थलाई यस कथाले आत्मसात् गरेको छ । प्रस्तुत कथाको कथावस्तु निम्नानुसार रहेको छ ।

देवराजकी श्रीमतीको मृत्यु भइसकेको छ । उसका एक छोरा र एक छोरी छन् । छोरो भगवान र छोरी सुन्तली अब दुहुरा भएका छन् । देवराजले दोस्रो विवाह गर्दै । कान्छी आमाको व्यवहार खप्न नसकी भगवान विदेश जान्छ । सुन्तली भने पीर गर्दै । प्रस्तुत कथा दोस्रो विवाहले निम्त्याउने समस्यालाई देखाउन सफल छ । दोस्रो विवाहले दुहुरा छोरा छोरीको जीवनमा निराशा पैदा गर्दै भन्ने तीतो यथार्थलाई कथामा देखाइएको छ । यस कथाको रीतिक्षेत्र सामाजिकताभित्र यथार्थको संयोजन रहेको छ । पाण्डेयले यस कथामा ग्रामीण समाजमा हुने पात्रको र दोस्रो विवाहले दुहुरा छोराछोरीमाथि पर्ने धक्कालाई कथामा व्यक्त गरेका छन् । कुनै पनि परिवारमा गृहिणीको भूमिका महत्त्वपूर्ण हुन्छ । अभ छोराछोरीका लागि बाबुभन्दा पनि आमाको महत्त्वज्यादा हुन्छ । सौतेनी आमाले छोराछोरीमाथि गर्ने व्यवहार तथा कान्छी विवाह

गरेपछि बाबुले छोराछोरीको बेवास्ता गर्ने चलनलाई यस कथाले देखाएको छ । बीसबाइस वर्षकी एउटी नारीको सुखभोगको इच्छा पचपन्न वर्षको पुरुषले दिन सक्तैन । त्यसैले पनि यहाँ समस्या देखापरेको छ । आफ्नो तृष्णा मेटाउनका लागि छोरोको कोठामा पसी चुकुल लगाउने कान्धीआमाको प्रवृत्तिलाई पनि कथामा देखाइएको छ । आमाको अभावमा छोराछोरीले धेरै दुःख भेल्न पर्दछ । असल पत्नीको अभावमा एउटा लोगनेको घर राम्रो बन्न सक्तैन भन्ने सारवस्तु कथाले बोकेको छ । यस कथामा आफ्नो तृष्णा मेटाउनका लागि मान्छे घृणित काम गर्न पनि पछि हट्दैन भन्ने अभिधात्मक अर्थ रहेको छ । रैखिक कथानक ढाँचामा लेखिएको यस कथामा आन्तरिक परिधीय दृष्टिबिन्दुको प्रयोग गरिएको छ । सरल तथा छोटा वाक्य गठनमा रचना गरिएको प्रस्तुत कथामा संवृत्त रूपविन्यासको प्रयोग गरिएको छ ।

#### ४.५.१५ सुनको लकेट

हरिप्रसाद पाण्डेय मनोवैज्ञानिक कथा लेख्ने कथाकार पनि हुन् । उनका कथामा कतै न कतै मनोवैज्ञानिक शैलीको प्रयोग भएको छ । प्रस्तुत कथा पनि मनोवैज्ञानिक रहेको छ । यो कथाको विषयवस्तु पनि मनोवैज्ञानिक छ । यसलाई उनले संस्मरणात्मक शैलीमा प्रस्तुत गरेका छन् । “म” पात्रको मानसिकतालाई लिएर यो कथा लेखिएको छ । यस कथाले सहरीया मध्यम वर्गीय परिवारलाई आफ्नो विषयवस्तु बनाएको छ । समाजमा नारीहरूले गहना तथा लुगाको चर्चा परिचर्चा गर्ने विषयलाई यहाँ देखाइएको छ । “म” पात्र बिहेमा जान लागदा आफ्नो र देउरानीको लुगा गहनाको विषयमा आफ्नो मन खेलाउँदा खेलाउँदै आफ्नो सुनको लकेट पनि भेटाउँदिन । त्यसपछि मनमा यसले चोच्यो, उसले चोच्यो होला भन्ने शब्दका तथा उपशब्दका गर्दागर्दै श्रीमान् अफिसबाट घर आइपुग्छ । उसको कोटको खल्तीमा लकेट परेको कुरा “म” पात्र (श्रीमती) लाई सुनाउँछ, र कथाको अन्त्य हुन्छ ।

प्रस्तुत कथामा कतिपय नारीहरूमा हुने गरेको अलझकारप्रियता र ईर्ष्यासन्तप्त मनोवृत्तिलाई देखाइएको छ । म पात्रको मनोवैज्ञानिक र सामाजिक यथार्थलाई प्रतीकात्मक ढङ्गले प्रस्तुत गर्नु यस कथाको रुचिक्षेत्र हो । यसको

रीतिक्षेत्रलाई हेर्दा सामाजिकताभित्र मनोविज्ञानको प्रयोग गरिएको छ । यसको कथानक ढाँचा निम्न रैखिक रहेको छ । म पात्रको मानसिकताको प्रधानता र घटनाको गौणता यस कथामा फेला पर्दछ । समाजमा नारीहरूले लुगा तथा गहनाका आधारमा एकले अर्कालाई हेप्जे प्रवृत्ति तथा नारीहरूको ईस्यालु र शड्कालु स्वभावलाई म पात्रका मानसिकताबाट प्रस्त पार्नु यस कथाको सारवस्तु रहेको छ । आन्तरिक केन्द्रीय दृष्टिविन्दुको प्रयोग कथामा भएको छ । सरल तथा स्वाभाविक भाषशैलीको प्रयोगले कथा रोचक बनेको छ । समाजमा नारीहरू लुगा र गहनामा परिचित हुने संस्कारले गर्दा उनीहरू निकै पछि परेका छन् । त्यस्तो अलड्कारप्रियता बढ्नु नारीहरू लाचारी हुनु हो । यस्तो कुराहरूबाट टाढा रहन सकेमात्र नारीहरू अग्रगतिमा लाग्नेछन् भन्ने सन्देश कथाले व्यक्त गरेको छ ।

४.५.१६ विडम्बना

बिडम्बना सामाजिक यथार्थवादमा आधारित मनोवैज्ञानिक कथा हो । यस कथामा निम्नवर्गीय ग्रामीण समाजको प्रस्तुतिका साथै राजनीतिक विसङ्गातिले जन्माएको त्रासको चित्रण गरिएको छ । प्रस्तुत कथामा प्रयोग गरिएको “म” पात्रका दुईवटा छोरा र एउटी छोरी छन् । दुवै छोरा राजनीतिमा लागेका छन् । छोरी मात्रै घरमा काम गर्ने प्रतिनिधि हुन् । आमा पनि बिरामी परेकी छ । खेत पहिरोले बगाउनु, ऋण काढेर ल्याएको भैंसी मर्नु आदिले आर्थिक समस्या देखिएको छ । छोराहरू विद्रोही नेता बन्नुले म पात्रमा त्रासले छाएको छ । तरुनी छोरीको विवाह नभएकाले कसैले हातपात गर्ला भन्ने डर पनि म पात्रमा देखिन्छ । त्रासै त्रासमा जीवन गुजिरहेको कथावस्तु कथामा रहेको छ ।

प्रस्तुत कथामा सुन्तली, भुन्टे, म पात्र, रिकुटे आदि पात्रहरूको प्रयोग गरिएको छ । यस कथाको रुचिक्षेत्रमा तत्कालीन राजनीतिक विसङ्गति रहेको छ । सामाजिकताभित्र यथार्थको प्रस्तुति मनोवैज्ञानिक ढंगमा गरिनु यस कथाको रीतिक्षेत्र हो । समाजमा देखिने आर्थिक सङ्कट, राजनीतिक विसङ्गति, उमेर पुगेकी छोरीले आमाबाबुमा पार्ने त्रास, आदि कुरालाई यस कथाले व्यक्त गरेको छ । परिवारको अस्तव्यस्त अन्धविश्वास, राजनीतिक, असङ्गतिका कारण विडम्बना खप्त परेको

देखाउनु कथाको सारवस्तु हो । ग्रामीण समाजमा बस्ने म पात्रको परिवारको आर्थिक, पारिवारिक र राजनीतिक समस्यालाई देखाएकाले “विडम्बना” शीर्षक अभिधात्मक रहेको छ । रैखिक कथानक ढाँचामा रचिएको यस कथामा आन्तरिक केन्द्रीय दृष्टिविन्दुको प्रयोग गरिएको छ । सरल तथा सुहाउँदो भाषाशैलीको प्रयोग गर्नाले कथा रोचक बनेको छ । “अन्न पैसा धामीलाई व्यथा जति हामीलाई” जस्ता टुक्काको प्रयोगले त कथा भनै मीठो बनेको छ ।

#### ४.५.१७ तीज

तीज कथा मनिताको जीवनमा आधारित रहेको छ । हाम्रो समाजमा तीज नारीहरूका लागि महत्त्वपूर्ण दिन मानिन्छ । यस चाडमा रातो साडी तथा गरगहनाले भकिभकाउ हुने परम्पराको उल्लेख यस कथामा व्यक्त भएको छ । मनिता घरकी बुहारी हो । उसले घरको सबै काम एकलै भ्याउनुपर्छ । मनिता तीजमा माइतसमेत जान

पाउँदिन । उसलाई सासूले आफ्ना छोरी ज्वाँई आउँछन् पकाएर खुवाउनु पर्छ भनी माईत जान स्वीकृति दिन्नन् । आफ्ना छोरी ज्वाँईलाई भने पकाएर खुवाउनु पर्ने तर अरूका छोरी बुहारी बनेर आउँदा अपमान गर्ने हाम्रो समाजका सासूहरूको वर्तनलाई कथाले

देखाएको

छ ।

प्रस्तुत कथा सासू र बुहारीमा गरिने भेदनीतिलाई देखाउन सक्षम छ । यस कथाको रुचिक्षेत्र हाम्रा समाजमा छोरी र बुहारीका बीचमा देखिने भेदनीति रहेको छ । आफ्नो लोग्ने घरमा नहुँदा भनै प्रताङ्ग खप्नुपर्छ भन्ने कुरा मनिताको जीवनशैलीबाट प्रष्ट भएको छ । लाउने खाने उमेरका बुहारीहरूलाई कतिपय सासूहरूले दिने गरेको बुहार्तनले गर्दा उनीहरूको पारिवारिक सम्बन्धलाई नै नराम्रो बनाउँछ । प्रस्तुत कथाको रीतिक्षेत्र सामाजिकताभित्र यथार्थको संयोजन रहेको छ । हाम्रो समाजमा सासूले बुहारीमाथि गर्ने थिचोमिचो तथा छोरी र बुहारीमाथि गर्ने भेदनीतिलाई तीज कथामा सूक्ष्म तरिकाले विश्लेषण गरिएको छ । यस कथामा मनिता र कप्तानजस्ता पात्रहरूको प्रयोग गरिएको

छ । समाजमा बुहारीहरूले सासूबाट जुन टोकस खप्नु परेको देखिन्छ त्यो नै यस कथाको सारवस्तु रहेको छ । प्रथम पुरुष दृष्टिविन्दुमा लेखिएको यो कथामा रैखिक कथानक ढाँचा रहेको छ । सरल तथा सम्प्रेषणीय भाषा शैलीको प्रयोग गरिएको यस कथामा संवृत्त रूपविन्यासको प्रयोग गरिएको छ । हाम्रो समाजमा सासू र बुहारी बीचको सम्बन्धमा सुधार ल्याउने हो भने छोरी र बुहारीको भेदनीतिलाई मिल्काउन सक्नुपर्छ भन्ने सन्देश कथामा व्यक्त गरिएको छ ।

#### ४.५.१८ ईर्ष्या

ईर्ष्या कथा शान्ताको जीवनका घटनामा आधारित रहेको छ । यस कथामा मुख्य रूपमा पाँच जना पात्रहरूको प्रयोग गरिएको छ । प्रस्तुत कथाको कथावस्तुलाई यसरी व्यक्त गरिएको छ ।

यस कथाकी प्रमुख पात्र शान्ताले सपनामा हाकिमले आफूलाई माया गरेको देखेकी छ । त्यसपछि हाकिमले बीनासँग फोनमा गफ गरेको देख्दा ईर्ष्याले जलेकी छ । शान्ता छोराछोरी तथा लोगने साथमा भएकी पात्र हो । शान्ता बाटुलीले लोगने मान्छेसँग गफ गर्दा पनि मनमा ईर्ष्या जगाउने खालकी पात्र हो । उता हाकिमलाई बीनाले माया गरी भन्दै पनि ईर्ष्यामा जलेकी छ । शान्ताको लोगने अफिसको काम घरमा ल्याउने गर्दछ । त्यो देख्दा पनि शान्ताको मनमा ईर्ष्या पलाएको छ । लोगनेले आफूलाई भनेजति समय नदिँदा पनि शान्ता खिन्न भएकी छ । अफिसको व्यवस्थाका कारण परिवारलाई भनेजति समय दिन नसकदा अथवा पत्नीको इच्छा पुऱ्याउन नसकदा पनि कतिपय नारीहरूमा ईर्ष्याको भावना पैदा हुन्छ भन्ने सन्देश कथाले दिएको छ ।

यौनलाई केन्द्रविन्दु बनाएर लेखिएको यो कथाले सहरी मध्यमवर्गका परिवारलाई आफ्नो रुचिक्षेत्र बनाएको छ । घरमा श्रीमान् र श्रीमती दुवैजना अफिस जाँदा कामको व्यस्तताका कारण एक अर्कालाई भनेजति समय दिन सकिदैन । त्यसले पनि परिवारमा वेमेलको स्थिति सिर्जना हुनसक्छ । घरको एक जिम्मेवारी व्यक्तिका रूपमा रहेकी श्रीमती पर पुरुषसँग सुखभोगको ईर्ष्यामा जल्नु कतिको उचित हो । त्यसले परिवारलाई कतातिर लम्काउँछ ? भन्ने प्रश्नलाई कथाले आत्मसात गरेको छ

। प्रस्तुत कथामा ईर्ष्याको सम्बन्ध केवल कथाको मूल विषयवस्तुसँग मात्र रहेकाले अभिधात्मक अर्थ वहन गरेको छ । यसको रचना प्रथम पुरुष दृष्टिविन्दुमा गरिएको छ । यथार्थवादभित्र मनोविज्ञानको संयोजन गरिएको यो कथा रैखिक ढाँचामा रचना गरिएको छ । सरल तथा बोलचालको मीठो भाषा प्रयोगले कथा रोचक बनेको छ । सानो तिनो कुरामा श्रीमतीले श्रीमान्‌लाई ईर्ष्या गर्नाले घर व्यवहारमा बेमेल सिर्जना पैदाहुन्छ भन्ने देखाउन यो कथाको रचना गरिएको हो ।

#### ४.५.१९ अस्तित्व

कथाकार हरिप्रसाद पाण्डेयद्वारा लिखित अस्तित्व सामाजिक कथा हो । यो कथा केशवको जीवनका घटनामा आधारित छ । प्रस्तुत कथामा अफिसमा हुने गरेका भ्रष्टचार तथा इमान्दार कर्मचारी केशवको जीवनमा देखिएका अभावलाई यथार्थ रूपमा देखाइएको छ । सहरी परिवेशभित्र रहेर अफिसमा काम गर्ने एउटा इमान्दार कर्मचारीको जीवनमा देखापर्ने समस्यालाई यसरी कथाले आफ्नो विषयवस्तु बनाएको छ । केशवले श्रीमतीलाई साडी किन्न एक हजार बोकेर हिँड्नु, बाटामा मनमा अनेक तर्कवितर्क गर्दै साथीसँगै पैसा मागेर भए पनि साडी किन्ने निश्चय गर्नु, साथीसँग पैसा मारी साडी किन्न पसलमा गई पैसा हेर्दा नहुनु, म पात्र साडी नलिई घरमा आउनु, घरमा पुग्नासाथ श्रीमतीले साडी ल्याइस्यो त भनेर सोध्नुजस्ता घटनाहरू कथामा रहेका छन् ।

प्रस्तुत कथा केशवको केन्द्रीयतामा आधारित छ । कथामा इमान्दार राष्ट्रसेवकले आजको समाजमा आफ्नो अस्तित्व राख्न नसकिने परिस्थितिलाई उद्घाटन गरेको छ । केशव भ्रष्टाचार नगर्ने इमान्दार कर्मचारी हो । उसको त्यो इमान्दारिताका कारण अभावै अभाव सिर्जना भएको छ । यही नै यस कथाको रुचिक्षेत्र हो । सामाजिकताभित्र यथार्थको संयोजन गर्नु यस कथाको रीतिक्षेत्र हो । इमान्दार राष्ट्रसेवकको दयनीयता र बेइमानहरूको सम्पनता आजको समाजमा देखापरेको यथार्थ हो भन्ने सारवस्तु कथामा रहेको छ । बेइमानी राष्ट्रसेवकका कारण इमान्दार कर्मचारीको अस्तित्वमा आँच आएको तीतो यथार्थलाई कथामा देखाइएको छ । बेइमानी राष्ट्रसेवकको जीवनशैली तडकभडकयुक्त देखिए पनि त्यसले कहिल्यै

पनि आत्मसन्तुष्टि दिँदैन । नैतिक रूपले कमाएको धनले परिवारमा शान्ति छाउँछ भन्ने कुरालाई पनि यस कथामा देखाइएको छ । प्रस्तुत कथाको उद्देश्य अनैतिक धन कमाएर आफ्नो अहम अस्तित्वलाई जोगाउनुभन्दा इमान्दार भएर सरल जीवन जिउनु नै राष्ट्र तथा परिवारका लागि हितकारी कुरा हो भन्ने रहेको छ । अभिधात्मक अर्थसापेक्ष रहेको प्रस्तुत कथा प्रथम पुरुष दृष्टिबिन्दुमा रचिएको छ । रैखिक कथानक ढाँचाको प्रयोगले कथा सरल बनेको छ । सरल तथा स्वाभाविक भाषाशैलीको प्रयोग गरिएको यस कथामा संवृत्त रूपविन्यासको प्रयोग गरिएको छ । साथै आइस्यो तथा ल्याइस्योजस्ता उच्च आदरार्थी शब्दको प्रयोग पनि कथामा गरिएको छ ।

#### ४.५.२० चियाको गिलास

प्रस्तुत कथा रोशनीको जीवनमा आधारित रहेको छ । यस कथामा रमेश, अरुण, रोशनी तथा उसको लोगनेजस्ता पात्रहरूको प्रयोग गरिएको छ । रमेश एकदिन काम विशेषले प्रेसतिर जाँदैगर्दा एक जना साथीसँग भेट हुनु, दुवै चिया पिउन होटेलमा पस्नु, रमेशको हातको चिया एउटी स्वास्नी मानिसले खोसेर पिउनु, त्यस केटीको बारेमा जान्न पसलेसँग सोच्नु, पसलेले सबै कहानी बताउनुसम्मको घटना यस कथामा रहेको छ ।

प्रस्तुत कथामा कुल घरानको केटो भन्ने भ्रममा परी छोरीको इच्छाविपरीत विवाह गरिएको छ । लोगनेको पाश्विक अत्याचारका कारण रोशनी बहुलाएकी छ । यसर्थ कुलतमा फसेको व्यक्तिका पाश्विक अत्याचारका कारण बहुलाएकी पत्नीको कथा व्यथालाई यस कथाले आफ्नो विषयवस्तु बनाएको छ, यो यसकथाको रुचिक्षेत्र हो । यस कथामा पितृसतात्मक परम्पराले थिचिएको नेपाली समाजमा पुरुषबाट महिलाहरू कतिसम्म प्रताडित हुनुपर्दैरहेछ भन्ने कुरा रोशनीको जीवनकहानीबाट स्पष्ट पारिएको छ । रोशनी जड्याहा र अनैतिक पतिको पाश्विक अत्याचारका कारण मानसिक सन्तुलन गुमाउन पुगेकी छ । वास्तविकता नै नबुझी छोरीको इच्छा विपरीत विवाह गरिदिने प्रचलन र त्यसबाट उत्पन्न समस्याको कुनै वास्ता नै नगर्न बाबु आमाको तीतो यथार्थलाई पनि कथामा देखाइएको छ । रोशनी सुशील तथा सज्जन नारी भए पनि लोगनेको पाश्विक अत्याचारले पीडित भई मानसिक सन्तुलन

गुमाउनु परेको कुरालाई मनोवैज्ञानिक शैलीमा व्यक्ति गरिएको छ । कथाको मूल विषयवस्तुसँग चियाको गिलासको सम्बन्ध केवल घटनासँग मात्र रहेकाले कथाको अर्थ अभिधात्मक नै रहेको छ । निम्न रैखिक कथानक ढाँचा प्रयोग गरिएको यो कथामा बाट्य सीमित दृष्टिविन्दुको प्रयोग गरिएको छ । “छोरीको जन्म हारेको कर्म” जस्ता तुक्काको प्रयोग गरिएको प्रस्तुत कथामा संवृत्त रूपविन्यासको प्रयोग गरिएको छ । जद्याहा र अनैतिक पतिको पाश्विक अत्याचारका कारण बहुलाएकी पत्नीको दारूणिक कथाव्यथा नै यस कथाको सारवस्तु हो । विवाह गर्दा हतारमा नबुझी कन निर्णय गरी फुर्सदमा पछुताउनु पर्ने स्थितिबाट बच्न समयमा सजग रहनुपर्ने सन्देश कथाले व्यक्ति गरेको छ ।

#### ४.५.२१ परिणति

प्रस्तुत कथा म पात्रको जीवनमा आधारित छ । कथाकार पाण्डेयले सहरी परिवेशमा रहेका युवा-युवतीका बीचको प्रेम प्रसङ्गलाई कथाको विषयवस्तु बनाएका छन् । यसका प्रमुख पात्रहरूमा म पात्र, उसकी प्रेमिका छन् । प्रस्तुत कथामा समाजमा कुसङ्गत र कुलतमा लागेका चञ्चल युवतीहरूको दुरावस्थाको परिणति एउटा आदर्श पुरुषले भोग्न परेको छ । मायाको नाममा स्वार्थ पूर्तीमात्र गर्ने कतिपय नारीहरूको दुर्नियतलाई कथाले देखाएको छ । म पात्रलाई एउटी युवतीले असाध्यै माया गर्नु, म पात्रले पनि उनलाई धेरै माया गर्नु, धेरै कुराहरू किनिदिनु, केही समयपछि उनले म पात्रलाई झुटा कुरामात्र बोल्नु, म पात्र सिनेमा हेर्न जाँदा आफ्नी प्रेमिकालाई दिनेशसँगै देख्नु, म पात्र त्यस दिनदेखि उनको मुख नहेन्ने निस्कर्षमा पुग्नुजस्तो कथावस्तु यस कथामा रहेका छन् ।

प्रस्तुत कथाको रुचिक्षेत्र सहरी समाजमा प्रेम गर्ने उमेरका युवा युवतीमा हुने गरेको प्रेम सम्बन्ध तथा चञ्चल युवतीले सच्चा प्रेमीलाई दिएको धोका रहेको छ । युवा र युवतीमा हुने गरेको प्रेमका परिणति सच्चा तथा आदर्श मात्र हैदैन दुरावस्ता तथा हृदय विदारक पनि हुनसक्छ भन्ने कुरालाई म पात्र र उसको प्रेमीकाको प्रेमबाट देखाइएको छ । समाजमा प्रेमका नाममा ठगी गर्ने यस्ता नारीहरू पनि रहन्छन् । तिनिहरूबाट समयमा नै जोगिन सक्नुपर्दछ भन्ने सन्देश यस कथाले दिएको छ । यस

कथामा म पात्र प्रेमिकालाई असाध्यै माया गर्छ, सकिनसकी लुगा, गरगहना किनिदिन्छ, ऊ भने परपुरुषसँग अङ्गालो हाल्दै सिनेमा हेर्न जान्छे । सामाजिक प्रेम कथामा आधारित यो कथाको परिणतिको अर्थसापेक्ष अभिधात्मक रहेको छ । कथानक ढाँचा पनि रैखिक रहेको छ । सच्चा प्रेमीप्रति कुव्यवहार गर्ने युवतीहरूको नियतीलाई यस कथाले स्पष्ट्याएको छ । आदर्श प्रेमीले प्रेमिकाबाट धोका पाउँदा उसको मानसिकतामा कस्तो आघात पर्न जान्छ भन्ने तीतो यथार्थलाई म पात्रको माध्यमबाट देखाइएको छ । यस कथाको म पात्रले आफ्नी प्रेमिकालाई दिनेशसँगै देखेपछि उसको मुख कहिल्यै नहेन्ने निस्कर्षमा पुगी कथा टुइगिएकोले कथा मनोविज्ञानतर्फ मोडिएको छ । मानसिक रूपमा म पात्र तडपिएको छ । त्यसैले सच्चा प्रेमको परिणति सच्चा नै हुनुपर्दछ, नत्र त्यसले असल पुरुषको मानसिकता माथि ठूलो आघात पार्दछ भन्ने सन्देश यस कथाले दिएको छ । सरल तथा सम्प्रेषणीय भाषाशैलीको प्रयोगले कथा अझै राम्रो बनेको छ । छोटा वाक्य तथा मीठो भाषा प्रयोग गरिएको यस कथामा संवृत्त रूपविन्यासको प्रयोग गरिएको छ ।

#### ४.५.२२ घातप्रतिघात

अन्जान कथासङ्ग्रहमा सङ्कलित बाइस वटा कथामध्ये घातप्रतिघात अन्तिम कथा हो प्रस्तुत कथा शान्तिको जीवनका घटनासँग आधारित रहेको छ । कथाकार पाण्डेयले यस कथामा ग्रामीण समाजलाई कथाको मूल विषयवस्तु बनाएर त्यस समाजका मूल्य र मान्यताहरूलाई आत्मसात् गरेका छन् । यस कथाले गाउँघरमा हुने गरेको मेलापात परम्परा गाउँका ठूला भनिने व्यक्तिले सहारा नभएका केटीहरू माथि गर्ने अनैतिक कार्य, विवाहका नाममा भारतमा लगि केटी बेच्ने दलालहरूको यथार्थ उद्घाटन गरेको छ । शान्ति पर्म तिर्नका लागि मेलामा जानु घरमा आउँदा आमाको अवस्था नाजुक हुनु र बिल्नु, आमालाई घाटतिर लानु, त्यसपछि खडानन्दले अनैतिक काम गर्ने मनसायले शान्तिलाई फकाउन आउनु, सानुबाबुले शान्तिलाई बीस हजार रूपैयाँ दिनु र काठमाडौँ जानु, दुर्गा दिदीले शान्तिको विवाह गरिदिनु, केटाकेटी बेच्ने दलाल हुनु, मनोजलाई प्रहरीले लानु, सानुबाबु आइपुग्नु र शान्तिलाई लिएर जानु सम्म यस कथाको कथावस्तु रहेको छ ।

प्रस्तुत कथामा आमाको मृत्युपछि संसारमा एकिलाईकी शान्तिको विवाह दलाल मनोजले गर्न लागेको देखाएर घातमाथि प्रतिघात हुन लागेको सङ्केत व्यक्त गरिएको छ । अन्त्यमा मनोजलाई प्रहरीले समातेको र सानुबाबुले शान्तिलाई लिएर गएको देखाएकाले कथा संयोगान्तमा टुड्गिएको देखिन्छ । यस कथाको रुचिक्षेत्र ग्रामीण समाजमा देखापरेको आर्थिक, सामाजिक तथा नैतिक समस्या हो । यो कथा वेसहारामा रहेकी एउटी नारीलाई अनेक स्वार्थ देखाएर फसाउने कतिपय हाम्रा समाजका पुरुषहरूको दुर्नियतिलाई देखाउन सफल छ । सामाजिक कथावस्तु भित्र यथार्थलाई प्रकट गर्न खोज्नु नै यस कथाको रीतिक्षेत्र हो । हाम्रा समाजमा हुने गरेका अनैतिक कार्यहरू तथा केटी बेच्ने दलाली प्रथा, नातागोताको नराम्रो सम्बन्ध र सानुबाबुजस्ताको आदर्श चरित्रलाई देखाउनु यस कथाको सारवस्तु रहेको छ । यस्ता सामाजिक समस्याहरूको सजीव चित्रण गरी दुस्परिणामको दिग्दर्शन गराएर सुधारका लागि सन्देश दिनु यस कथाको उद्देश्य देखिन्छ । अभिधात्मक अर्थसापेक्ष बोकेको प्रस्तुत कथामा तृतीय पुरुष दृष्टिबिन्दुको प्रयोग गरिएको छ । विषय सुहाउँदो भाषा तथा पात्रको प्रयोग गरिएको यो कथा रैखिक कथानक ढाँचामा निर्माण भएको छ । सरल तथा स्वाभाविक भाषाशैली प्रयोग भएको यो कथामा संवृत्त रूपविन्यासको प्रयोग गरिएको छ ।

#### ४.५.२३ निष्कर्ष

कथाकार हरिप्रसाद पाण्डेयद्वारा लिखित अन्जान कथासङ्ग्रह भित्र २२ वटा कथाहरू सङ्कलन गरिएका छन् । ती सबै कथाहरू छोटा आयतनमा लेखिएका छन् । उनले ती कथाहरूमा सामाजिक विषयवस्तु प्रदान गरेका छन् । उनले आफ्ना जीवनमा देखेभोगेका घटनालाई तथा केही कल्पनालाई आधार मानेर उक्त कथाहरू रचना गरेका छन् । व्यक्तिगत जीवनको भोगाइ, अनुभव, प्रेम, रतिराग, सुखदुःख, नारी मनका अन्तर्वेदनालाई कथाकार पाण्डेयले कथाका माध्यमबाट व्यक्त गरेका छन् । उनका धेरैजसो कथाहरू कुनै न कुनै रूपमा यौन वासनालाई केन्द्रीय आधार बनाएर लेखिएका छन् । यस कथासङ्ग्रहका अधिकांश कथाहरू मध्यमवर्गीय समाजका ग्रामीण परिवेशबाट आधुनिक सहरीया परिवेशमा प्रवेश गरेका र प्रवेश गर्न खोजेका

पात्रहरूलाई आधार बनाएर लेखिएका छन् । ती कथाहरूले मनोवैज्ञानिक शैलीमा नारी समस्याको प्राधान्य देखाउनुको साथै समाजमा देखापर्ने विकृति तथा विसङ्गतिलाई पनि चित्रण गर्न पुगेका छन् । पुरुषहरूले मादकपदार्थको व्यापक सेवनगरी नारीलाई दिने पीडा, शिक्षित युवा युवतीहरूमा स्वतन्त्रताका नाममा देखिएको छाडापन, नाताको आधारमा हुने वासनात्मक दुषित प्रवृत्ति, जातीय छुवाछुतका विकृतिहरू, महिला बेचविखन, नारीहरूको अलड्कारप्रियता, छोरी र बुहारी बीच हुने भेदनीति, पूनर्विवाह र अनमेल विवाहका समस्या, इमान्दार राष्ट्रसेवकले भोगनुपर्ने आर्थिक दयनीय अवस्था, पतिको पासविकताका कारण मानसिक यातना भोगेकी नारीको अन्तर्कथाजस्ता सामाजिक समस्याहरूको यथार्थ चित्रण गरी प्रस्तुत कथामा सुधारका लागि सन्देश पनि दिइएको छ । यी कथाहरूमा प्रायः नारीपात्र एवम् नारी समस्याको बाहुल्य छ र मनोवैज्ञानिक शैलीमा नारीमनका धरै रूप र रङ्गको विश्लेषण पनि गरिएको पाइन्छ । पाण्डेयका यी कथाहरू विशुद्ध सामाजिक यथार्थवादी नभएर यथार्थोन्मुख आदर्शवादले सजिएका छन् । सरल तथा छोटा वाक्य गठनमा पनि विषय सुहाउँदो मीठो भाषा पस्कन सक्नु कथाकार पाण्डेयको महत्वपूर्ण पक्ष हो ।

#### ४.६ कविताको सैद्धान्तिक स्वरूप

नेपाली भाषामा प्रयोग हुने कविता तत्सम शब्द हो । यो शब्द कवि शब्दमा ‘ता’ प्रत्यय लागेर बनेको छ । जसको अर्थ कविद्वारा रचित रचना भन्ने बुझिन्छ । कविता सौन्दर्यपरक लयात्मक भाषिक अभिव्यक्तिको वाइमय हो । त्यसैले यसलाई लयात्मक भाषिक कलाका रूपमा चिनिन्छ । कविता विषयवस्तुलाई रागात्मक तथा लयात्मक भाषाका माध्यमबाट अभिव्यक्त गर्ने सौन्दर्यमूलक अभिव्यक्ति हो । कवितामा भाव, विचार, घटनाको विशिष्ट लयात्मक भाषिक संरचना रहेको हुन्छ । भाव र विचारमा अनेकता हुनु कवितामा विविधता आउनु हो । प्रतीकात्मक कवितामा भावको प्रबलता हुन्छ । खण्डकाव्य, महाकाव्य र लामो कविताको संरचना आख्यानात्मक हुन्छ । यसमा कथावस्तुको आदि, मध्य र अन्त्यसमेत छुट्याउन सकिन्छ । कथानक, पात्र विधान एवम् परिवेशको समेत प्रयोग

हुन्छ । कविताको लामा र छोटा दुबै खाले संरचना नाटकीय हुन सक्छ । यस्तो हुँदा संवाद र द्वन्द्वको प्रधानता रहन्छ । यस्ता कवितामा क्षीण कथानकको समेत प्रयोग हुनसक्छ ।

कविता विशिष्ट लयात्मक हुनुलाई राम्रो मानिन्छ । लयले गर्दा नै कवितालाई अन्य विधाबाट अलग गराउँछ । कविता छन्दयुक्त र छन्दमुक्त गरी दुई प्रकारका हुन्छन् । कविताको भाषा विशिष्ट हुन्छ । कवितामा समानान्तर र विचलनयुक्त भाषिक विशिष्टता प्रयोग गरिन्छ । कविताको सिङ्गो आकृति निर्माणका लागि चाहिने सबै सामग्रीहरू कविताका तत्त्व हुन् । पूर्वमा रस, ध्वनि, रीति, वक्रोक्ति आदिलाई कविताको तत्त्व मानिएको छ भने रीति, अलझ्कार आदिलाई बाह्य र रस ध्वनि आदिलाई आन्तरिक तत्त्व मानिएको छ । त्यस्तै पश्चात्य जगतमा विषयवस्तु, छन्द, लय, विम्ब, प्रतीक, भाषाशैली आदिलाई कविताका तत्त्वका रूपमा लिइएको छ । यिनै कुराहरूलाई ध्यानमा राख्दै कवितालाई समग्र रूपमा चिन्न चिनाउनका लागि यसका निश्चित तत्त्वहरूको आवश्यकता पर्दछ । ती निम्नानुसार रहेका छन् ।

## १) शीर्षक

शीर्षक कविताको महत्त्वपूर्ण तत्त्व हो । कविताभित्र रहेको अनेक संरचनामध्ये एउटा सारपूर्ण र औचित्य भएको प्रतिनिधिमूलक कलात्मक शीर्षकको छनोट गरिन्छ । जुन शीर्षकभित्र समग्र विषयवस्तु अटाउनुका साथै त्यसमा सबै तत्त्वहरूको प्रतिनिधित्व हुन सक्नुपर्दछ । शीर्षकले विविध अनेकार्थकता र सम्भावना बोक्न सक्षम भएको हुनुपर्दछ ।

## २) संरचना

कवितामा आन्तरिक र बाह्य गरी दुई किसिमको संरचना रहेको हुन्छ । कविताको बाह्य संरचना सतही हुने गर्दछ भन्ने भित्री संरचना सूक्ष्म हुने गर्दछ । बाह्य संरचनालाई पाउ, चरण, पक्तिपुञ्ज, लय, गुण, शब्द गुच्छको संयोजन आदिले निर्माण गर्ने गरिन्छ भन्ने भित्री संरचनालाई कविताको मूल भाव र विचारको परिणतिबाट हेर्ने गरिन्छ ।

### ३) लयविधान

कविता विधाको मुख्य विधागत परिचायक तत्त्व लयविधान हो । कविताको भित्री सङ्गीत लय हो । लयका माध्यमबाट कवितामा भावको संयोजन गर्ने गरिन्छ । यसको सृष्टि कवितामा शब्द गुच्छा, पञ्चिक-पञ्चिक, श्लोक-श्लोक मिलाएर गर्ने गरिन्छ । कविताका गद्य र पद्य दुई भेदमध्ये पद्य कवितामा वार्णिक तथा मात्रिक भित्री बाहिरी लय मिलेको हुन्छ भने गद्य कवितामा भने भित्री लय प्रधान बनाएर लेखिएको हुन्छ । लयको उत्कृष्ट आयोजनमै कविता उत्कृष्ट बन्न पुग्ने भएकाले लयविधान कविताको महत्त्वपूर्ण तत्त्वका रूपमा लिने गरिन्छ ।

### ४) भावविधान

भावविना कविताको कल्पना पनि गर्न सकिदैन । भावको उचित संयोजनले नै कविता उत्कृष्ट बन्नपुगदछ । कविता भाव, संरचना, भाषाशैली, कथनपद्धति र अन्य तत्त्वका माध्यमबाट अभिव्यक्त हुन्छ । विषयवस्तुको गूद, गहन, गम्भीर ज्ञानभित्र कलात्मक भाव सिर्जना गर्नसक्नु नै कविताको उत्कृष्ट भावविधान हो कवितामा कविले क्षण विशेषको वा समग्र जीवनको जस्तोसुकै अभिव्यक्ति दिए पनि पाठकलाई प्राप्त हुने मूल वस्तु भाव भएकाले यसैलाई कविताको महत्त्वपूर्ण तत्त्व मानिन्छ ।

### ५) विषयवस्तु

कविले कविताको रचनाका लागि जुनसुकै विषयलाई पनि रोज्ज सक्दछ जुन विषयवस्तुले एउटा निश्चित स्वरूप भने प्राप्त गरेको हुनुपर्दछ । कविताको वर्णन गर्ने क्रममा कवितामा कविको जीवन-दर्शनसमेत प्रस्तुत भएको हुन्छ । कवितामा प्रयोग गरिएको विषयवस्तु उपयुक्त कलात्मक एवम् जीवन्त हुन सक्नुपर्दछ ।

### ६) कथनपद्धति

कवितामा कविले कुन स्थानमा रहेर आफ्नो अभिव्यक्ति प्रकट गर्दछ त्यसै आधारमा कथनपद्धतिको निक्यौल गर्ने गरिन्छ । कवितामा कवि आफै कवितात्मक कथन गर्दछ भने त्यो कवि प्रौढोक्ति कथनपद्धतिको प्रयोग मानिन्छ । कविले कवितामा आफ्नो वर्णन नगरेर अर्काको वर्णन गरिरहँदा कविनिबद्धवक्तुप्रौढोक्ति कथनपद्धतिको प्रयोग भएको बुझिन्छ । यसका साथै आख्यानीकरणका क्रममा दृश्य चित्र, संवाद

मनोवादका नाटकीकृत कथन पद्धति अँगाल्दै आत्मालाप कथनपद्धतिको समेत प्रयोग गर्ने गरिन्छ ।

७) अलङ्कार र विम्ब विधान

कविले कवितामा भाव सौन्दर्य सृष्टि गर्नका लागि अलङ्कार र विम्बको उचित समुचित प्रयोग गर्न सक्नुपर्दछ । अलङ्कारको सन्दर्भमा भन्दा शब्दालङ्कार प्रयोग

गर्नुपर्दछ । कुनै पनि कृतिमा मुख्य अर्थको प्रतिष्ठायाँका रूपमा आउने अर्को सहवर्ती अर्थ विम्ब हो यसलाई एक प्रकारको शब्दचित्र पनि भनिन्छ । मान्छेका मनमा उत्पन्न हुने मानसिक प्रतिविम्बलाई विम्ब भनिन्छ । कवितामा विशेष अर्थ प्रतिपादन गर्ने तत्त्व प्रतिक हो । यसर्थ कविता यिनीहरूको समुचित समायोजनले उत्कृष्ट बन्न सक्दछ ।

८) भाषाशैली

भाषा अभिव्यक्तिको माध्यम हो । कवितामा गद्य तथा पद्य भाषाको प्रयोग गरिन्छ । कविताको भाषा गद्य वा पद्य जेसुकै भए पनि लयात्मक हुनु अनिवार्य मानिन्छ । भाषाका वर्ण, पद, शब्दले रागात्मकता, लयात्मकता, लालित्य र माधुर्य संयोजन गर्न सक्नु शैली हो । स्तरीय भाषाको प्रयोग कवितामा उचित मानिन्छ । कविताको भाषा अभिधात्मक भन्दा लाक्षणिक र व्यञ्जनात्मकका साथै सङ्केतात्मक हुनपर्दछ । कवितामा लय पैदा गर्नको लागि विचलन युक्त भाषाको प्रयोग गरिन्छ । भाषाशैलीको उचित प्रयोगबाट नै कविताले आफ्नो मूर्त रूप प्राप्त गर्दछ ।

समग्रमा कविता एउटा मूल संरचना हो भने अन्य पक्षहरू त्यसका अङ्गप्रत्यङ्गहरू हुन् । यिनै तत्त्वहरूको उचित समुचित समायोजनले उत्कृष्ट कविताको सिर्जना हुन सक्दछ ।

#### ४.७ कविका रूपमा हरिप्रसाद पाण्डेय

नेपाली साहित्यका चारवटा विधाहरूमध्ये कविता विधाको सिर्जना गर्ने व्यक्तिलाई कविका रूपमा चिनिन्छ । कविले आफ्नो समाज, वातावरण भित्रको भोगाइ, कल्पना तथा अनुभव आदि समेटेर कविता लेख्ने गर्दछ । तसर्थ भाषाका माध्यमबाट मानवीय संवेदनाको सौन्दर्यपूर्ण अभिव्यक्ति गर्ने व्यक्ति नै कवि हो भन्ने बुझिन्छ । हरिप्रसाद पाण्डेय आधुनिक नेपाली कवितामा भावउडानका दृष्टिले स्वच्छन्दतावादी र शिल्पका दृष्टिले परिष्कारवादी कवि हुन् । उनका कवितामा नेपाली समाजमा विद्यमान् यथार्थको चित्रण गरिएको छ । प्रकृति प्रेम, देशभक्तप्रति प्रगाढ श्रद्धाभाव, धर्म, संस्कृति र परम्पराप्रति सम्मान भाव र मानवतावादी आध्यात्मिक चेतना पाण्डेयका कवितामा मखुरित भएका छन् । उनका धेरै कविताहरूमा सामाजिक यथार्थको वर्णन गरिएको छ । उनका सबै कविता पद्यमा लेखिएको छ । पद्यलयमा पनि उनले यस सङ्ग्रहमा वार्णिक र गीति छन्दको प्रयोग गरेका छन् । पाण्डेयले उक्त कवितासङ्ग्रहमा समाजमा उत्पन्न विकृति र विसङ्गतिहरू माथि चिन्तन गर्दै, समाजलाई उज्यालोतिर ढोच्याउने प्रयास गरेका छन् । समग्रमा पाण्डेयलाई कविका रूपमा परम्परा र आधुनिकतालाई सम्मिलित गर्दै भावलोकमा विचरण गर्ने कविका रूपमा लिन सकिन्छ ।

वर्तमान समयसम्म कवि हरिप्रसाद पाण्डेयले एउटा कवितासङ्ग्रहको प्रकाशन गरेका छन् । जसको नाम ‘सम्भना’ (२०६२) रहेको छ । प्रस्तुत कवितासङ्ग्रह भित्र पन्थ वटा कविताहरू सङ्कलन गरिएका छन् । ती कविताहरूलाई निम्नानुसार अध्ययन गरिएको छ ।

#### ४.७.१ सम्भना

सम्भना कवितासङ्ग्रहभित्र सङ्कलित ‘सम्भना’ सबैभन्दा पहिलो कविता हो । यसै कविताको नामबाट सिङ्गो सङ्ग्रहको नाम राखिएको छ । जीवनको तीतोक्षणको यथार्थको सम्भना गरिएकाले प्रस्तुत शीर्षक र त्यसमा रहेका भावका बीचमा सामाज्जस्य रहेको छ । बाह्रवटा श्लोकमा संरचित प्रस्तुत कविता छोटो फुटकर रहेको छ । कविले यसमा सामाजिक विषयवस्तुको प्रयोग गरेका छन् । कुसङ्गतमा परेर जुवातास र रक्सीले मातिएर श्रीमतीमाथि कुटपिट गरी पारिवारिक

वातावरणलाई धमिल्याउने पुरुषहरूको अहम्लाई यस कविताले व्यक्त गरेको छ । यस कवितामा प्रयोग भएकी नारी पात्र आफ्नो लोगनेको ज्यादतीका कारण घरबाट बाहिर निस्किएको देखाएर समाजमा यस्ताखालका यथार्थ घटना हुने र नारीले आफ्नो जीवन तिलाञ्जलिसमेत दिनुपर्ने स्थिति आउन सक्ने भएकाले कविता यथार्थवादी धारामा लेखिएको छ । छोरीको जन्म अब कहिल्यै नहोस् भनेर बिन्ती गरेको देखाएकाले प्रस्तुत कविता आदर्शवादतर्फ उन्मुख पनि देखिन्छ । समाजमा कठिपय पुरुषहरूका नराम्रा गतिविधिका कारण नारीले भोगनु पर्ने दुर्दशाको यथार्थ चित्रण गर्नु यस कविताको सारवस्तु हो । मीठो खान राम्रो लाउन नपाए पनि माया, प्रेम, सद्भाव छ भने पारिवारिक वातावरण राम्रो हुनसक्छ भन्ने यथार्थलाई पनि यस कवितामा देखाइएको छ ।

प्रस्तुत कवितामा शार्दूलविक्रीडित छन्दको प्रयोग गरिएको छ । प्रत्येक दुईदुई हरफको अन्त्यमा भएको अन्त्यानुप्रासले कवितालाई साङ्गीतिक बनाएको छ । उक्त कविता पद्यमा लेखिएको छ । सरल तथा लयगत भाषाले कविता मीठासयुक्त बनेको छ । उपमा अलङ्कारको प्रयोगले गर्दा कविता रोचक बनेको छ । जस्तै :-

सन्ध्यामा वनशैलको शिखरमा सूर्जे उदाएसरि  
गौरीशंकर शैलको शिखरमा लाली फिजाएसरि ।  
काँडा भै मुटु घोच्दथे नि तिनले गाली गरेको क्षण  
मयालू जनमात्र प्रेमरसका बन्धन् कुनै नन्दन ।

#### ४.७.२ भावना

भावना कविता नौ पडक्तिपुञ्जमा संरचित रहेको छ । प्रस्तुत कवितामा प्रेमी नहुँदा दुखी हृदयले गरेको बिलौनालाई विषयवस्तु बनाइएको छ । स्वच्छन्दतावादी भावधारामा लेखिएको प्रस्तुत कविता तृतीय पुरुष कविनिबद्ध पात्र प्रयोग गरी रचना गरिएको छ । पाण्डेयले उक्त कवितामा आफ्ना हृदयमा जमेर बसेका भावहरूलाई तरल सुन्दर शैलीमा मार्मिक उद्घाटन गरेका छन् ।

लौ जा बादल दूरदेश मनका भारी बिलौना लिई

सारा पीर पखालिदे मन छिँडै उद्यानभित्रै गई

प्रकृतिवर्णनसँगै मनको भावनालाई प्रस्तुत कवितामा मीठासपूर्ण ढुगाले अभिव्यक्त गरिएको छ । प्रेमीको भावनामा डुबेर बसेको एक यात्रीको हृदयभित्रको भावनालाई उद्घाटन गर्नु यस कविताको मुख्य उद्देश्य रहेको छ । कवितामा १९ अक्षर हुने शार्दूलविक्रीडित छन्दको प्रयोग गरिएको छ । प्रेमीको हुकेको शरीरलाई प्रेमिकाको बिछोडले गर्दा सम्हालन गाहो पर्ने यथार्थ कविताको केन्द्रीय भाव हो । अन्त्यानुप्रासको गेयात्मक लयले गर्दा कविता मीठासपूर्ण बनेको छ । प्रेमिकाको बिछोडमा हुने प्रेमीको हृदयभित्रको दुःखद भावनालाई प्रकृतिवर्णनसँगै व्यक्त गरिनुले भावना शीर्षक हेर्दा सार्थक रहेको छ । कविताको भाषाशैलीलाई हेर्दा स्वच्छन्दतावादी चेत जुर्मुराएको पाइन्छ । तत्सम, तत्भव शब्दहरूको प्रयोग गरिनुका साथै कविता पद्यमा लेखिएको छ । हिमनदी, उद्यान, फूल, वन, चरी काँडाजस्ता प्रकृतिचित्रणले गर्दा कविता भनै उत्कृष्ट बनेको छ । भावमा बगेर पनि कविताको कलापक्षलाई सम्हालन सक्नु प्रस्तुत कविताको महतत्त्वपूर्ण पक्ष देखिन्छ ।

#### ४.७.३ प्रभात

प्रभात कविता विशुद्ध प्रकृति वर्णनमा आधारित रहेको छ । यसमा सूर्य उदाएपछिको प्रात-कालीन सुन्दरताको वर्णन गरिएको छ । यस कविताको शीर्षक र विषयवस्तुमा तादात्म्यता रहेता पनि मुख्य भावभूमिसँग शीर्षक सार्थक देखिँदैन । सूर्य उदाएपछिको प्रकृति र त्यहाँका प्राणीहरूको चहलपहलको उज्यालो अवस्थालाई कविताले आफ्नो विषयवस्तु बनाएको छ । ४-४ पङ्क्तिमा संरचित प्रस्तुत कवितामा चार वटा अनुच्छेदहरू रहेका छन् । प्रभात कवितामा सुरूको एक अनुच्छेद शार्दूलविक्रीडित छन्द र अरू तीनवटा अनुच्छेदमा उपजाती छन्दको प्रयोग गरिएको छ । सूर्य उदाएपछि प्रकृतिमा देखिने रमणीय वातावरणको चित्रण कवितामा गरिएको छ । सूर्यको उज्यालोबिना सम्पूर्ण प्राणीजगत् अन्धकार बन्द भन्ने भावभूमि कवितामा रहेको छ । प्रत्येक पङ्क्तिको अन्त्यमा आएको अन्त्यानुप्रासले कवितामा लयको सिर्जना भएको छ । विशुद्ध प्रकृतिचित्रण गरी लेखिएको यो कविता स्वच्छन्दतावादी

भावधारामा रचिएको छ । सरल तथा स्वाभाविक भाषाशैलीले गर्दा कविता सबै पाठकका लागि सम्प्रेष्य बनेको छ ।

#### ४.७.४ दुःख

कवि पाण्डेयद्वारा रचित दुःख कविता लघु संरचनामा लेखिएको छ । यस कवितामा सामाजिक यथार्थको चित्रण गरिएको छ । ग्रामीण समाजमा कृषि पेशा गरेर आफ्नो जीविका चलाउने पात्रको प्रयोग कवितामा भएको छ । साहूको ऋणमा सधैँ भौतारिनुपर्ने ग्रामीण निमुखा परिवारलाई कविले आफ्नो विषयवस्तु बनाएका छन् । आफ्नो छोरा पढाउनका लागि एउटा बाबुले घरखेत बन्धक राखेका थिए तर त्यो छोराले बाबुलाई विष भई कडा वचन लगाएपछिको अवस्थालाई पनि यहाँ देखाइएको छ । बाबुआमाले दुःख गरी हुर्काएका र पढाएका छोराछोरीले बाबुआमाको दुःखलाई बुझ्न नसकदा पारिवारिक स्थिति नराम्रो बन्दछ भन्ने कुरालाई यस कवितामा व्यक्त गरिएको छ । छोराछोरीले आफ्ना आमाबाबाको कर्तव्यलाई कहिल्यै भुल्नु हुँदैन भन्ने सन्देश कविताले प्रस्तुत गरेको छ । गाउँमा बाबुआमाले दुःख गरेर पढाएका छोराछोरी सहरमा बस्न थालेपछि तिनै आमाबाबुलाई कसरी हेला गर्दैन भन्ने तीतो यथार्थलाई कविताले देखाएको छ । गाउँमा बसेर दुःखमा रहेको छोराले बाबुआमाको दुःख बुझेको तर पढाएर शिक्षित बनाएर सहरमा बसेको छोराले भने अपहेलना गरेको कुरा कवितामा देख्न सकिन्छ । ग्रामीण समाजमा कृषि पेसा गर्ने मानिसले आफ्नो परिवारको हातमुख जोर्न समेत धौधौ पर्ने स्थितिलाई यहाँ देखाइएको छ । बाबुआमा गुमाएको, घर खेत साहूको ऋणमा परेको व्यक्तिलाई समेत गाउँका साहू-महाजनले बाँकी राख्दैनन् । त्यस्ता दुःखी व्यक्ति त्यही साहु कै आश्रयमा बस्नु पर्ने बाध्यतालाई कवितामा प्रस्तुत गरिएको छ । दुःख सुखमा साथ दिई हुर्काउने पढाउने आमाबाबुलाई छोराछोरीले सहरमा बसी भन्दैमा अपहेलना गर्नुहुँदैन सधैँ सम्मान गर्नुपर्दछ भन्ने सन्देश कवितामा रहेको छ ।

प्रस्तुत कविता दशवटा अनुच्छेदमा संरचित छ । यसमा शार्दूलविक्रीडित छन्दको प्रयोग गरिएको छ । अन्त्यानुप्रासको राम्रो संयोजन गरिएको उक्त कविता पद्यमा रचिएको छ । यसमा म पात्रको प्रयोग गरिएको छ । भाव र भाषाशैलीको

सन्तुलित लयप्रवाह कविताको संरचनासँगै तादाम्यताका साथ प्रकटीकरण हुन पुगेको छ । ग्रामीण समाजमा खेतीपाती गर्ने वर्गको आर्थिक दयनीय स्थितिले गर्दा ऋण बोक्नुपर्ने स्थिति र छोराछोरीले बाबुआमालाई गर्ने अपहेलनालाई देखाउन प्रस्तुत कविताको सिर्जना गरिएको छ ।

#### ४.७.५ सन्देश

सन्देश कविता नौ वटा अनुच्छेदमा संरचित लघु कविता हो । यस कवितामा अध्यात्मलाई मूल विषयवस्तु बनाइएको छ । कविले प्रस्तुत कवितामा समाजमा भएका नराम्रा कामहरूलाई त्यागी सत्य र आदर्श हुन सकियो भने मात्रै हाम्रो समाजअगाडि बढ्न सक्छ भन्ने सन्देश दिएका छन् । मन सन्तोष बनाउनु, निस्वार्थ कर्म गर्नु, शत्रुमाथि पनि माया गर्नु, दुर्व्यसनी नगर्नु, मन फुकाएर दान गर्नु, स्वधर्मले चित्त पवित्र राख्नु, मनमा आनन्द लिनुजस्ता नीतिसन्देशद्वारा कविता ओतप्रोत भएको छ । समाजलाई सही मार्गमा डोन्याउनका लागि आदर्श सन्देश व्यक्त गर्नु नै यस कविताको मुख्य भाव रहेको छ । धन सम्पत्तिले मात्र मानिसलाई शान्ति मिल्दैन, मनमा सन्तोष भएमात्र शान्ति पाइन्छ भन्ने कुरालाई कविताले व्यक्त गरेको छ । मोहले मान्छेलाई सधै अशान्तितिर धकेल्छ त्यसैले आनन्दसँग बाँच्न सिक भन्ने सन्देश पनि दिएको छ । संसारमा ईश्वरको मात्र भक्ति गरौं, श्रद्धा गरौं, मनलाई स्वधर्मले पवित्र पारौं भन्ने सन्देश कविले यस कवितामा बताएका छन् ।

प्रस्तुत कवितामा उपजाति छन्दको प्रयोग गरिएको छ । कविता वद्ध लयमा रचना भएको छ । यस कवितालाई हेर्दा कवि पाण्डेय नीतिचेतनावादी कविका रूपमा देखिन्छन् । उनमा धर्मप्रति प्रगाढ विश्वास छ, ईश्वरप्रति गहिरो आस्था छ । यस कवितामा समाजमा देखिने यथार्थको चित्रण पनि छ । यो संसार निमित्त मात्र हो, गर्ने गराउने उनै ईश्वर हुन् । ईश्वरको भक्ति गर, मन शुद्ध बनाउजस्ता रहस्यवादका कुरा यसमा रहेका छन् । कविता परिष्कारवादी धारामा रचिएको छ । प्रस्तुत कविताले यथार्थका साथसाथै आदर्शवादलाई पनि अगाडि बढाएको छ । सरल तथा लयात्मक मीठो भाषाशैली प्रयोगले गर्दा कविता अत्यन्त मीठो बनेको छ । पाण्डेयले समाजमा

हुनेगरेका कतिपय आलोच्य विषयलाई आलोचना गरेर समाजलाई उज्यालोतर्फ लाने प्रयास गरेका छन् । यस दृष्टिले पाण्डेय केही नीतिचेतनावादी पनि बनेका छन् ।

ती भाइबैनी अनि इष्टमित्र  
यी ईश्वर हुन् भन भित्र भित्र ।  
देखाउ माया अनि शत्रुमाथि  
संसार सारा बनिदिन्छ साथी ॥

यसरी भावपूर्ण रहेका यस्ता पञ्चितपुञ्जबाट सन्देश कविता रचिएको छ । अन्त्यानुप्रासको राम्रो संयोजन गरिएकाले लय विधानका दृष्टिले कविता उत्कृष्ट बनेको छ । निस्वार्थ कर्म गरी मनको मोह हटाई मनलाई पवित्र पार्न सके मात्र मन शान्ति रहन्छ भन्ने सन्देश कवितामा व्यक्त गरिएको छ । जुवा र तास नखेल, दुर्व्यसनी नबन, सबैमा दया राख, खुलेर दान गर्न सिक्जस्ता देशभक्तिपूर्ण सन्देशलाई व्यक्त गर्नु यो कविताको उद्देश्य रहेको छ ।

#### ४.७.६ वेदना

वेदना कवितामा तत्कालीन समयमा समाजमा देखापरेको राजनीतिक विसङ्गतिलाई विषयवस्तु बनाइएको छ । राजनीतिक विसङ्गतिका कारण समाजमा देखापरेका हत्या, हिंसा, खिचातानी, कुर्सीको मोह, अकाल मृत्युजस्ता कटु यथार्थलाई कवितामा देखाइएको छ । यस्ता कुराहरूसँग वेदना शब्दको अर्थ राम्रोसँग मिल्ने भएकाले कविताको शीर्षक सार्थक देखिन्छ । कविले उक्त कवितामा हत्या हिंसाका कारण देश छोड्न र एकलै बाँच्न नपरोस् भन्ने देशभक्तिपूर्ण आशय व्यक्त गरेका छन् । साथै कविले कुर्सीको नाम जपेर पनि आफू बाँच्न नपरोस् भन्ने इच्छा व्यक्त गरिनुले तत्कालीन राजनीतिप्रति व्यझग्यप्रहार गरेको देखिन्छ ।

प्रस्तुत कविता चारवटा अनुच्छेदमा रचना गरिएको छ । यसमा शार्दूलविक्रीडित छन्दको प्रयोग गरिएको छ । अन्त्यानुप्रासको उचित समायोजनले कविताको लयविधान उचित देखिन्छ । प्रथम पुरुष कविपौढोक्ति कथनढाँचामा कविताको रचना गरिएको छ । कवितामा ठाउँठाउँमा उपमा अलङ्कारको प्रयोग गरिएको छ ।

वार्ता मात्र भनेर भाषण गरी भन्ने गरेकाहरू आफै खाडलमा परे मृतकभै पानी मरुवाहरू

नेताहरूको सत्ताको खिचातानीमा परी देशमा हत्या हिंसाका कारण रगतको खोलो बगेको तत्कालीन राजनीतिक परिवेशको यथार्थ चित्रण कवितामा व्यक्त भएको छ । यस्ता हत्या र हिंसालाई त्यागी शान्तिको उपाय सोच्नुपर्ने सन्देश कविले आफ्ना वेदनामार्फत प्रस्तुत गरेका छन् । देशको अस्तित्व जोगाउन शान्ति आउनु पर्ने सन्देश व्यक्त गर्दै कविले हत्या हिंसाका कारण आफूमा त्यसप्रति पलाएको वेदनालाई व्यक्त गर्नुले कवितामा देशभक्तिको भावना ज्यादै सशक्त रहेको छ ।

माओवादी समस्याका कारण देशमा चर्किएको द्वन्द्वले समाज तत्कालीन समयमा अस्तव्यस्त थियो । वार्ता पनि हुन सकेको थिएन । त्यही तत्कालीन यथार्थलाई कविताले आफ्नो विषयक्षेत्र बनाएको छ । देशको अस्तित्व जोगाउनका लागि देशमा शान्ति ल्याउनुपर्ने धारणा व्यक्त गर्नु यस कविताको मूल भाव हो ।

੪.੭.੭ ਪੀਡਾ

पीडा पद्यात्मक शैलीमा लेखिएको कविता हो । यसमा शार्दूलविक्रीडित छन्दका सातवटा श्लोकहरू रहेका छन् । आफ्ना सन्तानहरू हत्या हिंसाको बाटोमा लागेकाले नेपाल आमाको हृदय पीडाले जलेको कुरा कवितामा व्यक्त गरिएको छ । नेपाल आमाका एउटै कोखका दुई सन्तति दुई विपरीत बाटोमा लागि एक अर्काका बीचामा हत्या हिंसा गरेकोमा कवि चिन्तित देखिन्छन् । तत्कालीन राजनीतिक परिवेशले जन्माएको विसङ्गतिले गर्दा नेपाल आमाको हृदय पीडाले जलेको देखिन्छ । कविले यो कविता मार्फत देशभक्तिपूर्ण भावना व्यक्तगरेका छन् । लाखौं मरेर गरिएको क्रान्तिले शान्ति कहिल्यै आउदैन भन्ने कुरालाई पनि कविले प्रस्तुत गरेका छन् । यो कवितामा कवि पाण्डेयले नेताहरू महान् र जनता नाझ्गा बनेका यथार्थतालाई पनि प्रकटगरेका छन् ।

प्रस्तुत कवितामा शार्दूलविक्रीडित छन्दको प्रयोग गरिएको छ । यो संरचनाका हिसाबले सातवटा पद्ममा रचिएको छोटो कविता हो । यस कवितामा पनि अन्त्यानुप्रासको राम्रो संयोजन भएको छ । लाखौंको मृत्युपछि आएको शान्तिले वास्तविक शान्ति दिईन । त्यसैले शान्ति ल्याउन बत्ति बालेर खोज्नु जत्तिकै व्यर्थ छ भन्ने आशय कवितामा मुखरित भएको

छ । नेपालको राजनीतिक असङ्गतिका कारण हत्याहिंसाको त्रासदी स्थितिले नेपाल आमाको हृदयमा पीडाबोध भएको छ । माओवादी र सैनिक दुवैको चपेटामा परेका सिधासाधा जनताले लाटो बन्नपर्ने स्थितिको जन्म भएको छ । जनशक्तिको अभावमा खेतबारीहरू बाँझा भएका छन् । दिउँसै स्याल कराउने स्थिति देखापरेको छ । जनता नाड्गा बनेका छन् । नेता भने भन् महान् बन्दै गएका छन् । यस्तो स्थिति देखापरेकाले नेपाल आमाको हृदय पीडाले जलेको छ । नेपाल आमा आफ्नो छोरालाई शिक्षित बनेको हेर्न चाहन्छन् । जनतामा शान्ति आउनका लागि क्रान्तिविनाको शान्ति आवश्यक छ भन्ने कुरा नै यस कविताको मुख्य भाव रहेको छ । नेपाल आमाले जनतामा देखापरेको पीडालाई व्यक्त गर्नु र कविताको शीर्षक पनि पीडा हुनुले शीर्षक र भावका बीचमा सामन्जस्य देखिन्छ । यस कवितामा सरल तथा लयात्मक मीठो भाषाको प्रयोग गरिएको छ । शिल्पपरिस्कारका दृष्टिले पनि यो कविता उत्कृष्ट रहेको छ ।

#### ४.७.८ बाला

बाला कविता दशवटा पञ्चक्षिपुञ्जमा संरचित रहेको छ । प्रस्तुत कविता बाला नाम गरेकी एउटी बालिकाको जीवनमा आधारित छ । आमाको मृत्युले सानैमा टुहुरी बनेकी बालाको विवाह आठ वर्षमा हुनु, उसकी सासू कर्कश स्वभावकी हुनु, लोग्ने दुर्व्यसनीमा लाग्नुले गर्दा बालाको जीवन वर्वाद भएको कुरा कवितामा व्यक्त भएको छ । ग्रामीण समाजमा हुने बालविवाह र त्यसबाट जन्मिने नारीको समस्यालाई कविताले आफ्नो विषयवस्तु बनाएको छ । बालविवाहका कारण देखापर्ने नारी समस्यालाई व्यक्त गर्नुका साथै दुर्व्यसनीका कारण आर्थिक समस्या आउने तीतो यथार्थलाई बाला कवितामा प्रस्तुत गरिएको छ । सानै उमेरमा विवाह गर्दा देखापर्ने यस्ता समस्याबाट टाढा रहन बालविवाहलाई रोक्नुपर्ने सन्देश कवितामा व्यक्त भएको छ । कुसङ्गतले मानिसलाई नराम्रो चरित्रमा लाग्न प्रेरणा दिने भएकाले त्यसबाट समयमा नै सचेत रहनपर्ने सन्देश कवितामा मुखरित भएको छ । प्रस्तुत कवितामा धर्तीमा सूर्य उदाएर उज्यालो भए पनि बालाको जीवनमा कहिल्यै उज्यालो नआएको तीतो यथार्थलाई देखाइएको छ । यसरी प्रस्तुत कवितामा बालविवाहजस्तो सामाजिक सांस्कृतिक

विकृतिजन्य पीडाबाटग्रस्त चेलीले भोग्नुपरेको दुरावस्थाको मर्मस्पर्शी चित्रण गरिएको छ

।

बाला कवितामा तृतीय पुरुष कथनपद्धतिको प्रयोग भएको छ । यसमा शार्दूलविक्रीडित छन्दको प्रयोग गरिएको छ । सरल र परिस्कृत भाषाशैलीले गर्दा यो कविता अझै राम्रो बनेको छ । भाषाशैली जति रम्य र सहज छ त्यतिकै भावबोध र प्रस्तुतिले हृदयस्पर्शी बालाको जीवनको आत्मालाप बन्न पुगेको छ । प्रत्येक श्लोकमा रहेको अन्त्यानुप्रासले कवितामा मीठो लयको सृजना भएको छ । शिल्प तथा भावको उचित संयोजनले बाला कविता उत्कृष्ट रहेको छ ।

#### ४.७.९ नेपाल

नेपाल कविता चारवटा पञ्चतिपुञ्जमा संरचित छोटो फुटकर कविता हो । यो कविता परिस्कारपूर्ण शैलीमा लेखिएको छ । कवितामा सधैँ अरूपकै भरमा प्रभावित परिचालित भइरहने नेपाली राजनीतिको कुरूप यथार्थको चित्रण गरिएको छ । प्रस्तुत कवितामा नेपाल एउटा रङ्गमञ्च हो यहाँ नाच्ने धेरै भए तापनि नचाउने सूत्रधार पर्दापछाडि रहेको तीतो राजनीति यथार्थलाई उतारिएको छ । भोका नाड्गा जनताहरू अविश्वासका कारण खेदिएका छन् । मीठो बोलीले स्वार्थ लुट्न पल्केकाहरूले विश्वलाई तथा मित्रबन्धुलाईसमेत आघात पार्ने गर्दछन् ।

प्रस्तुत कविताले तत्कालीन राजनीतिक विकृतिका कारण समाजमा देखापरेका समस्यालाई आफ्नो विषयवस्तु बनाएको छ । कविता इन्द्रवज्ञा छन्दमा रचना भएको छ । साथै अन्त्यानुप्रासको राम्रो संयोजनसमेत भएको छ । नेपाल एउटा रङ्गमञ्च सरह भएको र त्यहाँ पर्दापछाडिको खेल सशक्त रहेको तीतोयथार्थ सबैले बुभ्नुपर्ने सन्देश कविताले प्रस्तुत गरेको छ । तत्कालीन समयमा स्वार्थ तथा भुट्को खेती ज्यादा हुनेगरेको र सीधासादा जनतामारमापरेका यथार्थलाई उतार्नु यो कविताको मुख्य उद्देश्य रहेको छ । छोटो संरचनामा संरचित प्रस्तुत कविता भाव, तथा शिल्प दुवै दृष्टिमा उत्कृष्ट रहेको छ ।

४.७.१० म

म कविता आफ्नै स्वभावगत विविधताको वर्णन गरिएको कविता हो । प्रस्तुत कविता स्वच्छन्दवादी भावधारामा लेखिएको छ । चारवटा पञ्चक्तिपुञ्जमा संरचित यो कविता प्रथम पुरुषीय कविप्रौढोक्ति ढाँचामा लेखिएको छ । यो कवितामा कविले आफ्नै मानसिक भावभिव्यक्तिलाई प्रस्तुत गरेका छन् । कविले आफूलाई सूर्य बनेर शीतल-शान्ति दिने, फूल बनेर सुगन्ध छर्ने, फूल चुस्ने भमरो विचर्नेजस्ता स्वभावको रूपमा चिनाएका छन् । यी कुराहरूलाई हेर्दा कवि पाण्डेय आफू भावमा उडेका देखिन्छन् । धर्ती, हलो, हावा, स्वर्ण, मोति, पीयुष, कैलाशको अमृत कोश, शिवको गलाको नागमाला कलाको असली पारखीका रूपमा आफूलाई चिनाउनुले गर्दा कविलाई आदर्श व्यक्तित्वका रूपमा देख्न सकिन्छ । प्रस्तुत कवितामा भाषिक कोमलता लयगत प्रवाहमयताका सँगसँगै भावगत गम्भीरतमा कवि अलिक पछि परेको देखिन्छ । स्वच्छन्दतावादी भाव उडानमा कविले आफ्नो स्वभावगत विविधताको वर्णन गरेकाले कवितामा भावपक्ष अलिक खस्कन पुगेको देखिन्छ । कविले आफ्नो असली स्वभावको परिचयबाट समाजमा सही सन्देश छर्न सक्नु कविताको प्रमुख उद्देश्य रहेको छ । कविको स्वभावको अनुसरन सबैले गर्ने हो भने समाज अग्रगतितिर लाग्ने सन्देश कवितामा पाउन सकिन्छ ।

प्रस्तुत कविता उपेन्द्रबज्ञा छन्दमा लेखिएको छ । साथै कविता शिल्प संरचनाका दृष्टिले उत्कृष्ट रहेको छ । अन्त्यानुप्रासको उचित संयोजनका कारण कविता मीठो तथा लयात्मक बनेको छ ।

४.७.११ वन

वन कविता विशुद्ध प्रकृति वर्णनमा आधारित रहेको छ । प्रस्तुत कवितामा हरियालीमय वनको चित्रण गरिएको छ । वनको प्राकृतिक वातावरणको चित्रण गरी सौन्दर्यमय प्रकृतिको चित्रण गर्नु कविताको विषयवस्तु रहेको छ । वनको सौन्दर्यपूर्ण परिवेशमा फुलेका गुराँस, लतालहरा त्यहाँ नाच्ने चराहरू, वनमा फल्ने फलहरू, ताल तलैयामा रमाएका रजहाँसहरूजस्ता विविध प्राकृतिक छटालाई कवितामा व्यक्त गरिएको

छ । प्रकृतिप्रेमी कवि प्रकृति मै सम्पूर्ण सुखको अनुभूत हुने कुरालाई यस कविता

मार्फत व्यक्त गर्दछन् । प्रस्तुत कविताले प्राकृतिक सुख नै सबभन्दा मनमोहक हुन्छ भन्ने सन्देश बोकेको छ । उक्त कविताको सौन्दर्यभावलाई हेर्दा कवि पाण्डेयलाई सौन्दर्य चेतनालाई आत्मसात् गर्न सक्ने कविका रूपमा लिन सकिन्छ ।

प्रस्तुत कविता आठवटा पड्तिपुञ्जमा संरचित रहेको छ । साथै यसमा उपजाति छन्दको प्रयोग गरिएको छ । अन्त्यानुप्रासको उचित संयोजनले कवितामा सङ्गीतमय लयको सिर्जना भएको छ । प्रकृतिचित्रणको सन्दर्भमा उनले विम्बको निर्माण गरेका छन् ।

कपूर काडयो पहरा बसेका  
भौंराहरूले पुष्प चुसी रहेका  
लताहरूले गरी अड्कमाल  
बनाउँदै छन् रुख ती विशाल ।

वन कविता भाव उडानका दृष्टिले स्वच्छन्दतावादी र शिल्पका दृष्टिले परिस्कारवादी धाराले ओतप्रोत रहेको छ । वनमा हुने विविध प्राकृतिक सौन्दर्यको वर्णन गर्नुले प्रस्तुत कविताको शीर्षक र भावका बीचमा तादात्म्य देखिन्छ । यो कविताको मुख्य सन्देश प्राकृतिक आनन्द नै सबैभन्दा ठूलो आनन्द हो भन्ने रहेको छ ।

#### ४.७.१२ मोह

मोह कविता पत्नीको मोहमा परेर आफूलाई नौ-नौ महिनासम्म गर्भमा बोकेर जन्म दिने र हुर्काउने ममतामयी आमालाई घरबाट निकाल्ने अज्ञानी पुत्रको कुकर्मको विषयमा आधारित छ । छोरो जन्माई ठूलो बनाएर सुख पाउने आशा बोकेका आमाहरूले मोह कविताको जस्तै तीतो यथार्थ भोग्न परको कुरा समाजमा आज पनि देख्न सकिन्छ । यस कवितामा प्रयोग भएको पात्रले विवाह गरेर श्रीमती घरमा ल्याएपछि सुखभोगमा लिप्त रहेर आमाको वेवास्था गरेको छ । आमालाई घरबाट निकालेर उक्त पात्रले आफ्नो कुकर्मलाई देखाएको छ । शीर्षक र भावका बीचमा तादात्म्यता भएकाले कविताको शीर्षक मोह सार्थक रहेको देखिन्छ ।

प्रस्तुत कविता बद्ध लयका तेहवटा पञ्चिकुञ्जमा संरचित छ । यसमा शार्दूलविक्रीडित छन्दको प्रयोग भएको छ । अन्त्यानुप्रासको उचित संयोजनले लयविधान पनि उत्कृष्ट रहेको छ । शिल्प संरचना र भाव दुवैको राम्रो सन्तुलनले कविता पठनीय बनेको छ ।

मोह कविता तृतीय पुरुष कथनपद्धतिमा रचिएको छ । स्वास्नीको भुठो कुरालाई सुनेर आमालाई घरबाटसमेत निकाल्न पछि नपर्ने अज्ञानी पुत्रको चरित्रलाई कवितामा देखाइएको छ । छोराले जन्मदिने र हुकाउने आमाप्रति गर्नुपर्ने कर्तव्यलाई कहिल्यै भुल्नु हुदैन भन्ने सन्देश मोह कविताले प्रस्तुत गरेको छ । बुहारीको नखरामा परी जन्म दिने आमालाई अज्ञानी छोराले गरेको नराम्रो व्यवहारबाट आमाको हृदय छिया-छिया भएको छ । यस्ता कार्यबाट टाढा रहन प्रस्तुत कविताले सम्पूर्ण छोरा बुहारीलाई सन्देश प्रदान गरको छ । आमाबाबुप्रति छोराको कर्तव्य कस्तो हुनुपर्छ ? भन्ने प्रश्न कविताले उठाएको छ । आफ्नो कर्तव्यलाई बनुभी मोहमा भुल्नु बेकार हो भन्ने भाव मोह कवितामा व्यक्त भएको छ ।

#### ४.७.१३ विचार

विचार पद्मलयमा रचिएको फुटकर कविता हो । यो कविता चारवटा पञ्चिकुञ्जमा संरचित रहेको छ । परिस्कारपूर्ण शैलीमा रचिएको यो कवितामा उपजाति छन्दको प्रयोग गरिएको छ । तत्कालीन समयमा नेपालमा व्याप्त हत्या हिंसाको चित्रण गर्दै प्रस्तुत कविता रचिएको छ । राजनीतिक विसङ्गतिका कारण समाजमा आज देखापरेका अशान्ति क्रियाकलापप्रति कविताको विचार मुखरित भएको छ । कविता नेपाली समाजमा प्रचलित उखानलाई कविताको साँचोमा ढालेर सम्झनामा रहिरहने सुक्तिजस्तै तुल्याइएको देखिन्छ ।

जस्तै :

खौरी मसीनो नहुने कदापि  
दिएर आफ्नो नहुने कुनै ती  
पाकेर पानी पनि बाक्लैन  
पवित्र माया ईखमा हुदैन

तत्कालीन समयमा देशमा द्वन्द्वका कारण चर्किएको हत्या हिंसाले गर्दा शान्ति हुन नसकेको विचार प्रक्षेपण गर्नु कविताको महत्वपूर्ण पक्ष हो । यस कवितामा खौरेर कहिल्यै मसिनो नहुने पानी पाकेर कहिल्यै बाक्लो नहुने भए जस्तै द्वन्द्वबाट शान्ति कहिल्यै नआउने तीतो यथार्थलाई देखाइएको छ । देशमा शान्ति अमनचैन कायम गर्नका लागि हत्या-हिंसा रोक्नु पर्ने र त्यसका लागि सबै लाग्नु पर्ने कुरालाई कविले विचार कवितामा प्रस्तुत गरेका छन् । सबैले आ-आफ्नो निहुँ भिकेर द्वन्द्वलाई फैलाउनु भएन त्यसो गर्दा शान्ति स्थापना कहिल्यै हुन सक्तैन भन्ने मुख्य सन्देश कवितामा व्यक्त गरिएको छ । साथै शिल्पपरिस्कारका दृष्टिले कविता उत्कृष्ट रहेको छ ।

#### ४.७.१४ बद्रीनाथ यात्रा

बद्रीनाथ यात्रा कविता यात्रा वर्णनमा आधारित छ । यो कविता सम्झना कविता सङ्ग्रहभित्र दीर्घ संरचनामा रचिएको छ । एकाउन्न पङ्क्तिपुञ्जमा संरचित उक्त कवितामा भूयाउरे गीतिलयको प्रयोग भएको छ । हाम्रो धर्म, संस्कार र परम्परानुसार भारतस्थित तीर्थस्थलहरूको यात्रा गर्न चाहने नेपालीहरूका लागि समेत यो कविता राम्रो पथप्रदर्शक बन्न सक्ने देखिन्छ । यस कवितामा बद्रीनाथको दर्शन गर्नका लागि यात्रामा जाँदै गर्दा कविका आँखाअगाडि देखेभोगेका तीता मीठा यथार्थलाई देखाइएको छ ।

कवि दम्पति २०६० साल जेठ चौथ गते बद्रीनाथको दर्शनका लागि भारततिर यात्रा गरिरहँदाको सम्झना स्वरूप प्रस्तुत कविताको सिर्जना भएको हो । वर्णनात्मक शैलीमा रचना गरिएको यो कवितामा तत्कालीन यात्राको परिवेशलाई समेटिएको छ । स्वच्छ र पवित्र मनले भगवानको दर्शन गर्न गएका यात्रीलाई धर्मका नाममा ठगी गर्ने त्यहाँको परिवेश कवितामा व्यक्त गरिएको छ । भारतको स्वच्छ मानिने नदी यमुनाको तटमा ढलको फोहोर बगेको र सुझ्गुर चरेको यथार्थलाई पनि कविले यहाँ प्रस्तुत

गरेका छन् । यस कवितामा भारतका मन्दिरका पुजारीमा श्रद्धा र भक्ति नभएको पैसामा मात्रै मन गएको तीतो यथार्थलाई पनि देखाइएको छ । रूपैयाँ दिएमात्र त्यहाँ भगवानको मन्दिरमा दर्शन गर्न मिल्ने तत्कालीन परिवेशलाई कवितामा देख्न सकिन्छ । ईश्वरको दर्शन गर्नु छ भने दुःखीलाई हँसाउनु पर्छ, त्याग गरेर मात्र शान्तिको मार्ग पहिल्याउन सकिदोरहेछ भन्ने कविको अनुभवलाई यस कविताले आत्मसात गरेको छ ।

ब्रदीनाथ यात्रा कविता हाम्रो संस्कृति, परम्परालाई आत्मसाथ गर्ने जो सुकैका लागि पनि पथप्रदर्शक बन्न सफल देखिन्छ । भारतस्थित ब्रदीनाथको मन्दिरमा गयो भने मुक्ति पाउन सकिन्छ भन्ने नेपालीहरूका लागि श्रद्धा र धर्मका नाममा हुने गरेका ठगी प्रवृत्तिहरूको ज्ञान दिलाउन सक्नु यो कविताको मुख्य सन्देश रहेको छ । साँच्चकै भगवानको दर्शन गर्ने हो भने दुःखीहरूलाई हँसाई त्यागी बन्न सिक भन्ने मुख्य भाव कवितामा रहेको छ । प्रस्तुत कविता यात्रावृत्तान्तमा वर्णित रहेकाले यसको शीर्षक पनि सार्थक देखिन्छ । यस कवितामा नेपाली सनातन धर्म, संस्कृति र परम्पराप्रति हार्दिक सम्मान भाव छ, मानवतावादी आध्यात्मिक चेतना रहेको छ । धर्मका नाममा हुने गरेका विकृतिप्रति कविको मनमा अशान्ति छ । धार्मिक स्थलजस्तो शान्ति क्षेत्रमा वातावरणीय सफा, सुग्घर, श्रद्धा र भक्तिको अटल आस्था हुनु जरूरी हुन्छ । देवताको मन्दिरमा स्वेच्छाले चढाएको मात्र स्वीकार्य हुनुपर्दछ भन्ने कुरालाई पनि कवितामा प्रस्तुत गरिएको छ । कवि पाण्डेयले पूर्वीय संस्कृति र नीतिचेतनालाई अभिव्यक्त गर्नु कविताको महत्त्वपूर्ण पक्ष हो । शिल्पपरिस्कारका दृष्टिले कविता केही खुसिकएको देखिन्छ भने स्वच्छन्दतावादी भावउडान एवम् प्रकृतिप्रेम र वेदान्तीय दार्शनिक आध्यात्मिक चेतनाको प्रभाव भने देखापर्दछ ।

यसरी प्रस्तुत कविता कवि ब्रदीनाथ दर्शनका लागि भारततिर प्रस्थान गर्दा त्यहाँ देखेभोगेका तीता-मीठा अनुभवहरूको सङ्कलनमा सिर्जना भएको छ । यस कविताले कविले यात्रा गर्ने क्रममा श्रद्धा र भक्तिका नाममा लिने गरिएको दस्तुरहरू, पवित्र ठाँउमा देखिएका फोहोरहरू आदि कुरालाई विषयवस्तु बनाएको छ । प्रस्तुत कवितामा नेपाली सनातन धर्म, संस्कृति र परम्पराप्रतिको श्रद्धा भाव र मानवतावादी आध्यात्मिक चेतनाको मर्मस्पर्शी अङ्कन भएको छ । यो कविता भूयाउरे गीतिलयमा

रचिएको छ । त्यसैले यो कवितामा नेपाली सनातन धर्म, संस्कृति र परम्पराप्रति हार्दिक सम्मान भाव छ । साथै मानवतावादी आध्यात्मिक चेतना मुखरित भएको छ ।

#### ४.७.१५ यात्रा

‘यात्रा’ कविता कविले भारतको तीर्थयात्रा गर्दा देखेभोगेका कुरालाई लिएर लेखिएको छ । २०६० साल पुस महिनामा भारतको चारधाम लगायत विभिन्न तीर्थस्थलहरूमा पुगदा त्यहाँ देखेका विविधतापूर्ण दृश्यहरूका साथै अन्य रोचक कुराहरूको पनि कवितामा चित्रण भएको छ । यो कविता चौहत्तर वटा पद्ममा लेखिएको छ । लामो संरचनामा लेखिएको यात्रा कविता कविको यात्रावृत्तान्तमा वर्णित छ । यो कवितामा भूयाउरे गीतिलयको प्रयोग भएको छ ।

प्रस्तुत कवितामा कविले भारतको तीर्थस्थलहरूमा घुम्दा विविध तीता-मीठा सन्दर्भहरू समेटेका छन् । तीर्थयात्रा गर्ने क्रममा पाण्डेय दम्पती वीरगञ्जमा बास बसेर हरिहर पुगेका थिए । हरिहर क्षेत्र वरिपरि मन्दिरले गर्दा राम्रो देखिएको कुरालाई कवितामा व्यक्त गरेका छन् । पुनपुन क्षेत्रमा पुगदा कवि आफूलाई जाडो भएको शीत लहर चलेको वर्णन गर्दछन् । त्यसपछि कवि गया पुगेर धर्मशालामा बसेको र त्यहाँको बुद्धमूर्तिको बयान गर्दछन् । बाबाको धाममा पण्डाले दिएको धम्की खप्की देख्दा पाण्डेयका मनमा नराम्रो लाग्छ । भगवान्को दर्शन गर्ने लक्ष्य लिएर गएका भत्तलाई पैसाको निम्न पण्डाले दिने धम्कीलाई देख्दा कवि दिक्क हुन्छन् । कोलकाताको शिविरमा निःशुल्क खाने, बस्ने व्यवस्था थियो । त्यसपछि दक्षिणकालीको राम्रो मन्दिरको चर्चा गर्नु, कपिल मुनिको दर्शन गर्नु, नामखाना पुग्नु, उडिसा गएर खाना खानु र वैतर्णी नुहाउनु आदि कुराको चित्रण कविले गर्दै गएका छन् । पाण्डेयले मन्दिर वरिपरिको प्राचीनकलाको चर्चा गरेका छन् । त्यहाँ देखिएका प्रस्तरकला, मूर्तिकलाले आफ्नो हृदय खुलेको कुरा बताएका छन् । विष्णुधाममा दर्शन गर्न जाँदा पनि दक्षिणा पाउने आशाले पण्डाहरू बसेका थिए । कवि पाण्डेय राम हुनमानको दर्शन गर्दा मसला जङ्गलको मन्दिर वरिपरि जतातै नरिवल फलेको दृश्यको चर्चा गर्दछन् । त्यसपछि कवि दर्शन गर्न मल्लिका अर्जुन भएको ठाँउ पुग्छन् त्यहाँ कपास खेती, खुर्सानी, मौसमी, केरा, बयर र खुर्पानी बजार भरि देख्न पुग्छन् । कवि त्यसपछि तिरुपती दर्शन गर्दछन् । बालाजी मन्दिर पुग्छन् र ईशको मूर्तिमा पूजा गर्दछन् । त्यहाँ निशुल्क खाने

व्यवस्था थियो सबै श्रद्धालु भक्तजनहरू प्रसन्न थिए । कावेरीको रम्य मूल दुबारमा पनि कविले दर्शन गर्दैन् त्यसपछि शिवकाङ्चीमा शिवको दर्शन गरी कविले रामेश्वर पुरी सागर तटमा स्नान गरे र पूलचन हलमा बस्ने व्यवस्था मिलाए । त्यहाँ सफा सुग्धर, मृग र हाँसको क्रिडाले सौन्दर्य फुकेको थियो । साथै कविले नर्मदा नदी स्नान गरी महाँकाल दर्शन गरे त्यसपछि घृष्णेश्वर शिवको दर्शन गरी गयामा माताको श्राद्ध गरे । भारतको ताजमहल वरिपरिको दृश्यलाई पनि कविले यस कवितामा व्यक्त गरेका छन् । त्यसपछि कवि वंगलोरमा बास बसे । सीताको मन्दिर वरिपरिको दृश्यको अवलोकन गरे । गुजरात बजार धुपी र कपुरले सजिएको दृश्यको पनि कविले चर्चा गरेका छन् । त्यसपछि अयोध्यापति रामको तथा एधार ज्यातिरिज्जको दर्शन गरी फागुन १० गते कवि नेपाल फर्किए ।

प्रस्तुत कवितामा कविले नेपाली सनातन धर्म, संस्कृति र परम्पराप्रति हार्दिक सम्मान प्रकट गरेका छन् । नेपाली समाजको धर्म, संस्कार र परम्परानुसार भारतस्थित तीर्थस्थलको यात्रा गर्न चाहने नेपालीहरूकालागि यो कविता राम्रो पथप्रदर्शक बन्न सफल हुन सक्ने देखिन्छ । यात्रावर्णनका क्रममा पाण्डेयले उक्त कवितामा धर्मका नाममा गरिने ठगी प्रथाको धज्जी उडाएका छन् । स्वेच्छाले अर्पण गर्ने दान मात्र सच्चा भक्तका लागि उपयुक्त हुन्छ भन्ने सन्देश पनि कवितामा व्यक्त भएको छ । हाम्रो सनातन धर्म संस्कृति अनुसार चारधाम लगायत धेरै तीर्थस्थलहरूको दर्शन गर्न सके मोक्ष पाइन्छ भन्ने भनाइ छ । त्यसै अनुरूप नेपालीहरू तीर्थस्थल जान खुब रुचाउँछन् । त्यस्ता तीर्थयात्रामा जाँदा सबै कुरा बुझेर मात्र जानु राम्रो हुन्छ । यस कविताबाट तीर्थयात्रामा भए गरेका धेरै कुराको जानकारी पाइन्छ । त्यसैले नेपाली धर्म, संस्कृति, प्राचीनकला, परम्परा आदि कुरालाई बुझनका लागि पनि यो कविता महत्त्वपूर्ण रहेको छ । संस्मरणात्मक शैलीमा लेखिएको यो कविता भारतस्थित तीर्थस्थलहरूको यात्रा गर्न चाहने नेपालीहरूका लागि पथप्रदर्शक बन्न सक्ने देखिन्छ ।

#### ४.७.१६ निष्कर्ष

कवि हरिप्रसाद पाण्डेय पद्मशैलीमा कविता लेख्ने कवि हुन् । उनले आधुनिक चेतना सँगसँगै परम्परागत मान्यतालाई पनि आफ्ना कवितामा प्रस्तुत गरेका छन् ।

कवि पाण्डेय समय र परिस्थितिलाई बुझेर वर्तमानका मानिसहरूको पीडालाई अभिव्यक्त गर्न पनि सिपालु छन् । पाण्डेयका कवितामा व्यङ्ग्य ज्यादै सशक्त छ । ‘नेपाल’ कवितामा देशभक्तिको भावना छ । सन्देश कवितामा धेरै नीति सन्देशहरू मुखरित भएका छन् । पीडा कवितामा तत्कालीन वर्तमानको विडम्बनालाई भक्षकाएका छन् । प्रभात र वन कविता विशुद्ध प्रकृतिवर्णनमा आधारित छन् । भावना र म कवितामा मानसिक भावहरूलाई अभिव्यक्ति दिइएको छ । मोह, दुःख, वेदना शीर्षकका कविताहरू नेपाली सामाजिक यथार्थको चित्रण गर्न सक्षम छन् । सम्झना कवितामा जँड्याहा श्रीमान्‌बाट प्रताडित पात्रको चित्रण गर्दै पितृप्रधान नेपाली समाजमा पीडित र अवहेलित जीवन विताउन विवश नारीहरूका कथा-व्यथाको मर्मस्पर्शी प्रस्तुति छ । दुःख कवितामा गरिबीको कुरुप चित्र उतारिएको छ । वेदना, पीडा, विचार शीर्षकका कवितामा तत्कालीन राजनीतिक विसङ्गातिले जन्माएको हत्याहिंसाको चित्रण गर्दै शान्ति ल्याउन सबै लाग्नुपर्ने आग्रह गरिएको छ ।

प्रस्तुत कवितासङ्ग्रहमा दुईवटा लामा संरचनाका कविताहरू रचिएका छन् । यात्रा र बद्रीनाथ यात्रा । यी दुबै कविताहरू यात्रावृत्तान्तमा आधारित छन् । कविले २०६० सालमा भारतस्थित रहेका तीर्थयात्रामा जाँदा देखेभोगेका तीता-मीठा अनुभवलाई यिनै कविता मार्फत प्रस्तुत गरेका छन् । समग्रमा भन्नु पर्दा पाण्डेयको सम्झना कवितासङ्ग्रहभित्रका कविताहरूमा उदात्त प्रकृतिप्रेम छ । नेपालप्रतिको प्रगाढ श्रद्धा र अनुराग छ । नेपाली धर्म, संस्कृति र परम्पराप्रति हार्दिक सम्मान छ । पाण्डेयका यी सबै कविताहरू पद्ममा लेखिएका छन् । सरल भाषा, लयको प्रवाहमयता र भावको तीव्रता कवितात्मक गुणले यी कविताहरू ओतप्रोत भएका छन् । साथै भावउडानका दृष्टिले स्वच्छन्दतावादी र शिल्पका दृष्टिले परिष्कारवादी भावधाराले ओतप्रोत छन् । त्यसैले यी कविताहरू आस्वाद्य छन्, पठनीय छन् र सम्प्रेषणीय छन् ।

## परिच्छेद पाँच

### उपसंहार

नेपाली साहित्यको विविध विधामा कलम चलाउनका साथै थुप्रै सामाजिक क्रियाकलापहरूमा निरन्तर रूपमा क्रियाशील रहेका हरिप्रसाद पाण्डेयको जीवनी, व्यक्तित्व र कृतित्वको अध्ययन क्रमशः परिच्छेद दुई, तीन र चारमा गरिएको छ । यस पाँचौं परिच्छेदमा उत्तर अध्ययनकै निष्कर्ष दिने प्रयास गरिएको छ ।

हरिप्रसाद पाण्डेय २००७ साल जेठ १९ गते बिहीबार काठमाडौंको ठमेलमा जन्मिएका हुन् । उनी पिता तोयनाथ पाण्डेय र माता पशुपतिकुमारी पाण्डेयका कान्छा सुपुत्र हुन् । हरिप्रसाद पाण्डेय बाल्यकालमा धेरै विरामी परेका थिए । त्यसैले उनलाई ५ वर्षसम्म पनि स्कुल भर्ना गरिएको थिएन । हरिप्रसाद पाण्डेयलाई ६ वर्षको उमेरमा लैनचौरको शान्ति विद्यागृहमा २ कक्षामा अध्ययनका लागि भर्ना गरियो । पाण्डेयले ९ कक्षादेखि जुद्दोदय हाइस्कुलमा अध्ययन गरे र त्यहीबाट एस.एल.सी. पास गरे । पाण्डेयले सरस्वती कलेजबाट आइ.ए र त्रिचन्द्र कलेजबाट बीए. पास गरे । उनले उच्चशिक्षाका लागि स्नातकोत्तरसम्मको अध्ययन गरे पनि उत्तीर्ण भने गर्न सकेनन् ।

हरिप्रसाद पाण्डेयको उपनयन सात वर्षको उमेरमा भारतको इलाहाबाद त्रिवेणीमा गरिएको हो । उनलाई त्रिवेणीजस्तो पवित्र स्थलमा उपनयन गरेमा रोगव्याधि सबै नाश हुन्छ भनेर तोयनाथ पाण्डेयले भारतमा लगेर उपनयन गराएका थिए ।

हरिप्रसाद पाण्डेयको विवाह २० वर्षको उमेरमा गोविन्दकुमार रिमालकी ठाहिली छोरी प्रीति पाण्डेयसँग सम्पन्न भयो । पाण्डेयका तीनवटी छोरीहरू रहेका छन् । ती सबै छोरीहरूको विवाह भैसकेको छ । पाण्डेय कथा, उपन्यास, कविता आदि कुराहरू लेखिरहन मनपराउँछन् । व्यक्तिगतरूपमा हेर्दा कसैसँग नडराउने स्वाभाव पाण्डेयमा रहेको छ । उनी देखेको कुरा स्पष्ट रूपमा नलुकाई भन्ने असल कर्मचारी हुन् । पाण्डेयले साहित्य लेख्ने प्रेरणा आफ्नै पिता तोयनाथ पाण्डेयबाट पाएका हुन् । उनले २०२९ सालदेखि प्रशासकीय सेवा शुरु गरी विभिन्न निकायमा कार्य गरी २०३५ सालबाट निरन्तररूपले हालसम्म नेपाल संस्कृत विश्वविद्यालयमा कार्यरत छन् ।

हरिप्रसाद पाण्डेय सामाजिक कार्यमा पनि आफूले भ्याएसम्म सहयोग गर्न रुचाउँछन् । बाटोघाटो बनाउन होस् वा मठ मन्दिर बनाउनका लागि होस्, तन मन धनले सहयोग गर्न पाण्डेय सदैव तत्पर रहन्छन् । आफ्नो धर्म, संस्कृति र परम्परालाई श्रद्धा भाव प्रकट गर्न पनि पाण्डेय मन पराउँछन् ।

नेपाली साहित्यमा आफ्नो कलम विद्यार्थी कालदेखि चलाए पनि औपचारिक रूपमा २०५९ सालबाट मात्र उनी देखापरेका छन् । २०५९ सालमा तोयनाथ पाण्डेय स्मृति ग्रन्थको प्रकाशन गराएर उनी साहित्यका फाँटमा सार्वजनिक भएका छन् । उनले २०६० सालदेखि हालसम्म अनवरतरूपमा प्रत्येक वर्ष एउटा-एउटा कृति प्रकाशन गराउँदै आएका छन् । उनको साहित्य सिर्जनाका क्षेत्रमा सबैभन्दा पहिलो कृति कुमारीको सपना (२०६०) उपन्यास हो । यस कृतिमा उनले ग्रामीण समाजमा हुनेगरेको वहुविवाह र त्यसले निम्त्याएका समस्याहरूका साथै समाजका विकृति, विसङ्गति, शोषण, अन्याय, अत्याचारलाई जस्ताको तस्तै प्रस्तुत गरेका छन् । उक्त उपन्यासमा समाजमा हुनेगरेका वालविवाह र त्यस्ता समस्यामा परेका नारीहरू तथा पत्नीको मृत्युका कारण छटपटाएका पुरुषका बीचमा पुनर्विवाह गराई परिवर्तनको आकांक्षा गरिएको छ ।

साहित्यकार हरिप्रसाद पाण्डेयले २०६१ सालमा आशाका रेखाहरू उपन्यास प्रकाशन गरेका छन् । प्रस्तुत उपन्यासको मूल उद्देश्य समाजमा देखापरेका समस्यालाई आदर्श नायकहरूको स्थापना गरी समाधान गर्न सकिन्छ भन्ने रहेको छ । नारीलाई केन्द्रविन्दु बनाई उनीहरूको अन्तर्वेदना केलाउने प्रयासमा पनि यो उपन्यास केही हदसम्म सफल रहेको छ ।

कवि हरिप्रसाद पाण्डेयको सम्झना कवितासङ्ग्रह २०६२ सालमा प्रकाशनमा आएको छ । लामा छोटा १५ वटा कविताहरूको सङ्गालो प्रस्तुत कवितासङ्ग्रहमा पाण्डेयले आफू बाँचेको, भोगेको अनुभव गरेका उनको जीवनका विचारधारा र तत्कालीन समय र युगदृष्टिप्रति उठेका भावतरङ्गहरूलाई कवितामार्फत् व्यक्त गरेका छन् । उनका २ वटा कविताहरू यात्रावृत्तान्तमा आधारित छन् । उनले यात्रा र बद्रीनाथ यात्रा नामक दुई लामा कवितामार्फत हाम्रो धर्म, संस्कृति, परम्पराप्रति श्रद्धाभाव प्रकट गरेका छन् । उनका कविताहरूमा लयगत प्रवाहमयता, भावगत र

गम्भीरताले सजिएका छन् । प्रस्तुत कविताहरू भावउडानका दृष्टिले स्वच्छन्दतावादी शिल्प परिस्कारका दृष्टिले परिस्कारवादी रहेका छन् । उनले आफ्ना कविताहरूमार्फत नैतिक सन्देश र जन्मभूमिप्रतिको आफ्नो दायित्व पनि सशक्तरूपमा प्रकट गरेका छन् । त्यस्तैगरी उनका कविताहरूमा धार्मिक भावना, देशप्रेम, नारी मनको अन्तर्वेदना र आध्यात्मिक चिन्तन उद्घाटित भएको देखिन्छ ।

उपन्यासकार हरिप्रसाद पाण्डेयले २०६३ सालमा नदेखिएका पाइलाहरू उपन्यास प्रकाशन गरेका छन् । यो उपन्यास सामाजिक यथार्थवादी धारामा लेखिएको छ । उनले प्रस्तुत उपन्यासमा समाजमा देखापर्ने दलालीप्रथा, अपहरण, लुटपाट, राजनीतिक विकृतिहरू तथा महिलामाथि हुने गरेका विविध कुकर्महरूलाई आफ्नो विषयवस्तु बनाएका छन् । विशेषगरी महिलाको भूमिकाले उत्कर्ष प्राप्त गरेको यो उपन्यासलाई नारीप्रधान उपन्यास पनि भन्न सकिन्छ । नारी तथा पुरुष दुवैले नारीमाथि गर्ने शोषणलाई नारीहरूकै सहयोगबाट परिवर्तन गर्न सकिन्छ भन्ने कुरालाई यस उपन्यासले देखाएको छ । आजको नेपाली समाजका नैतिक द्वन्द्वहरू बुझनका लागि पनि यो उपन्यासले राम्रो सन्देश दिएको छ । साथै जस्तोसुकै जालभेल र षडयन्त्रको जाल बन्न समाजका धूर्त मान्छे केही क्षणका लागि सफल बने पनि एकदिन कुकर्म गर्नेले त्यसको फल अवश्य भोग्नुपर्दछ भन्ने सन्देश पनि उपन्यासले दिएको छ । त्यस्ता कार्यबाट सजग रहन समयमानै सचेत रहनु पर्ने सङ्केतसमेत उपन्यासले दिएको छ ।

कथाकार हरिप्रसाद पाण्डेयले २०६४ सालमा ‘अन्जान’ कथासङ्ग्रह प्रकाशन गरेका छन् । लघु संरचनामा रचिएका २२ वटा कथाहरूले यो सङ्ग्रहको सिर्जना भएको छ । पाण्डेयले आफ्ना जीवनमा देखेभोगेका घटनालाई तथा केही कल्पनालाई आधार मानेर ती कथाहरूको रचना गरेका छन् । आफ्नो व्यक्तिगत जीवनको भोगाई, अनुभव, प्रेम, रतिराग, दुःखसुख नारी मनका अन्तर्वेदनालाई उनले कथाका माध्यमबाट व्यक्त गरेका छन् । उनका धेरै कथाहरू कुनै न कुनै रूपमा यौन वासनालाई आधार बनाएर लेखिएका छन् । पाण्डेयका कथाका धेरै जसो पात्रहरू शिक्षित छन् । ती सहरी परिवेशका छन् । ती कथाहरू मनोवैज्ञानिक शैलीमा लेखिएका छन् । पाण्डेयका प्रायजसो कथाहरू विशुद्ध सामाजिक यथार्थवादमा मात्र आधारित नभएर यथार्थन्मुख

आदर्शवादले सजिएका छन् । सरल तथा छोटा वाक्यगठनमा मीठो स्वाभाविक भाषाशैलीलाई पस्कन सक्नु पाण्डेयको महत्त्वपूर्ण पक्ष हो ।

साहित्यकार हरिप्रसाद पाण्डेयले २०६५ सालमा दुईवटा कृतिहरू प्रकाशन गरेका छन् । मुटुभित्रका ढुक्ढुकीहरू उपन्यास र काठमाडौँका पोडे एक परिचय (विशेष अनुसन्धान म.सं. वि.-२०५२) । उपन्यासकार हरिप्रसाद पाण्डेयको मुटुभित्रका ढुक्ढुकीहरू उपन्यास सामाजिक समस्या र जीवनयथार्थको प्रस्तुति हो । उनको यस उपन्यासमा प्रेमका सन्दर्भमा नयाँ पुस्ताको खुला सोचले ठाउँ पाएको छ । यथार्थ बोधका सन्दर्भमा भने यो उपन्यास अलि खस्तिकएको छ । यस उपन्यासको महत्त्वपूर्ण धनात्मक पक्ष विधवा बुहारीको विवाह ससुराले गराएको देखाउनु हो । काठमाडौँका पोडे एक परिचय अनुसन्धानात्मक कृति हो । यस कृतिको प्रकाशन महेन्द्र संस्कृत विश्वविद्यालयले गरेको छ । प्रस्तुत कृतिलाई हेर्दा पाण्डेयलाई अन्वेषक व्यक्तित्वका रूपमा पनि चिन्न सकिन्छ । काठमाडौँका पोडेहरूको जीवनशैलीलाई अध्ययन अनुसन्धान गरी प्रस्तुत कृति तयार पारिएको छ ।

यसरी साहित्यकार हरिप्रसाद पाण्डेय जीवनयात्राको क्रममा नेपाली साहित्यको क्षेत्रमा विगत एक दशक अगाडिदेखि अनवरतरूपमा लागिपरेका छन् । उनले उपन्यास, कथा, कविता तथा अन्वेषण कार्यमासमेत आफ्नो कलमअगाडि बढाएका छन् । विशेषगरी उपन्यासका क्षेत्रमा सशक्त देखिएका पाण्डेय विविध विधामा कलम चलाएर बहुमुखी प्रतिभाकारूपमा चिनिएका छन् । पाण्डेयले परम्परा र आधुनिकतालाई सम्मिलित गर्दै आफ्ना साहित्यिक कृतिहरूको रचना गरेका छन् । यिनै कृतित्वमार्फत् नेपाली साहित्यका संसारमा उनको व्यक्तित्व र बहुमुखी प्रतिभाको मूल्याङ्कन गर्न सकिन्छ ।

## सन्दर्भग्रन्थसूची

1. अवस्थी, महादेव (सम्पा), नेपाली कथा भाग-२, प्र.सं. (ललितपुर, सा.प्र., (२०५५)
2. उपाध्याय, केशवप्रसाद, साहित्य प्रकाश, ते.सं., साभा प्रकाशन : २०४०।
3. चौलागाई यमनाथ, प्रारम्भिक नेपाली व्याकरण, के.पी. प्रकाशन, काठमाडौँ, २०५९
4. चौलागाई यमनाथ, नेपाली रचना शिला, भाभा प्रकाशन
5. त्रिपाठी, वासुदेवसहित अन्य (सम्पा.) नेपाली बृहत शब्दकाश, प्र.सं., (काठमाडौँ : नेपाल राजकीय प्रतिष्ठान : २०४०)
6. त्रिपाठी, वासुदेव, पाश्चात्य समालोचनाको सैद्धान्तिक परम्परा भाग - १, पाँ.सं., (साभा प्रकाशन : २०५८)
7. थापा, मोहन हिमांशु, साहित्य परिचय, काठमाडौँ : साभा प्रकाशन : २०४०।
8. पाण्डेय, हरिप्रसाद, (सम्पा.), तोयनाथ पाण्डेय स्मृति ग्रन्थ (काठमाडौँ : २०५९)
9. प्रधान, कृष्णचन्द्रसिंह, नेपाली उपन्यास र उपन्यासकार, (काठमाडौँ सा.प्र. : २०४३)
10. बराल, कृष्णहरि र नेत्र एटम, उपन्यास सिद्धान्त र नेपाली उपन्यास, (काठमाडौँ : सा.प्र., २०५८)
11. भट्टराई, घटराज, नेपाली साहित्यकार परिचय कोश, प्र.सं., (साभा प्रकाशन : २०५०)
12. भट्टराई, गोविन्दप्रसाद, पूर्वीय काव्य सिद्धान्त, ने.रा.प्र.प्र. : २०३१।
13. लुइटेल, खगेन्द्रप्रसाद, क्षेत्रप्रताप अधिकारीका काव्य प्रवृत्ति, (शोधपत्र : २०४६)
14. शर्मा, मोहनराज र दयाराम श्रेष्ठ, नेपाली साहित्यको सङ्क्षिप्त इतिहास, चौथो सं., (साभा प्रकाशन : २०४९)
15. शर्मा, मोहनराज र खगेन्द्रप्रसाद लुइटेल, शोधविधि, (काठमाडौँ : साभा प्रकाशन : २०६२)
16. शर्मा, मोहनराज, शैलीविज्ञान, (काठमाडौँ : ने.रा.प्र.प्र. : २०४८)
17. श्रेष्ठ, दयाराम र मोहनराज शर्मा, नेपाली साहित्यको सङ्क्षिप्त इतिहास, (काठमाडौँ : सा.प्र., चौ.सं., २०४९)
18. श्रेष्ठ, दयाराम, (सम्पा.) नेपाली कथा भाग ४, काठमाडौँ साभा प्रकाशन, चौ.सं., २०५६।
19. सुवेदी, राजेन्द्र नेपाली उपन्यास : परम्परा र प्रवृत्ति, दोस्रो संस्करण, काठमाडौँ : सा.प्र. : २०६४।

